ऑनलाइन डिजिटल मासिक बाल पत्रिका

पायस

जुलाई, 2021

- बारिश से दोस्ती
- बारिश न हो तो...
- बाढ़ और तूफान
- वर्ल्ड पोपुलेशन डे
- पके आमजी

ऑनलाइन डिजिटल मासिक बाल पत्रिका

पायस

जुलाई 2021
वर्ष : 1, अंक : 7

इस अंक की रचनाएं

डॉ. विमला भंडारी	: गप्पी और पप्पी	10
उषा सोमानी	: बचपन के बादशाह	14
पद्मा चौगांवकर	: जाना है उस पार	18
संजीव जायसवाल 'संजय'	: मेरा भाई	22
रावेंद्रकुमार रवि	: हैरानी की बात	26
भगवत प्रसाद पाण्डेय	: टपक सिंचाई	32
मधु गोयल	: अनोखी मित्रता	36
रेनू सैनी	: इंडनवन में लॉकडाउन	40
रेनू मंडल	: बादल की परेशानी	42
डॉ विनीता राहुरीकर	: बरगद का बचना	44
चित्रा श्रीवास्तव	: सपना पूरा हुआ	46
विकास राजौरा	: सुडोकु का ढोलू	48

गोपाल माहेश्वरी	: वर्षा की प्रतीक्षा	9
शिवचरण चौहान	: चला झूमता हाथी	20
राजेंद्र श्रीवास्तव	: बरसात हुई तो...	21
प्रभुदयाल श्रीवास्तव	: पके आमजी	25
योगराज भाटिया	: बारिश का आंनद	28
डॉ. राकेश चक्र	: मौसम से नित करे ठिठोली	29
वसीम अहमद नगरामी	: बाढ़ और तूफ़ान	34
तारा दत्त जोशी	: बैंगन की शादी	35

बारिश से दोस्ती	5	अलविदा उड़नसिख	8
कैसे होती है बारिश	12	बारिश न हो तो...	16
मेढक	30	वर्ल्ड पोपुलेशन डे	38

धन्यवाद ज्ञापन	4	कार्टून स्ट्रिप	21
चित्रकथा : गोलू और रसगुल्ले	60	जरा सोचो	61
खेल : बॉक्सिंग	62	हंसना जरूरी है	63

चित्र बनाओ : (50-51) : रसलीन कौर, पूर्वांशी, ध्यानी, स्नेहा रानी, मन्नत भाटिया, कुनिका कौशिक, (56-57) : जान्हवी ओझा, जिगीषा सहरावत
एलकॉन इंटरनेशनल के सितारे (52-55): प्रत्यक्ष, आंशी मिश्रा, इशिका शर्मा, श्रेयान्वी, श्रीवत तिवारी, नेहा गर्ग, सूर्यांश तिवारी, सुहानी हरित, छवि मिश्रा, अनाया मीना, मोहम्मद शाद इकबाल
कविताएं (56-58) : सुहानी यादव, काव्या पटेल, मानवी, दिव्यम तिवारी, कान्हा अबोटी, अनहद भाटिया, आयरा भाटिया सिंह,
सपना : पोथिक आभरो 59, महाशक्ति : विराज खट्टर 59

कवर इलेस्ट्रेशन : इंदिरा

मानसून का स्वागत करें

इस जुलाई के महीने का हम मनुष्यों को ही नहीं, जीव-जंतुओं आदि सभी को बेसब्री से इंतजार रहता है।

जुलाई में फलों के राजा आम जी महाराज पूरी ठसक और मिठास के साथ भारत के घर-घर पहुंच चुके होते हैं, तो मेढक के साथ-साथ मोर भी अपना जलवा पूरी तरह दिखाने के लिए बेकरार होते हैं।

बच्चे गरमी की छुट्टियों के बाद फिर से स्कूल में पढ़ाई के साथ धमाल मचाने को कमर कस चुके होते हैं। हालांकि यह आनंद बच्चों को लगातार दूसरे साल नहीं मिल पाएगा क्योंकि कोरोना का रोना अभी खत्म नहीं हुआ है और स्कूल खुलने के अभी कोई आसार नहीं दिख रहे हैं।

जुलाई में सबसे ज्यादा इंतजार होता है मानसून का। मानसून अपने साथ बरसात का उपहार लाती है। यह मानसून भारत के लिए लाइफलाइन से कम नहीं है।

भारत को यह वरदान मिला हुआ है कि यहां हर मौसम पूरे शबाब के साथ आता है। गरमी से तपी धरती और बेहाल लोगों की जलन को मानसून में आई बारिश कम करती है और उम्मीद की नई किरण देती है। भारत की मानसून आधारित कृषि व्यवस्था को नया जीवन मिलता है। धरती की तपन कम होती है और साल भर में विकास और विलासिता के नाम पर भूजल भंडार का जो दोहन होता है, उसकी भरपाई हो जाती है।

यह दुख की बात है कि इतनी अच्छी बारिश के बाद भी भारत में पीने के पानी की कई क्षेत्रों में भारी किल्लत है। हम या हमारी सरकार इस प्राकृतिक उपहार को सहेज नहीं पाते और इस बरसे पानी का अधिकांश हिस्सा बर्बाद हो जाता है। अगर ईमानदारी से हम राजस्थान में पानी के संचयन के लिए वहां के राजाओं द्वारा किए गए प्रयासों को पूरे भारत में लागू कर पाएं, तो इस समस्या का समाधान सचमुच निकल सकता है।

भारत में मानसून की बरसात अपने साथ बाढ़ का कहर भी लाती है। कई राज्यों के नागरिक बरसात शुरू होते ही बाढ़ के नाम से कांपने लगते हैं। खासकर उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, बिहार, ओडिसा और असम में बड़ी विकट स्थिति होती है।

जून में उड़नसिख मिल्खा सिंह यह दुनिया छोड़कर चले गए। एक सुनहरा अध्याय खत्म हो गया। उन्हें हम सब की तरफ से श्रद्धांजलि।

इस बार बारिश की बातों, जानकारी, कविता और कहानियों के माध्यम से तुम भीगने को तैयार हो न? आशा है, तुम सबका प्यार मिलेगा।

अंत में, कोरोना की तीसरी लहर की संभावना से दुनिया डरी हुई है क्योंकि माना जा रहा हैं कि यह बच्चों पर कहर ढा सकती है। ऐसे में अपना ख्याल रखना।

अनिल जायसवाल

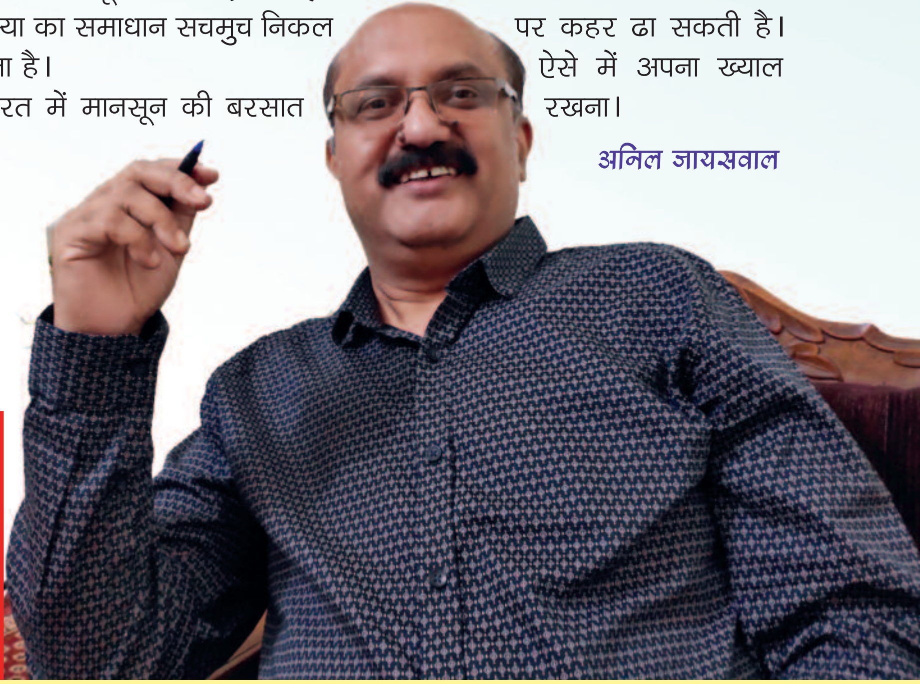

एक अपील

यह पत्रिका आप तक निशुल्क पहुंच रही है। अगर आप को लगे कि पत्रिका तैयार करने में मेहनत की गई है, तो पढ़ने के बाद इसका 20 रुपए शुल्क मानकर सहयोग करें। धन्यवाद

ऑनलाइन डिजिटल मासिक बाल पत्रिका पायस

संपादक : अनिल जायसवाल

Email : payasmagazine@gmail.com
Facebook : https://www.facebook.com/payasbaalpatrika
Whatsapp : 7982014609
Youtube : payas magazine
https://youtube.com/channel/UCvXDRK5Xz_dwnFfGwtfGLJg
Blog : https://payasbaalpatrika.blogspot.com/

- लेखक व बच्चे रचनाएं भेजने के लिए ईमेल का प्रयोग करें।
- ह्वाट्सएप पर रचनाएं स्वीकार नहीं की जाएंगी।

संपादकीय पता : PAYAS MAGAZINE
Anil Jaiswal, 174-B, DDA Lal Qtrs,
West Punjabi Bagh, New Delhi-110026

धन्यवाद ज्ञापन

आप सबके सहयोग से जनवरी 2021 से बच्चों के लिए एक ऑनलाइन निशुल्क बाल पत्रिका निकालने की जो योजना थी, वह मूर्त रूप लेने में सफल रही। अब पायस का नया अंक आप सबके सामने है।

इस राह पर आप सबके भरोसा चला। सब साथियों का सहयोग मिला। जिन साहित्यकार साथियों से रचना मांगी, उन्होंने सहर्ष अपनी रचना के साथ शुभकामनाएं भी दीं। कुछ साथियों ने निशुल्क रचना देकर हिम्मत बंधाई, तो कुछ चित्रकार साथियों ने नाम मात्र का शुल्क लेकर कहानियों के लिए सुंदर चित्र बनाए। बहुत से साथियों ने पत्रिका को आर्थिक मदद दी, जिससे पत्रिका के लिए आवश्यक खर्चों को पूरा किया गया।

यहां उन साथियों को नमन, जिन्होंने पत्रिका के लिए आर्थिक मदद की।

1. पीयूष अग्रवाल
2. मोनिका अग्रवाल
3. दीप्ति मित्तल
4. नमिता किचलू
5. महेंद्र कुमार जोशी
6. किशोर श्रीवास्तव
7. मधु माहेश्वरी

एक अपील

पत्रिका तैयार करने में धन की आवश्यकता होती है। तमाम खर्चों के बावजूद यह पत्रिका आप तक निशुल्क पहुंच रही है। अगर आप को लगे कि पत्रिका तैयार करने में मेहनत की गई है, तो पढ़ने के बाद 20 रुपए इसका शुल्क मानकर सहयोग करें।

धन्यवाद

भुगतान करना चाहें, तो

1 प्रति : 20 रुपए, एक वर्ष : 240 रुपए

एकमुश्त सहयोग : इच्छानुसार

आगे भी आप सबका सहयोग रहा, तो हम सब मिलकर इस पत्रिका को एक ऐसी ऊंचाई देने में सफलता प्राप्त करेंगे कि लोग हर महीने इस पत्रिका का बेसब्री से इंतजार करेंगे।

ONLINE TRANSFER / UPI

STATE BANK OF INDIA

Anil Kumar Jaiswal

S/A no- 20155811729

Ifsc code SBIN0005943

Mobile number associated with account 9810556533

PAYTM : 7982014609
PHONEPE : 9810556533
GOOGLE PAY : 9810556533
ANIL JAISWAL

संपादक : अनिल जायसवाल

9810556533, 7982014609

email : **payasmagazine@gmail.com**

बारिश से दोस्ती

बारिश, यह नाम सुनते ही तुम्हारी सारी थकान दूर हो जाती है। तुममें एक नया सा जोश आ जाता है। कहां तो बंद बाथरूम में नहाना और कहां खुले आसमान के नीचे प्राकृतिक शॉवर में नहाना और खेलना। सोचते ही मन बिना बारिश के ही भीगने लगता है। बारिश सिर्फ आसमान से पानी गिरना नहीं है। यह तो जीवन है। यह हमारा सच्चा दोस्त है। आओ आज बारिश और उसके कुछ दोस्तों के बारे में कुछ जानते हैं।

— *अनिल जायसवाल*

बारिश और पहाड़

पहाड़ों पर घूमना तुम्हें बहुत अच्छा लगता होगा। पता है, बारिश को भी पहाड़ बहुत पसंद हैं। दरअसल बारिश करवाने में पहाड़ों का बहुत बड़ा हाथ होता है। होता यह है कि वाष्प से भरी हवाओं के रास्ते में जब पहाड़ आ जाते हैं, तो उन हवाओं को उसे पार करने के लिए और ऊपर उठना पड़ता है। ऐसा होने पर पहाड़ों पर जमी बर्फ और उनकी ठंडक के कारण हवा फैल जाती है और इसकी गरमाहट कम हो जाती है। हवा के ठंडे हो जाने पर हवा में शामिल वाष्प बूंदों के रूप में धरती पर बरस पड़ती है।

सच तो यह है कि पहाड़ों पर रहने वाले बारिश से बड़े परेशान होते हैं। एकाएक बाढ़ आ जाना, जमीन का कटाव यानी भू-स्खलन, बादल फटना आदि घटनाएं पहाड़ों पर बारिश के दिनों में आम हैं।

परंतु पहाड़वासी जानते हैं, इस पृथ्वी पर रहने वालों तक भविष्य में पहाड़ों द्वारा पानी तभी पहुंचेगा, जब बारिश होगी और वह पानी बर्फ का रूप लेकर भविष्य के लिए सुरक्षित हो जाएगा। इसलिए वे खुशी-खुशी अपने हिस्से में दुख लेकर दुनिया को सुख देते हैं।

बारिश का स्वागत करते हैं मोर

मोर ऐसा पक्षी है जिसे बारिश का इंतजार सबसे ज्यादा रहता है। बादल को देखते ही मोर नाचने लगता है और लोग समझ जाते हैं कि अब बारिश दूर नहीं। पर बारिश के समय मोर के नाचने का एक कारण और भी है। दरअसल बादल को देखते ही ही मोर अपनी मोरनी को रिझाने के लिए नाचने लगता है। मोर के पंख होते हैं। जब वह पंख फैलाकर नाचता है, तब उसके फैले पंख एक अद्भुत दृश्य उत्पन्न कर देते हैं। दरअसल उसके पंखों में जो रंग हैं, उन पर जब बारिश की बूंदें गिरती हैं, तो पंख और चमकीले दिखने लगते हैं और मोरनी इसे देख बहुत खुश होती है।

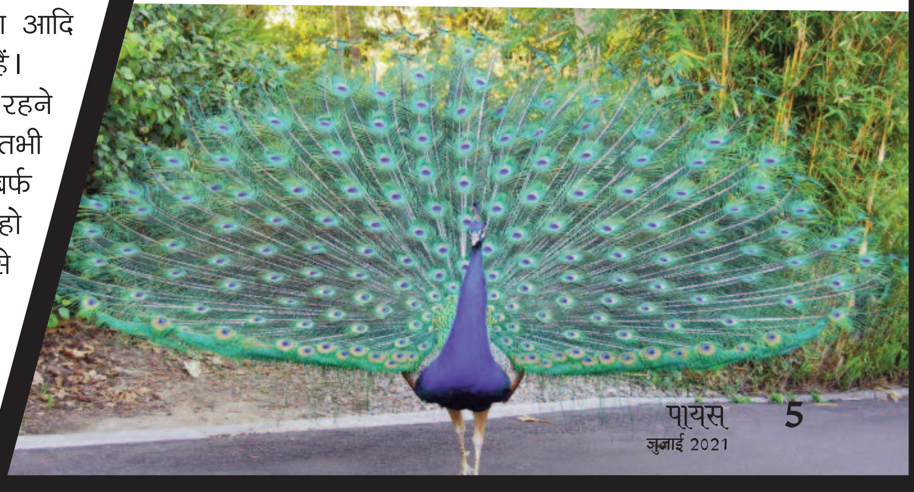

ऑक्सीजन चैम्बर को बारिश का सहारा

ये जो वर्षावन हैं, वे इस दुनिया के लिए ऑक्सीजन के सप्लायर कहलाते हैं। पर इन वनों में पेड़ों को फलने-फूलने के लिए जिस पानी की जरूरत होती है, वह बारिश से ही मिलती है। घनघोर बरसात से वर्षावन के पेड़ साल भर हरे-भरे रहते हैं, और वे बारिश को रिटर्न गिफ्ट के रूप में दुनिया के लिए आक्सीजन का भंडार देकर भेजते हैं।

बूंदें गिरें फर-फर, मेढक बोलें टर्र-टर्र

बरसात के बाद जब तुम पार्क में या किसी तालाब के किनारे जाते होगे, तो वहां तुम्हें टर्र-टर्र का आवाज खूब सुनाई देती होगी। ये होते हैं मेढक, जो बारिश के पानी से मानो नया जीवन पा जाते हैं। दरअसल मेढक मुख्य रूप से पानी के निवासी है। शहरों को बढ़ाते हुए हमने उनसे उनके घर यानी नदी-तालाब छीन लिए। कोई जगह ऐसी न छोड़ी, जहां ये चैन से रह पाएं। ऐसे में भी ये बेचारे हमारे साथ रहने के लिए कहीं जरा सा पानी देखते हैं, तो वहां जाकर अपना घर बना लेते हैं। फिर जब बारिश उन पर दया करके चारों तरफ पानी ही पानी कर देती है, तो खुशी से ये टर्र-टर्र करते हुए मानो बारिश को थैंक्यू कहते हैं।

राह तकते हैं किसान

तुम तो जानते ही होगे कि आज भी भारत मुख्य रूप से कृषि प्रधान देश है। पर खेती करने के लिए भरपूर पानी की जरूरत होती है। यह जरूरत मुख्य रूप से नदियों से पूरी होती है। पर भारत में अधिकांश खेतों के पास नदियां नहीं हैं। ऐसे में वे ट्यूबवेल के पानी से खेतों में पानी डालते हैं। इसके बावजूद भारत में खेती की व्यवस्था मुख्य रूप से बारिश पर निर्भर है। बारिश से ही खेतों को मुख्य रूप से पानी मिलता है और किसान खेती कर पाते हैं। बारिश का पानी गांव में तालाबों को भर देते हैं, नदियों को फिर से पानी से लबालब कर देते हैं, जिससे किसान अपनी फसलों की सींच पाता है।

आओ मेघा, हम नहीं डरते

असम वासी गैंडा ब्रह्मपुत्र नदी के किनारे-किनारे अपना घर बनाते हैं। उनका नदी से पुराना नाता है, तो वे भला बारिश से क्यों डरेंगे? बारिश तो उनके लिए मित्र के समान है। काजीरंगा वन क्षेत्र बारिश के दिनों में जल से भर जाता है। इन वनों में जल से खेलते गैंडे तुमको दिख जाएंगे। दरअसल इनके शरीर पर इतनी मोटी खाल होती है कि बारिश का पानी इनके शरीर को ज्यादा ठंडा नहीं कर पाती, इसलिए ये बारिश से नहीं डरते।

बारिश के इंतजार में

आम जगहों पर बारिश जब भी होगी, तो पानी के रूप में ही होगी। पर बहुत ज्यादा ठंडे इलाकों में जहां बारहों महीने बर्फ जमी रहती है बारिश न के बराबर होती है। वहां बरसता पानी धरती पर आते-आते बर्फ का रूप ले लेता है। इसीलिए अंटार्कटिका जहां कभी बारिश नहीं होती, दुनिया का सबसे सूखा महाद्वीप है। अब यहां के मूल निवासी पेंग्विन क्या करें। उनके लिए तो ऐसी बर्फबारी ही बारिश है। इसलिए पेंग्विन बर्फबारी के दौरान खूब मजे करते हैं।

ओरांगउटान एक विशाल जानवर है। जब बारिश होती है, तो उसके पास इतना समय नहीं होता कि किसी गुफा या छिपने के स्थान पर चला जाए। इसलिए जैसी ही वह देखता है कि बारिश होने वाली है, वो पत्तों को सिर पर हैट की तरह पहनकर बरसते पानी का आनंद लेता है।

हिप्पो

हिप्पो यानी दरियाई घोड़ों को तुमने चिड़ियाघर में अवश्य देखा होगा। उनका बस चले, तो वे कभी पानी से बाहर ही न निकले। दरअसल उनके शरीर पर चर्बी की बेहद मोटी परत होती है। इस कारण उन्हें बहुत गरमी लगती है। और जिसे गरमी लगेगी, उसे बरसात से जरूर प्यार होगा। बरसते पानी में हिप्पो नदी या झील को छोड़कर बाहर निकल आते हैं क्योंकि उन्हें साफ पानी बहुत पसंद है और बरसाती पानी में रहने का आनंद वे कैसे छोड़ सकते हैं।

सिर पर पूंछ

गिलहरी छोटी सी होती है, पर उससे ज्यादा उसकी पूंछ नजर आती है।

बारिश से वैसे उसकी कोई दुश्मनी नहीं है, पर उसे नहीं पसंद कि बारिश का पानी उसके सुंदर शरीर पर गिरे और वह गीली हो जाए।

भीगने से बचने के लिए वह अपनी पूंछ को छाता बना लेती है। अपनी मोटी पूंछ को वह अपने ऊपर कर लेती है। इससे पानी उसके पूंछ को तो भिगो देता है, पर उसका शरीर सूखा रहता है।

अलविदा उड़नसिख

कहते हैं समय का पहिया कभी नहीं रुकता। ऐसे ही हमारे युगपुरुष मिल्खा सिंह भी रुकने के लिए नहीं बने थे। सिंह इज किंग कहलाने के वास्तविक हकदार मिल्खा सिंह भी भागते-भागते थक गए। आखिर 18 जून 2021 को उनकी रफ्तार थम गई और वह इस संसार को छोड़कर चले गए।

धावक बनना आसान है, पर मिल्खा सिंह बनना आसान नहीं। अपने सभी दुखों को पीकर उसे अपनी ऊर्जा बनाकर इतिहास लिखना आसान नहीं।

20 नवंबर 1929 को तत्कालीन पंजाब के गोविंदपुरा (अब पाकिस्तान) में मिल्खा सिंह का जन्म हुआ। भरा पूरा परिवार था। 15 भाई-बहनों के परिवार में मिल्खा को पढ़ने के लिए गांव से दस किलोमीटर दूर के स्कूल में जाना पड़ता था। यह दूरी मिल्खा अपने दोस्तों के साथ दौड़ते-दौड़ते पूरी करते थे। शायद इसी दौड़ ने मिल्खा को भविष्य के लिए तैयार किया था।

पर अभी होनी द्वारा मिल्खा सिंह को दौड़ाना बाकी था। भारत आजाद हुआ, तो बंटवारे के बाद दंगे भड़क उठे। मिल्खा के सामने उनके परिवार के अधिकांश सदस्यों का कत्ल कर दिया गया। मरते-मरते उनके पिता ने बेटे को बचाने के लिए गुरुमंत्र दिया, 'भाग मिल्खा भाग।'

अपने माता-पिता का अंतिम संस्कार भी मिल्खा न कर सके। जान बचाने के लिए वह पाकिस्तान से भागे। विभाजन के शिकार लोगों के लेकर आ रही ट्रेन में छिपते-छिपाते मिल्खा भी दिल्ली आ पहुंचे।

अगले दस साल मिल्खा के उड़न सिख बनने का दर्द भरा इतिहास है।

बाल मजदूरी, बिना टिकट पकड़े जाने पर जेल, बहन द्वारा गहने बेचकर भाई को छुड़ाना और अंत में भारतीय सेना में शामिल होना। भारतीय सेना में शामिल होकर सही मायनों में मिल्खा ने दौड़ना शुरू किया। फिर तो एशियाई खेल, कॉमनवेल्थ गेम्स सहित कई प्रतियोगिताओं में मिल्खा ने स्वर्ण पदकों को झड़ी लगा दी। पर मिल्खा उस रेस के लिए ज्यादा याद किए जाते हैं, जिसे वह जीत न पाए थे। 1960 के रोम ओलंपिक में खेल इतिहास में पहली बार हुआ कि प्रथम चार स्थान पर रहे धावकों ने 400 मीटर दौड़ के फाइनल में ओलंपिक रेकॉर्ड को ध्वस्त किया था। ऐसा करने वालों में मिल्खा भी थे, जो सेकेंड के सौवें हिस्से से कांस्य पदक जीतने से वंचित रहकर चौथे स्थान पर रहे थे।

1960 में भारत-पाक खेल में भारत के प्रधानमंत्री नेहरूजी के कहने पर मिल्खा पाकिस्तान लौटे। उनके रफ्तार को देखकर पाकिस्तान के जनरल अय्यूब खान ने उन्हें फ्लाइंग सिख के नाम से पुकारा, जो अंत तक उनका निक नेम बना रहा।

कोरोना की चपेट में आने के बाद एक महीने तक मिल्खा उसे भी पटखनी देते रहे। पर कोरोना से ही पत्नी को गंवाने के बाद मिल्खा ने अपनी जीवनयात्रा को भी 18 जून को विराम दे दिया।

वर्षा की प्रतीक्षा

सूखा-सूखा जून जा रहा नदिया प्यासी-प्यासी है।
आसमान को ताकें बाबा आँखों भरी उदासी है।।

हल की हलचल से खेतों का हल्का मन, फिर भारी है।
अटक गई पेड़ों पर धरती की हरियाली सारी है।
गर्मी थकी-थकी है तप कर खाने लगी उबासी है।।
आसमान को ताकें बाबा आँखों भरी उदासी है।।

आम विदाई माँग रहे हैं जामुन ना गदराए हैं।
कोयल सोच रही मैंने सब गीत अकेले गाए हैं।
बारी मोर पपीहों की पर हलचल नहीं जरा-सी है।।
आसमान को ताकें बाबा आँखों भरी उदासी है।।

पानी बाबा वाला गाना अब मुन्नी को गाना है।
झम-झम पानी में मुन्नी को छुमछुम नाच दिखाना है।
ककड़ी-भुट्टे खाने की अब इच्छा अच्छी खासी है।।
आसमान को ताकें बाबा आँखों भरी उदासी है।।

अपने लेखक को जानिए

गोपाल माहेश्वरी : पूर्व प्रधानाचार्य विद्याभारती, लेखनविधा : कहानी, कविता, नाटक, बाल उपन्यास, जीवनी, आलेख, रेडियो रूपक, अनुवाद आदि। 15 से ज्यादा पुस्तकें प्रकाशित। संप्रति : कार्यकारी संपादक-देवपुत्र बाल मासिक पत्रिका, प्रबंध संपादक-जागृत युगबोध। कई पुरस्कारों से सम्मानित।

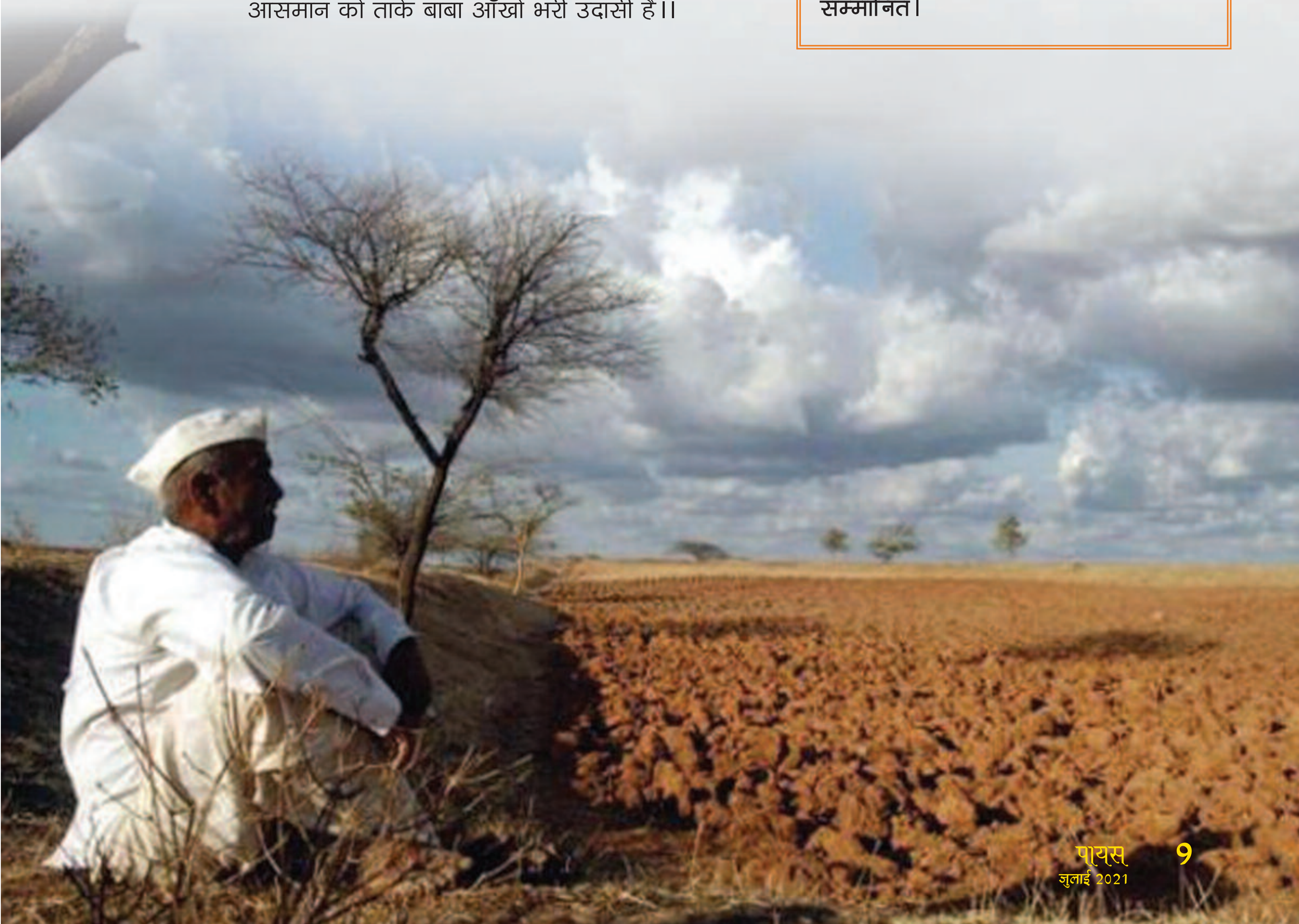

गप्पी और पप्पी

पप्पी और गप्पी दोनों मेढकियां पक्की सहेलियां थीं। मौसम की पहली बरसात हुई। मिट्टी की भीनी सुगंध, पानी से नहाए घास-पत्ते भी लुभावने लग रहे थे। पप्पी ने गप्पी से कहा, "चल कहीं घूमकर आते हैं।"

"हां, ऐसे मौसम में कीड़े-मकौड़े भी खूब मिलेंगे, दोनों मिलकर चट करेंगे!" गप्पी गोल-गोल आंखें घुमाते हुए बोली।

"खूब दावत रहेगी!" पप्पी मेढकी चहककर बोली।

दोनों मेढकियां अपने घर से बाहर निकल आईं। कुछ दूरी पर उन्हें कुकुरमुत्ता उगा नजर आया। पप्पी ने कहा, "यह कुकुरमुत्ता देख रही हो गप्पी?"

"हां, देख तो रही हूं।" गप्पी आंखें मटकाती हुई आगे बोली, "हमारी आंखें सिर के ऊपर जो हैं, इसीलिए आसानी से हम चारों ओर देख सकती हैं।"

"यह तो मैं भी जानती हूं गप्पी। मैं तो तुमसे यह कह रही थी कि क्यों न इस कुकुरमुत्ते की नाव बनाकर नदी की सैर का आनंद लिया जाए! बरसात के कारण आज नदी में पानी भी बहुत बह रहा है।"

दोनों मेढकियों ने छतरी की तरह उगे हुए एक कुकुरमुत्ते को उखाड़ लिया। वे उसे घसीटती हुई नदी के किनारे तक ले गईं और फिर नदी में उसे उलटा डाल दिया और फुदककर कुकुरमुत्ते पर जा बैठीं। कुकुरमुत्ते के मोटे डंठल को उन्होंने कसकर पकड़ लिया और संतुलन बना लिया।

नदी के तेज बहते पानी में कुकुरमुत्ता बहते हुए गोते खाने लगा। दोनों मेढकियों को नदी की इस सैर का बहुत आनंद आ रहा था। गप्पी टर्राने लगी।

कुछ समय तक यूं ही नदी में तैरते, टर्राते दोनों किनारे बने घाट तक आ पहुंचीं। घाट पर कुछ लोग नहा रहे थे। गप्पी-पप्पी उन्हें देखकर घबरा गईं। बच्चों से उन्हें विशेष डर लगता था। जब भी बच्चे उन्हें देख लेते, तो वे उन पर पत्थर फेंकते थे। छिपने के लिए पप्पी-गप्पी इधर-उधर जगह तलाशने लगीं। इतने में

चित्र : नीतू खोहवाल

उन्हें कपड़ों से भरी एक टोकरी नजर आई। पप्पी मेढकी ने गप्पी को इशारा किया, "चल, उसमें छिप जाते हैं, वहां हमें कोई नहीं देख सकेगा।"

दोनों ने लंबी उछाल मारी और सीढ़ी पर रखी उस कपड़े की टोकरी में दुबक गईं। दोनों की सांस तेज-तेज चल रही थी। टर्राना, गीत गाना तो दोनों भूल ही गई थीं।

बैठे-बैठे उन्हें लगा कि वे चल रही हैं। कुछ समझ न आया, तो पप्पी ने पूछा, "गप्पी, यह हलचल कैसी ?"

गप्पी ने टोकरी से झांककर बाहर देखा। बाहर लोग ही लोग नजर आए! दोनों डरकर फिर से टोकरी के कपड़ों के बीच दुबक गईं।

दरअसल वह टोकरी नदी पर स्नान करने आई एक ग्वालिन की थी। इस तरह टोकरी में बैठी पप्पी-गप्पी दोनों मेढकियां ग्वाले के घर पहुंच गईं। ग्वालिन ने टोकरी ले जाकर घर के आंगन में रख दी और कपड़े सुखाने लगी।

पप्पी और गप्पी मौका देख टोकरी से बाहर फुदक गईं। गप्पी बोली, "अच्छा हुआ, हम इसके हाथ नहीं आईं और बच गईं।"

"अब बातें न करो, चलो छिपने की जगह ढूंढ़ते हैं।" कहकर पप्पी आगे-आगे चल पड़ी और गप्पी पीछे-पीछे हो ली।

दोनों मेढकियां फुदकते-फुदकते ग्वालिन की रसोई में पहुंच गईं। वहां एक बड़े बर्तन में दही जमा हुआ था। संयोगवश दही का बर्तन खुला पड़ा था। पप्पी ने अपने को छुपाने के लिए बर्तन में छलांग लगा दी और उसके पीछे-पीछे गप्पी भी दही के बर्तन में कूद गई।

"तुम कहां हो पप्पी ?"

"हम किसी मुसीबत में फंस गई हैं गप्पी। यह गाढ़ा और चिपचिपा पदार्थ है। यहां आंखों पर पारदर्शी झिल्ली चढ़ा लो, ताकि हम एक-दूसरे को देख सकें।" पप्पी ने सुझाया।

"ओह! इसमें तो तैरा भी नहीं जा सकता।"

"तुम हिम्मत रखो गप्पी, हाथ-पैर चलाती रहो। तैरने की कोशिश करो।"

"चला तो रही हूं, पर बड़ी मुश्किल हो रही है।" गप्पी बोली।

"तुम कोशिश करती रहो, देखो हिम्मत न हारना गप्पी। हम दोनों को इस मुसीबत में हिम्मत से काम लेना चाहिए। देखो साहस न छोड़ना, हाथ-पैर चलाती रहो, तैरने की कोशिश करो। धैर्य रखकर प्रयास जारी रखो।"

"आखिरी दम तक कोशिश करूंगी मैं। पप्पी, तुम हौसला देती रहो।" गप्पी हांफती हुई बोली। गप्पी और पप्पी मेढकियां एक-दूसरे को हिम्मत देती रहीं और दही में लगातार हाथ-पैर मारती रहीं। कुछ ही समय में दही छाछ में बदलने लगा।

"अब मैं इसमें आसानी से हाथ-पांव चला पा रही हूं, क्या तुम भी ऐसा कर पा रही हो गप्पी ?" पप्पी ने गप्पी मेढकी से पूछा।

"हां, अब इतनी मुश्किल नहीं हो रही, पर अब मैं थक रही हूं।" गप्पी निढ़ाल होती हुए बोली।

"निराश न हो गप्पी, हमने अभी थोड़ी ही सफलता पाई है। थक तो तुम गई होगी। फिर भी देखो, अब हमारे हाथ-पांव कितनी आसानी से इसमें चल रहे हैं।"

"चलेंगे क्यों नहीं पप्पी? हमारी उंगलियों के बीच जाली जो बनी हुई है। इसी कारण तो हम इन्हें चप्पुओं की तरह आसानी से पानी को ठेलकर, तैर लेती हैं। आंखों पर लगी पारदर्शी झिल्ली भी हमें पानी में देखने में मदद करती है। झिल्ली की वजह से पानी आंखों में नहीं जाता और आंख पर पलक न होने का अभाव भी नहीं खटकता।"

दोनों मेढकियों ने मिलकर छाछ में इतने हाथ-पांव मारे कि छाछ बिलोई गई और उसमें से मोटी तह मक्खन की निकलकर छाछ पर जम गई। पप्पी और गप्पी मेढकी मक्खन की मोटी तह पर आकर बैठ गईं। बातें करने लगीं।

"कहो पप्पी, कैसा आनंद आया सैर का ?"

"आनंद तो बहुत आया गप्पी, पर सबसे ज्यादा आनंद तो इस मुसीबत को झेलने में आया। कहो, तुम्हारा क्या ख्याल है ?" पप्पी मेढकी ने गप्पी से पूछा।

"सच बात तो यह है पप्पी कि हमने अपनी शारीरिक खूबियों का भरपूर उपयोग किया, तभी तो हमने मुसीबत से छुटकारा पाया और सफलता पाई।" गप्पी टर्राई।

"शारीरिक क्षमता के उपयोग के साथ हिम्मत की भी कीमत है, ये न कहोगी गप्पी ? "

"हां, और धैर्य व प्रयास की भी!" दोनों खुश होकर टर्राने लगीं।

बारिश फिर से शुरू हो गई। यह देख दोनों मेढकियां टर्राते हुए फिर से नई यात्रा पर निकल पड़ीं। ✪

अपने लेखक को जानिए

डॉ. विमला भंडारी : केंद्रीय साहित्य अकादमी, नई दिल्ली से बाल साहित्य में पुरस्कृत, राजस्थान की जानी-पहचानी बाल साहित्यकार। साहित्यिक गतिविधियों में ख्याति प्राप्त सलिला संस्था, सलूम्बर की संस्थापक अध्यक्ष हैं। अनेक आलेख व कहानियां विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित।

कैसे होती है बारिश

बच्चों, क्या आप जानते हैं कि बारिश वॉटर साइकिल के कारण हो पाती है और वॉटर साइकिल हमारे वातावरण और मौसम का एक बहुत जरूरी हिस्सा होती है। पहले जानते हैं कि क्या है वॉटर साइकिल।

वॉटर साइकिल

वॉटर साइकिल के कारण ही पानी दुनिया के विभिन्न हिस्सों में जा पाता है। वॉटर साइकिल के बारे में सबसे अच्छी बात यह होती है कि यह कभी रुकती नहीं है। इसे एक साइकिल इसलिए कहा जाता है क्योंकि यह एक चक्र होता है और जहां से यह खत्म होती है वहीं से यह दोबारा चालू भी हो जाती है, इस प्रकार वॉटर साइकिल का कभी अंत नहीं होता है। लेकिन आप सभी उत्सुक होंगे कि कैसे पानी के द्वारा बनने वाला यह जल चक्र पूरी धरती के विभिन्न भागों तक पहुंचता है।

तो इस प्रक्रिया के दौरान पहले पानी, जोकि समुद्रों या तालाबों में होता है, वह धूप के कारण वाष्प बन कर ऊपर की ओर उड़ जाता है। इसके बाद वह वाष्प बादल में बदल जाती है। इस प्रक्रिया को वाष्पीकरण या एवोपोरेशन कहा जाता है। इसके बाद जब बादल पूरी तरह से वाष्पीकरण के द्वारा भर जाते हैं, तो वह बूंदों के रूप में नीचे धरती की ओर आने लगते हैं। जिसे हम वर्षा के रूप में देख सकते हैं। कई बार यह पानी बर्फ के रूप में भी जम जाता है।

जब यह पानी धरती पर आता है तो पहले यह जमीन, पहाड़ या समुद्र कहीं पर भी गिर सकता है।

इसके बाद फिर से धरती पर पड़ने वाला पानी वाष्प बनकर वापस आसमान की ओर जाने लगता है और फिर वह बादल बन कर नीचे धरती पर ही आ जाता है। यह प्रक्रिया ही बार-बार दोहराई जाती है और इसी प्रक्रिया को हम वॉटर साइकिल या जल चक्र कहते हैं। इसलिए ही

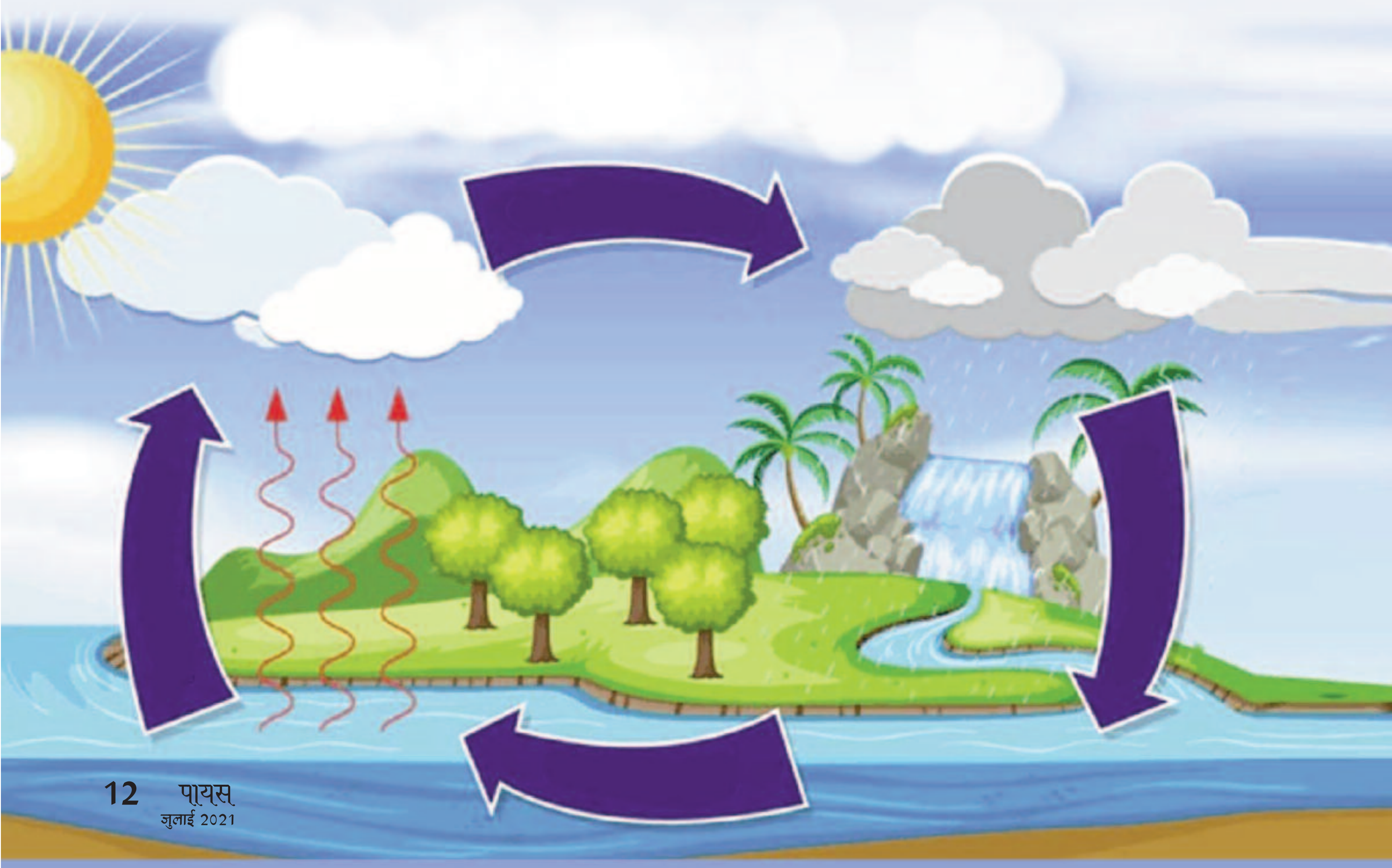

यह इतना बड़ा सर्कल है कि कभी खत्म ही नहीं होता है।

पानी के आसमान की ओर जाने के तीन तरीके हो सकते हैं।

सब्लिमेशन

सबसे पहला तरीका होता है सब्लिमेशन। इस तरीके के अंदर पानी बर्फ के रूप से ही सीधा वाष्प बन जाता है, वह पानी के रूप में पिघलता नहीं है। यह तब होता है जब बहुत अधिक बर्फ होती है और बहुत सर्दी होती है।

एवेपोरेशन

पानी का भाप बनने का दूसरा तरीका होता है एवेपोरेशन। इस प्रक्रिया के दौरान पानी भूमि से या मैदानों से भाप बनकर ऊपर उड़ता है। वातावरण में पाया जाने वाला 90 प्रतिशत पानी इसी प्रक्रिया के कारण आता है। इस प्रक्रिया के दौरान वैसे तो पानी जमीन से सीधा आसमान की तरफ जाता है, लेकिन उसे भाप बनने के लिए सूर्य की गरमी की आवश्यकता होती है। जब भाप गरम होती है, तो वह अधिक जल्दी एवेपोरेट होती हैं। इसलिए हम कह सकते हैं कि यह प्रक्रिया सूर्य के बिना संभव नहीं हो सकती है।

ट्रांस्पिरेशन

तीसरा और अंतिम तरीका जिसके द्वारा पानी बादल बन पाता है, वह है ट्रांस्पिरेशन। इस प्रोसेस में पेड़ अपनी पत्तियों को पानी देते हैं और फिर पत्तियों से वह पानी भाप बनकर उड़ जाता है और ऊपर जाकर बादल बन जाता है। पेड़-पौधे जैसे-जैसे बड़े होते हैं, वैसे-वैसे वह अधिक पानी रिलीज करते जाते हैं।

प्रिसिपिटेशन

वातावरण और बादलों में बहुत सारा पानी होता है। जब वह पानी बूंदों के रूप से बादलों से नीचे गिरता है, तो उसे प्रिसिपिटेशन कहा जाता है। यह पानी के तापमान पर निर्भर करता है लेकिन यह पानी बर्फ, ओले या बूंद किसी भी रूप में आ सकता है।

बारिश से जुड़े कुछ अन्य फैक्ट्स

- ✡ अन्य प्लेनेट्स पर भी बारिश होती है।
- ✡ वीनस में बारिश एसिड से बनी हुई होती है।
- ✡ एक क्षेत्र में बारिश की मात्रा पता करने के लिए वेदर रडार की जरूरत होती है।
- ✡ जब बहुत अधिक बारिश हो जाती है, तो उससे बाढ़ आने का खतरा होता है।
- ✡ अंटार्कटिका सबसे सूखा हुआ कॉन्टिनेंट है।
- ✡ जिन जंगलों में बहुत अधिक वर्षा होती है, उन्हें रेन फॉरेस्ट कहते हैं।
- ✡ जब बारिश में एसिड का लेवल अधिक हो जाता है तो उसे एसिड रेन कहा जाता है।
- ✡ आज इतनी प्रगति के बाद भी भारत की कृषि व्यवस्था बारिश पर ही आधारित है।

अपने लेखक को जानिए

मोनिका अग्रवाल : शिक्षा : समाज शास्त्र में स्नातक और कंप्यूटर इंजीनियरिंग डिप्लोमा। सम्प्रति : 'अनुगूंज' कहानी संग्रह; 'पतझड़ में मधुमास' कहानी संग्रह; 'किड्स स्टोरीज' बाल कहानी संग्रह; 'अम्मा कहती थी' सांझा काव्य संग्रह! पत्र-पत्रिकाओं में नियमित रूप से रचनाएं प्रकाशित होती रहती हैं।

बचपन के बादशाह

शाम का समय था। नैतिक और नीतिका दोनों भाई-बहन खिड़की में बैठकर बारिश देख रहे थे। नैतिक धीरे से बोला, "नीतिका, पुराना अखबार लेकर आओ, नाव बनाएंगे। देखो, बाहर बहुत सारा पानी बह रहा हैं। हम पानी में नाव तैराएंगे।"

नीतिका बोली, "भैया, बारिश में गीले हुए, तो मम्मी डांट लगाएंगी।"

नैतिक खुसुर-पुसुर कर बोला, "तुम चुपके से ले आओ। हम बारिश में नहीं जाएंगे।"

नीतिका दबे पांव स्टोर में गई और पुराने अखबार लेकर आ गई। दोनों भाई-बहन ने मिलकर नाव बनाई। नैतिक ने धीरे से कमरे का दरवाजा खोला और बरामदे से घर के बाहर बह रहे पानी में नाव छोड़ दी। नीतिका तालियां बजाने लगीं और बोली, "देखो भैया, आपकी नाव से मेरी नाव आगे निकल गई।"

नैतिक हंसकर बोला, "तुम मेरी छोटी बहन हो। इसलिए मैंने तुम्हारी नाव को आगे रखा।"

दोनों भाई-बहन दूर तक जाती नाव को देखते रहे।

दोनों की आवाज सुनकर मम्मी बाहर आईं और बोलीं, "बारिश में तुम लोग क्या कर रहे हो? चलो अंदर, कपड़े गीले हो जाएंगे।"

नैतिक बोला, "मम्मी हम बरामदे में ही तो खड़े हैं।"

मम्मी भी चाय का कप लेकर बरामदे में आकर कुर्सी पर बैठ गईं। नीतिका बोली, "बारिश की आवाज सुनकर बहुत मजा आ रहा है।"

मम्मी चाय का घूंट लेकर बोलीं, "सच में बारिश में बहुत मजा आता

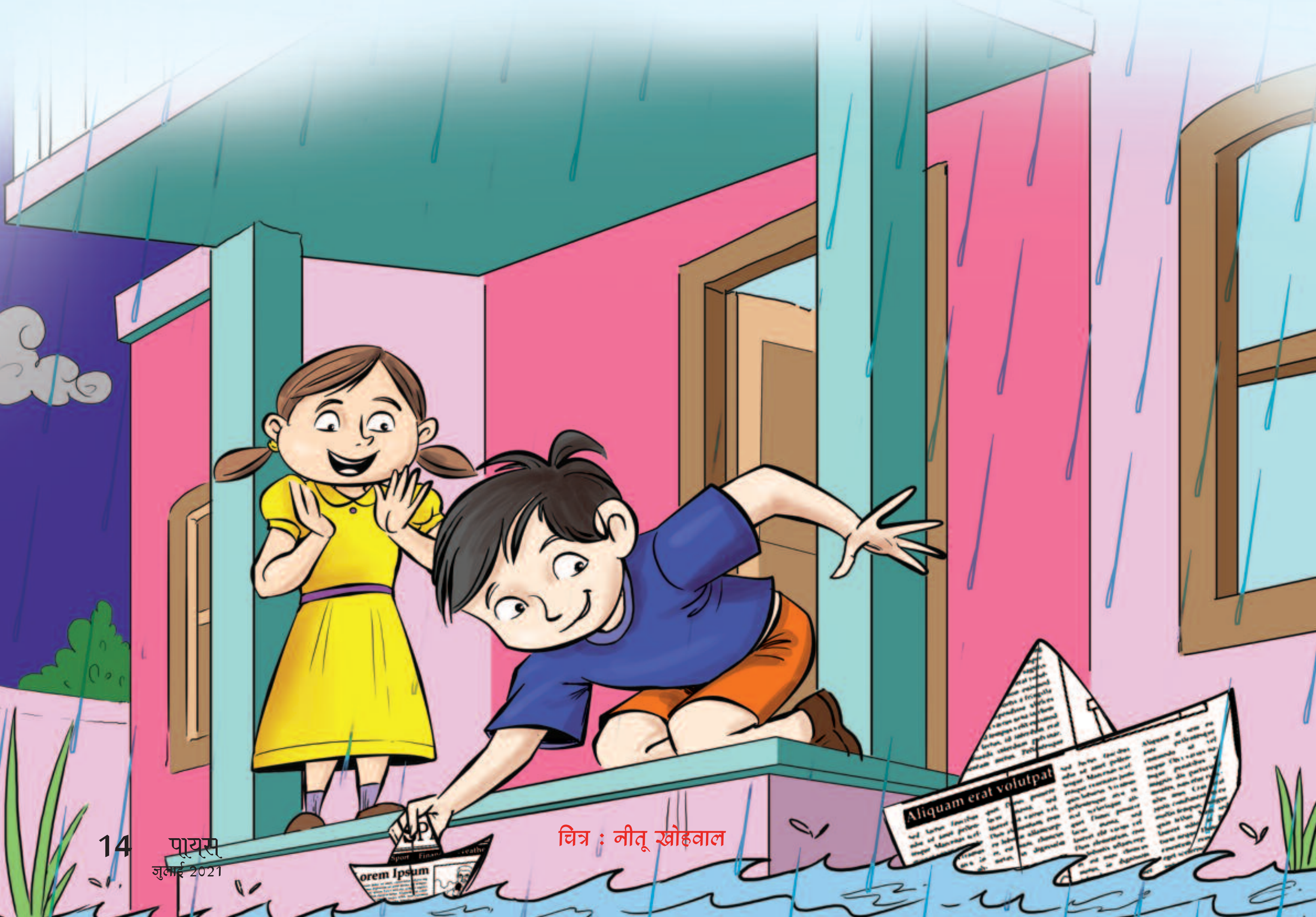

चित्र : नीतू खोड़वाल

है। जब हम छोटे थे, तब मोहल्ले के बच्चे मिलकर बारिश में खूब धमाल मचाते। बचपन की बादशाही के वे भी क्या दिन थे।"

नीतिका ने उत्सुकता से पूछा, "बचपन की बादशाही का क्या मतलब होता है?"

मम्मी हंसकर बोलीं, "बिना किसी की परवाह किए, अपने मन की करना।"

नैतिक मम्मी के पास आया और बोला, "प्लीज मम्मी, हमें भी बारिश में जाने दो।"

मम्मी ने घूरकर नैतिक को देखा। नीतिका ने घुटनों के बल बैठकर मम्मी के दोनों हाथ पकड़ लिए और बोली, "हमें भी अपने बचपन का बादशाह बनने दो ना।"

नीतिका का अंदाज देख मम्मी को हंसी आ गई। वह बोलीं, "जाओ।"

नैतिक और नीतिका खुश होकर लॉन की तरफ भागे। नीतिका अपने फ्रॉक का घेर फैलाकर बोली, "आज तो मैं बारिश का खूब सारा पानी अपनी गोदी में भर लूंगी।" दोनों खिलखिलाकर हंसने लगे।

नैतिक अपनी दोनों बाहें फैलाकर बारिश की बूंदों के साथ नाचने लगा। दोनों-भाई बहन नाच-गाकर बारिश का आनंद ले रहे थे।

थोड़ी देर में बारिश धीरे होने लगी और रुक गई। मम्मी बोलीं, "बच्चों कपड़े बदल लो। मैं तुम्हारे लिए गरमागरम सूप बनाती हूं।"

नैतिक सूप के चटकारे लेते हुए बोला, "देखो, आकाश में धूप की किरणें चमकने लगीं।"

मम्मी बोलीं, "अरे! तब तो इंद्रधनुष बना होगा।"

दोनों भागकर बाहर गए। नीतिका पूर्व की ओर इशारा कर बोली, "भैया देखो, इंद्रधनुष उधर बना है।"

नैतिक इंद्रधनुष देखकर बोला, "वाह! सात रंगों का सुंदर-सा इंद्रधनुष।"

इंद्रधनुष को देखते हुए नीतिका बोली, "बहुत सुंदर लग रहा है। आसमान में सुंदर रंगों से आधा गोला बना है।"

नैतिक बोला, "चलो, हमारे और मित्रों को भी इंद्रधनुष दिखाते हैं।"

दोनों फाटक खोलकर बाहर आए। नैतिक ने पास वाले घर में अपने मित्र चित्रांग को आवाज लगाई, "चित्रांग बाहर आओ, आसमान में इंद्रधनुष बना है।"

तभी नीतिका बोली, "भैया देखो, सड़क पर कितने सारे छोटे-बड़े मेढक उछल रहे हैं।"

नैतिक मेढक देखकर बोला, "अरे छुटकू राम! तुम भी इंद्रधनुष के रंग देखने आए हो?"

तभी अचानक वहां से एक कार तेजी से निकली। एक मेढक कार के पहिए के नीचे कुचलते-कुचलते रह गया। नीतिका मेढक को देखकर चिल्लाई, "अरे! यह बेचारा तो मरते-मरते बचा।"

नैतिक भावुक होकर बोला, "नीतिका, जल्दी-जल्दी सारे मेढकों को पानी के गड्ढ़ों की ओर भेजते हैं।" नैतिक मेढक को घर के पास भरे हुए पानी के गड्ढ़ों की ओर भेजने लगा।

मम्मी शोर सुनकर बाहर आई। मम्मी ने पूछा, "तुम दोनों सड़क पर क्या कर रहे हो?"

नैतिक बोला, "इंद्रधनुष देखने बहुत सारे मेढक सड़क पर आ गए हैं। एक तो कार के नीचे कुचले जाने वाला था। हम इन्हें वापस पानी में छोड़ रहे हैं।"

मम्मी बोली, "बेटा, ये अपने आप चले जाएंगे।"

नैतिक हांफते हुए बोला, "मम्मी, मैं कोशिश कर रहा हूं, इन्हें बचा लूं।"

मम्मी मौन खड़ी, बच्चों के प्रयास को देख रही थीं। दोनों भाई-बहन सचमुच एक दिन के लिए बचपन के बादशाह बन गए थे। ✪

अपने लेखक को जानिए

उषा सोमानी : पूर्व व्याख्याता (अर्थशास्त्र), पत्र-पत्रिकाओं में बाल कहानी, बाल कविता, लघुकथा और आलेख प्रकाशित। बच्चों के लिए लेखन से उन्हें असीम आनंद और अनोखी ऊर्जा प्राप्त होती है।

बारिश न हो तो...

बारिश ऐसा शब्द जिससे शायद सबको प्यार होगा। खासकर तुम बच्चे तो बारिश के पानी में छई छप्पा छई करने के लिए बेकरार रहते होगे। पर बारिश ज्यादा हो, तो परेशानी भी खड़ी हो जाती हैं। बिहार, उत्तरप्रदेश और असम के लोगों से पूछो, वे ज्यादा बारिश के कारण आने वाले बाढ़ के नाम से ही कांप जाते हैं। मुंबईवासी तो मानसून में शहर के कई हिस्से डूब जाने के कारण बारिश को पानी पी-पीकर कोसते हैं।

लेकिन क्या तुमने सोचा है कि यदि कुछ साल बारिश ही न हो, तो क्या होगा? हमारी जिंदगी कैसी होगी?

चार साल पहले दक्षिण अफ्रीकी शहर केपटाउन एक अनचाहा रेकॉर्ड बनाने के कगार पर खड़ा था। कारण था, कई वर्षों से पानी का न बरसना। शहर में पीने के पानी की सप्लाई जिस डैम से होता था, उसमें मुश्किल से 10 प्रतिशत पानी बचा था। मशीन द्वारा भी पम्प पानी नहीं खींच पा रहे थे। तय हुआ कि 1 अप्रैल 2018 से इस शहर को बिना पानी वाला शहर घोषित कर दिया जाएगा।

हालांकि यह नौबत नहीं आई और मार्च के आखिर में दो चार दिन पहले बारिश होने से उस शहर पर यह लांछन लगने से बच गया।

अगर पानी न बरसे, तो दुनिया का क्या हाल हो सकता है, यह समझना हो, तो सिर्फ एक देश के बारे में ही जान लो।

प्यासा देश सऊदी अरब

सऊदी अरब एक धनी देश है। वहां सब कुछ है, बढ़िया लाइफ स्टाइल, तेल के कुएं, बड़ी-बड़ी इमारतें, बढ़िया इम्पोर्टेड एक से एक गाड़ियां। पर एक चीज नहीं है, और वो है पानी।

पानी के दो मुख्य सोर्स हैं, बरसात और नदियां। बदकिस्मती से ये दोनों सऊदी अरब में नहीं हैं। इस देश में कोई नदी नहीं है और बरसात भी सालभर में दो-चार दिनों के लिए आंधी-तूफान के साथ आती है। वहां के पहाड़ों पर ग्लेशियर नहीं हैं कि वे देश को निरंतर पानी की सप्लाई दे सकें।

पीने का पानी

पीने का पानी प्राप्त करना सऊदी में एक विकट समस्या है। वहां कुएं तो हैं, पर तेल के। पानी के कुएं केवल किस्से-कहानियों में हैं। समुद्र के नमकीन पानी को प्रोसेस करके पीने लायक बनाया जाता है। वहां पानी की 50 प्रतिशत जरूरतों इस तरह पूरी की जाती हैं। 40 प्रतिशत जरूरतें भूजल को निकालकर पूरी की जाती हैं। बाकी दस प्रतिशत अन्य तरीकों से पूरी की जाती हैं।

अब बारिश हो या न हो, पीने और अन्य कामों को करने के लिए पानी की जरूरत तो पड़ती है। इसके लिए हर जगह भूजल का प्रयोग होता है। जब मौसम होता है और अच्छी बारिश होती है, तो भूजल का लेबल फिर से ठीक हो जाता है।

पर सऊदी की बात अलग है। वहां भूजल का दोहन खूब होता है, पर बारिश तो न के बराबर होती है। इससे निकले हुए भूजल की भरपाई नहीं हो पाती। इस कारण वहां भूजल का लेबल इस खतरनाक लेबल तक नीचे चला गया है कि उसकी अब भरपाई भी नहीं हो सकती। वहां अब तो जल 100-150 फुट नीचे नहीं, 150 मीटर नीचे चला गया है।

सऊदी अरब अपने इलाके में उपलब्ध भूजल का 93 प्रतिशत हिस्सा निकाल चुका है। वहां भूमि से इसी गति से पानी निकाला जाता रहा, तो दो-तीन दशकों बाद वहां भूजल बचेगा ही नहीं।

पड़ोस के देश जॉर्डन और सीरिया में जिस दिन बारिश होती है, उस दिन सऊदी में लोग खुशियां मनाते हैं क्योंकि वहां बरसे पानी से सऊदी के भूजल के स्तर पर भी फर्क पड़ जाता है।

मध्य पूर्व एशिया और उत्तरी अफ्रीका, दुनिया में सबसे सूखाग्रस्त इलाके हैं। इन क्षेत्रों में पानी न के बराबर बरसता है और नदियां न के बराबर हैं। इन देशों में सऊदी अरब के साथ उसके कई पड़ोसी देश शामिल हैं।

सऊदी अरब में खेती न के बराबर होती है। 1980 के दशक में वहां गेहूं की खेती शुरू हुई और आज भी हो रही है। पर उसके लिए भी भूजल की ही दोहन होता है, जो भविष्य में उन्हें बहुत महंगा पड़ेगा।

सऊदी अरब अपने अन्न के लिए दूसरे देशों पर निर्भर है। वहां तेल के अलावा अन्य उद्योग-धंधे न के बराबर हैं। बारिश न होने के कारण वहां का वातावरण भी काफी गरम रहता है। वहां का औसत तापमान 43 डिग्री सेल्सियस से ज्यादा दर्ज होता है। कई इलाके धीरे-धीरे रेगिस्तान में बदलते जा रहे हैं।

अगर बारिश नहीं हुई और हमने प्रकृति के इस अनमोल उपहार पानी की देखभाल ठीक से नहीं की, तो सऊदी अरब जैसा हाल हर देश का हो सकता है। पर हर देश सऊदी अरब की तरह अमीर नहीं है कि पैसे के बल पर अपनी जरूरतों को पूरा कर लेगा। और सबसे बड़ी बात, कब तक ऐसे चल पाएगा? ✪

सऊदी अरब का यह सूखा कुआं बहुत कुछ कहता है

अगर न बरसा पानी तो...

◆ अगर पानी नहीं बरसा, तो भारत सहित मानसून आधारित देशों में खेती नहीं हो पाएगी। जमीन की नमी चली जाएगी, तो इसे फिर से कृषि योग्य बनाने में बहुत समय लगेगा।

◆ आज भी बरसे पानी को इनसान द्वारा बहुत कम सहेजा जाता है। हम प्राकृतिक स्रोतों के सहारे जीते हैं और ये स्रोत बारिश पर बुरी तरह निर्भर हैं।

◆ आज भी चींटी की तरह भविष्य के लिए अन्न भंडार करने की अच्छी व्यवस्था इनसानों ने नहीं की है। दो-तीन साल अगर बारिश न हो, तो कई देश सूखे की चपेट में आ जाएंगे। भुखमरी आ जाएगी।

◆ गरमी के कारण जंगलों में आग की घटनाएं बढ़ जाएंगी। कई पशुओं का अस्तित्व खतरे में पड़ जाएगा। पालतू पशुओं के लिए चारा नहीं बचेगा।

◆ ग्लेशियर वैसे भी तेजी से पिघल रहे हैं। बरसात न होने पर इनके अस्तित्व पर खतरा बढ़ जाएगा।

◆ ग्राउंड वाटर का लेबल बहुत नीचे चला जाएगा। जिसे संतोषजनक स्थिति में आने में कई दशक लग जाएंगे।

◆ संसार का तापमान प्रदूषण के कारण वैसे ही बढ़ रहा है। तापमान और तेजी से बढ़ेगा और साथ में परेशानी भी।

◆ कल-कारखाने बंद होने लगेंगे क्योंकि अधिकतर में पानी साथ बिजली की जरूरत होती है और भारत में बिजली उत्पादन अब भी पानी पर ज्यादा आश्रित है।

◆ भारत में दिल्ली जैसा शहर केवल यमुना नदी पर पाने के पानी के लिए निर्भर है। मुंबई में कई सौ किलोमीटर दूर के एक झील से पाइपलाइन द्वारा पानी की सप्लाई की जाती है। बारिश के बिना पानी की सप्लाई पर बहुत असर पड़ेगा।

जाना है उस पार

नीम के पेड़ पर बैठा बाबू बंदर सोच रहा था, 'यह जंगल कितना हरा-भरा था! उनके वृक्ष, घनी झाड़ियां, पश्चिम सीमा पर बहती नदी, बहुत सारे प्राणी पंछी थे, सारे खुशहाल!

पर धीरे धीरे सब बदलता गया था। वृक्ष कम हो गए, जंगल की आबोहवा बदली, जंगल में बसते जानवरों की संख्या भी कम होने लगी। कटते हुए जंगलों में पशु-पक्षी भी सुरक्षित नहीं रहे!

पहले जंगल मे आते आदमी मित्र से लगते थे। फल लेते, जड़ी-बूटियां उठाते, सिर पर उठा सकें, उतनी लकड़ियां भी ले जाते। बेवजह पशु-पक्षियों को वे मारते नहीं थे।

पर अब तो आदमी भी बदल चुका है! पशु-पक्षियों का शिकार उनके अंगों को बेचने के लिए करता है। वृक्ष काटकर ले जाता है। उद्योगों के लिए वन-धन का दोहन करता है। अब तो इस जंगल में भूखों मरने की नौबत आ गई है।'

फिर वह देखने लगा, नदी के उस पार। वहां कितना घना जंगल अभी भी है! बहुत सारे फलदार वृक्ष भी होंगे, भोजन की कमी न होगी! पता नहीं क्यों, आदमी की नजर उस जंगल पर नहीं पड़ी!

उकताकर बाबू पेड़ से नीचे उतर आया। नदी में, मस्त-मोटे 'स्टफी कछुए' को तैरते देखा। फिर सोचने लगा, 'इन जल-जीवों के मजे हैं। दोनों जंगल उनके हैं। पानी भी और

जमीन भी!

तभी उसने सुना," किस सोच में हो बाबू भाई?" स्टफी ने किनारे की ओर से चढ़ते हुए पूछा।

"क्या बताऊं स्टफी, उस पार के जंगलों को देख रहा हूं। कितने मजबूर है हम! नदी पार कर, उस हरे-भरे जंगल में जाने की बात सोच भी नहीं सकते!" बाबू ने दुखी होकर कहा !

"क्यों, इसमें क्या परेशानी है?" स्टफी ने कहा," वहां तुम्हारा जीवन आराम से कटेगा। वे वन आरक्षित घोषित हैं, इसलिए फले-फूले और सुरक्षित हैं। वहां के जंगली जीव आदमी की बदनीयत के शिकार नहीं! पर दोस्त, समस्या यह है कि तुम वहां तैरकर नहीं जा सकते।"

"जंगल के बारे में सबकुछ जानकर अच्छा लगा। पर वहां जाऊगां कैसे, कुछ सुझाव दो?" बाबू ने अपनी परेशानी बताई।

इस पर स्टफी ने कहा, "इस परेशानी में मैं तुम्हारी मदद कर सकता हूं। इसी नदी में मेरा एक दोस्त है, 'मगरू' मगरमच्छ। उसकी पीठ पर सवार होकर तुम और तुम्हारा परिवार उस पार जा सकता है मैं मगरू से बात करूंगा।"

बाबू चौंक गया, "मगरमच्छ की सवारी? ना बाबा, ना! अपने पूर्वजों से हमने मगरमच्छ की धोखेबाजी की कहानी सुन रखी है, उसे दोहराने का मौका हम अब हम किसी मगरमच्छ को नहीं दे सकते!"

"वह कहानी तो मैंने भी सुनी है। उसे छोड़ो, मैं कुछ और सोचता हूं।" स्टफी ने कहा ।

दूसरे दिन नदी किनारे स्टफी ने बाबू को पुकारा, "दोस्त, एक उपाय मैंने सोच लिया है, तुम्हें नदी पार कराने का। यहीं किनारे के पास लकड़ी का एक पतला तख्ता पड़ा है। मैं और मेरा हट्टा-कट्टे भाई 'मेरू, हम दोनों की पीठ पर, तुम उस तख्ते को कसकर बांध दो। हम दोनों उस तख्ते के साथ तैरते हुए, उस पर तुम्हें बैठाकर, नदी पार पहुंचा देंगे।"

उसकी बात सुनकर बाबू खुशी से उछल पड़ा। बाबू तख्ता उठा लाया, साथ जंगली बेलों की डोरियां भी! अपने छोटे भाई की मदद से उसने दोनों कछुओं की पीठ पर तख्ता कसकर बांध दिया। इससे पहले उनके नर्म पेट पर पत्तों के गद्दे बांधना वे न भूले, ताकि रस्सी की कसावट से उन्हें परेशानी ना हो! पैर खुले थे तैरने के लिए!

सारी व्यवस्था के बाद स्टफी ने कहा, "हमारी नाव पूरी तरह सुरक्षित तो नहीं है और नदी में और भी खतरे हैं! इसलिए पहले तुम अकेले चलो।"

"फिर भी कोशिश अच्छी है। हिम्मत हमारे साथ है, शायद हम सफल हो जाएं! तुम दोनों को धन्यवाद।" बाबू बोला ।

बस, फिर क्या था, चल पड़ी कछुआ नाव! स्टफी और मेरू के सहयोग से, बाबू बंदर धीरे-धीरे पहुंच गया नदी के उस पार! फिर अगली बार में उसका परिवार आ गया। ✪

अपने रचनाकार को जानिए

पद्मा चौगांवकर : सेवानिवृत्त शिक्षिका, पिछले पांच दशकों से लेखन। मराठी से हिंदी और हिंदी से मराठी अनुवाद भी किया। देश के करीब-करीब सभी महत्वपूर्ण पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएं प्रकाशित। दस से ज्यादा पुस्तकें प्रकाशित। अनेक पुरस्कारों से सम्मानित

चित्र व परिकल्पना : पंकज राय

अपने लेखक को जानिए

शिवचरण चौहान : सेवानिवृत्त प्राचार्य (हाई स्कूल)। पत्र पत्रिकाओं में बाल साहित्य का प्रकाशन, आकाशवाणी से भी यदा-कदा बाल कविता, कहानी का प्रसारण। बाल विधा की तीन पुस्तकें प्रकाशित।

चला झूमता हाथी

कदली वन में हाथी ने
खाए केले भरपूर।
और खा गया फिर नौ कुंटल
लड्डू मोतीचूर।।
पानी पीकर तीस बाल्टी
चला झूमता साथी।
शेर भाग कर छुपा गुफा में
भागो आया हाथी।।

तभी सामने से इक चींटी
आती पड़ी दिखाई।
कहीं काट न ले फिर हमको
भागे हाथी भाई।।
इक नन्ही चींटी से डरता
इतना भारी हाथी।
हंसता हरियल तोता
हंसते हाथी के सब साथी।।

बरसात हुई तो...

अपने लेखक को जानिए

राजेन्द्र श्रीवास्तव : सेवा निवृत्त प्राचार्य (हाई स्कूल), पत्र पत्रिकाओं में बाल साहित्य का प्रकाशन, आकाशवाणी से भी यदा-कदा बाल कविता, कहानी का प्रसारण। बाल विधा की तीन पुस्तकें प्रकाशित।

नील गगन पर बादल छाए
जाने कहाँ-कहाँ से आए।

मिलकर हुए घने व काले
भारी गर्जन करने वाले
लगी चमकने बिजली चंचल
पल-पल चकाचौंध कर जाए।

बादल गरजे दूर गगन में
मोर नृत्य करते उपवन में
टिप-टिप बूँदें लगीं बरसने
मेढक टर्र-टर्र टर्राए।

यहाँ-वहाँ से बादल आकर
चले गये पानी बरसाकर
बर्षा बंद हुई तब देखा
इंद्रधनुष ने रंग विखराए।

मेरा भाई

सुनील अपने गांव के स्कूल का सबसे होनहार विद्यार्थी था। दसवीं में उसके पूरे जिले में सबसे अधिक नंबर आए थे। उसके गांव में कोई इंटर कालेज न था। इसलिए उसकी बुआ उसे अपने साथ दिल्ली लिवा लाई।

दिल्ली में पढ़ने की बात से सुनील बहुत खुश था। उसने अपने बगीचे से ढेर सारे आम और खेत से गन्ने तुड़वा लिए। सोचा, बुआ का बेटा रमन उन्हें खाकर बहुत खुश होगा।

बुआ का फ्लैट एक मल्टी-स्टोरी बिल्डिंग की 12वीं मंजिल पर था। सोसाईटी के गार्ड की सहायता से बुआ सुनील के साथ आम की टोकरियां और गन्ने का ढेर लिफ्ट में लादकर ऊपर पहुंचीं। रमन देखते ही फट पड़ा, "मम्मी, यह सब क्या उठा लाईं? सोसाईटी के लोगों ने देखा होगा, तो क्या सोचा होगा?"

"भैया, यह सब अपने बगीचे और खेत के है।" सुनील ने बताया।

"अपने बगीचे और खेत के हैं तो क्या इनमें हीरे-पन्ने जड़ गए? इससे अच्छे आम यहां दिल्ली में मिल जाते हैं और ऐसे गन्ने तो यहां के नौकर-चाकर भी नहीं चूसते।" रमन ने मुंह बनाया।

यह सुन सुनील का चेहरा उतर गया। लेकिन बुआजी कुछ-कुछ समझ गई थीं। उन्होंने सोचा, बाद में रमन को समझा देंगी। उन्होंने सुनील का सामान एक कमरे में रखवा दिया।

खाना खाने के बाद सुनील ने एक दो बार रमन से बात करने की कोशिश की, लेकिन उसने कोई तवज्जो नहीं दी। हारकर सुनील अपने कमरे में जाकर लेट गया।

उसके सोने के बाद बुआजी ने रमन को समझाने की कोशिश की, तो वह फट पड़ा, "मम्मी, इसे तो कपड़े पहनने तक की तमीज नहीं है। बालों से देखो, कैसा तेल टपक रहा है। लगता है, सीधे कोल्हू से नहाकर चला आ रहा है। आपने सोचा भी कैसे कि मैं इस गंवार को साथ रखूंगा।"

"बेटा, यह लड़का बहुत टैलेंटेड है। अपने स्कूल में खेल-कूद और पढ़ाई दोनों में हमेशा प्रथम आता है। यहां किसी अच्छे स्कूल में पढ़ेगा, तो कुछ बन जाएगा। तुम्हें तो खुश होना चाहिए कि अब तुम्हारा भाई भी तुम्हारे साथ रहेगा।"

"भाई!" रमन ने बुरा सा मुंह बनाकर बोला, "अगर मेरे दोस्त जान गए कि यह गंवार मेरा भाई है, तो मेरी तो इज्जत का फालूदा बन जाएगा।"

बुआजी ने रमन को समझाने की काफी कोशिश की, लेकिन वह न

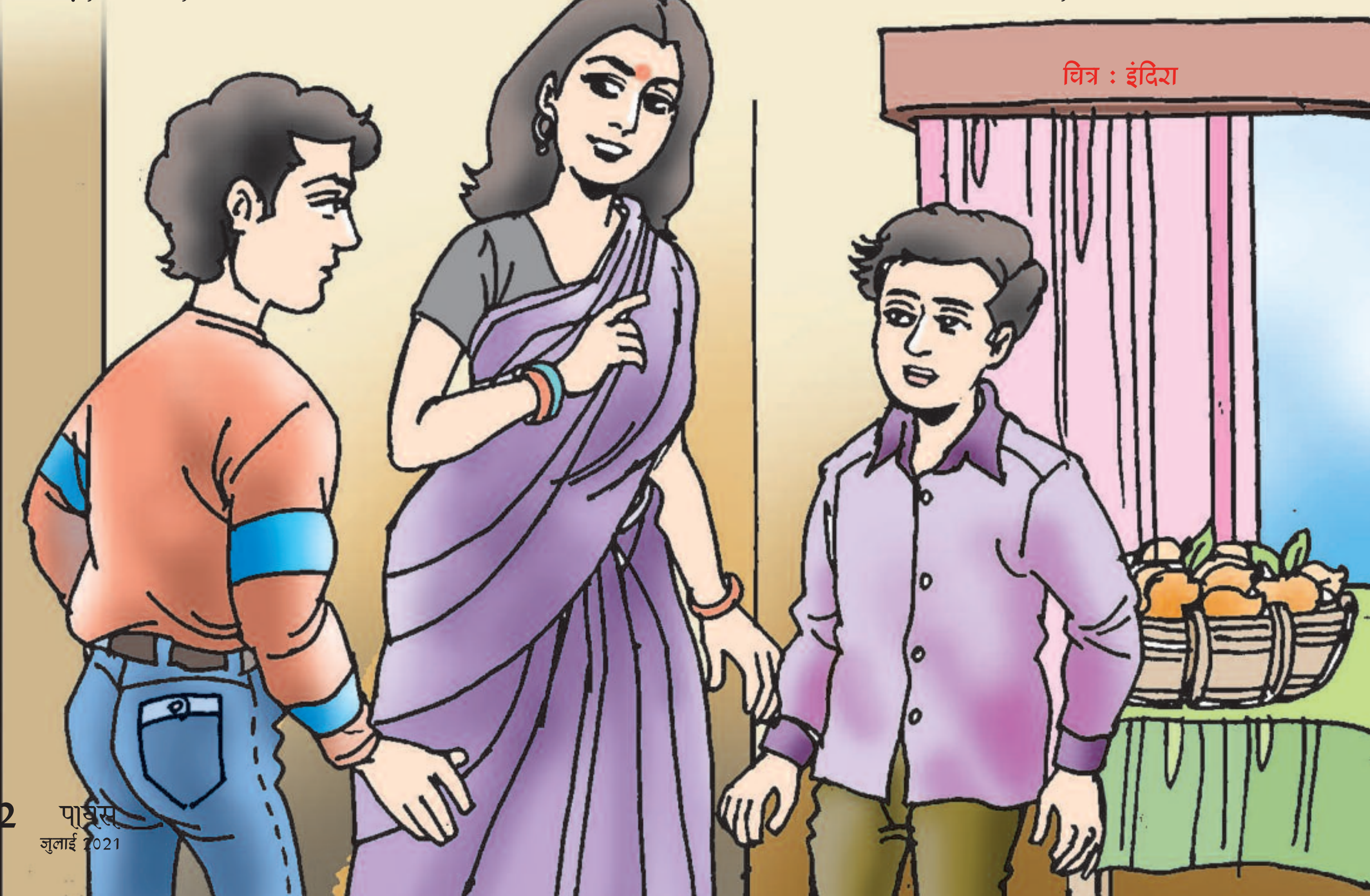

चित्र : इंदिरा

माना, तो न माना। वह समझ गईं कि सुनील को किसी हॉस्टल में ही डालना पड़ेगा। उन्होंने रमन को कुछ दिनों तक शांत रहने के लिए राजी कर लिया।

फूफाजी ने दौड़-भाग करके सुनील का एक अच्छे स्कूल में दाखिला करवा दिया। लेकिन हॉस्टल अभी नहीं मिल पाया था, इसलिए सुनील घर पर ही रह रहा था। उसने बहुत कोशिश की, लेकिन रमन कभी उससे बात नहीं करता।

रविवार के दिन बुआ और फूफाजी किसी काम से बाहर गए थे। रमन ने उस दिन अपने दोस्तों को घर बुला रखा था। उसने सुनील से कहा, "मेरे दोस्त आने वाले हैं। मैं नहीं चाहता कि वे सब तुम्हें यहां देखें।"

"भैया, आप चिंता मत कीजिए। मैं अपने कमरे में ही रहूंगा। आपके दोस्तों के जाने तक बाहर नहीं निकलूंगा।" सुनील ने कहा।

"जी नहीं, तुम फौरन बाहर निकलो और जब तक मेरे दोस्त वापस न चले जाएं, घर के भीतर कदम भी मत रखना।" रमन ने चुटकी बजाते हुए सुनील को बाहर निकलने का इशारा किया।

अपमान से सुनील की आंखे भर आईं। वह सोसाइटी के एक पार्क में जाकर बैठ गया।

थोड़ी ही देर में रमन के दोस्त आ गए। वे अपने साथ खाने-पीने का ढेर सारा सामान पैक करवाकर लाए थे। रमन उसे किचन में गरम करने लगा। उसके दोस्त उसके कमरे में बैठ गए थे। थोड़ी देर बाद उनके ठहाकों की आवाज सुनाई पड़ी, तो रमन उत्सुकतावश उन्हें देखने चला आया। वे सब एक आनलाईन मजेदार गेम खेल रहे थे। रमन भी खेलने बैठ गया। वह भूल गया कि उसने किचन में गैस पर सामान गरम करने के लिए चढ़ा रखा है।

थोड़ी ही देर में गैस पर चढ़े सामान से लपटे उठने लगीं और वहां रखे दूसरे सामानों ने आग पकड़ ली। ड्राईंगरूम किचन के बगल में ही था। कुछ चिंगारियां उड़कर वहां की कालीन पर गिरीं, तो वह सुलगने लगी। थोड़ी ही देर में आग एकदम से भड़क उठी और देखते ही देखते वहां रखा सोफा-सेट और दूसरे फर्नीचर भी धूं-धूं करके जलने लगे।

रमन और उसके दोस्त आनलाईन गेम खेलने में मस्त थे। जब आग का धुंआ उनके कमरे के भीतर पहुंचा, तब उन्हें होश आया लेकिन तब तक काफी देर हो चुकी थी। बाहर जाने का रास्ता ड्राइंग-रूम से होकर जाता था, लेकिन वहां तो भयंकर लपटें उठ रहीं थी। हर बीतते पल के साथ आग बढ़ती ही जा रही थी।

एक दोस्त ने कमरे की खिड़की खोल दी, तो सभी लोग सिर बाहर निकालकर चिल्लाने लगे, "बचाओ, बचाओ। यहां आग लग गई है।"

लोग उनके फ्लैट की तरफ दौड़े। इस बीच आग दरवाजे तक पहुंच गई थी और वह धूं-धूं करके जलने लगा था। वहां उठ रही लपटों को देख, किसी की भी भीतर घुसने की हिम्मत नहीं हो रही थी।

थोड़ी ही देर में फायर-बिग्रेड की गाड़ी घंटा बजाते हुए आ गई। रमन और उसके दोस्त अभी भी खिड़कियों से सिर निकाले चिल्ला रहे थे। फायर-बिग्रेड वालों ने अपनी सीढ़ी को उपर करने की कोशिश की लेकिन दुर्भाग्य से उसका लीवर खराब हो गया। वे अपनी सीढ़ी को उंचा नहीं कर सके।

हारकर उन्होंने नीचे से पानी फेंकने की कोशिश की, लेकिन पानी की धार 12वीं मंजिल तक नहीं पहुंच पा रही थी। फायर इंस्पेक्टर ने दूसरी गाड़ी मंगवाने के लिये फोन कर

अपने लेखक को जानिए

संजीव जायसवाल 'संजय' : 40 वर्षों से साहित्य साधना में लीन। रेलवे की नौकरी से सेवानिवृत्ति के बाद पूरी तरह साहित्य को समर्पित। अब तक एक हजार से अधिक कहानियां और 25 से ज्यादा पुस्तकें प्रकाशित। इनकी एक पुस्तक का विश्व की 112 भाषाओं में अनुवाद हुआ।

दिया था लेकिन रास्ते में जाम लग जाने के कारण वह भी वहां तक नहीं पहुंच पा रही थीं।

किंतु सुनील समझ गया था कि अगर जल्दी ही आग नहीं बुझी, तो उन्हें बचाना असंभव हो जाएगा। अचानक उसे 15वीं मंजिल पर बनी पानी की भारी-भरकम टंकी याद आई। उसके मन में एक योजना कौंध पड़ी। उसने इधर-उधर देखा। थोड़ी ही दूर पर बिल्डिंग के विशालकाय लॉन को सींचने वाला मोटा पाईप पड़ा था। उसने उस पाईप को उठाकर कंधे पर लादा और लिफ्ट की ओर दौड़ पड़ा। चंद पलों में वह छत पर पहुंच गया। दो दिन पहले ही उसने देखा था कि छत पर एक मोटा रस्सा रखा हुआ है।

पानी की टंकी पर चढ़कर सुनील ने पाईप के एक सिरे को उसके भीतर डाला। नीचे उतरकर उसने पाईप के दूसरे सिरे को मुंह से लगा कर जोर से खींचना शुरू किया। थोड़ी ही देर में पाईप से पानी की धार बाहर आने लगी। उसने जल्दी से पाईप को अपनी कमर से बांधा फिर रस्से के एक सिरे को टंकी पर चढ़ने वाली लोहे की सीढ़ी से बांधा, फिर उसे पकड़कर नीचे उतरने लगा।

पाईप से निकल रही पानी की धार

जब नीचे गिरी, तो वहां खड़े लोगों का ध्यान 12वीं मंजिल की ओर बढ़ रहे सुनील की ओर गया। वे सब चिल्लाने लगे लेकिन सुनील किसी पर ध्यान दिए बिना चुपचाप अपने लक्ष्य की ओर बढ़ रहा था। खेल-कूद की प्रतियोगिताओं के लिए उसने रस्सी से उपर-नीचे चढ़ने का अच्छा अभ्यास किया था। इस समय वही उसके काम आ रहा था।

थोड़ी ही देर में वह 12वीं मंजिल की खिड़की के पास पहुंच गया। हवा में झूलते हुए उसने बहुत सावधानी से अपनी कमर से बंधे पानी के पाईप को खोला और उसे रमन की ओर बढ़ाते हुये चिल्लाया, "भैया, लो पकड़ो इसे और जल्दी से बुझा दो आग।"

रमन ने हाथ बढ़ाकर पाईप को पकड़ लिया और उसे भीतर खींचने लगा। वह पाईप काफी लंबा था। थोड़ी ही देर में पानी की धार से रमन ने आग पर काबू पा लिया। इस बीच सुनील वापस छत पर चढ़कर सीढ़ियों से 12 वीं मंजिल पर पहुंच गया था। रमन, सुनील को देखते ही उसके गले से लिपट गया।

आग की तपिश और धुएं के कारण रमन और उसके दोस्तों की हालत खराब थी। पड़ोसियों ने उन्हें अपने फ्लैट में लिटा लिया। उसी बिल्डिंग में एक डाक्टर साहब रहते थे। सबकी जांच कर उन्होंने दवा दी, तो थोड़ी ही देर में वे सामान्य हो गए।

इस बीच किसी ने रमन के मम्मी-पापा को खबर कर दी थी। वे लोग सारा काम छोड़कर वापस भागे। सुनील की बहादुरी से सबकी जान बच गई है, यह जान फूफाजी ने सुनील को गले से लगा लिया फिर रमन से बोले, "अगर यह दुर्घटना आज के बजाय कल होती, तो फिर तुम्हें बचाने वाला कोई न होता।"

"क्यों ?"

"क्योंकि सुनील को हॉस्टल मिल गया है और वह कल सुबह यहां से जा रहा है।" फूफाजी ने बताया।

"पापा, सुनील कहीं नहीं जाएगा। वह मेरा भाई है और मेरे साथ ही रहेगा।" रमन भर्राए स्वर में बोला।

"भाई ?" बुआजी चौंक पड़ीं।

"मम्मी, बाहरी चमक-दमक में भटक जाने के कारण मैं रिश्तों के महत्त्व को भूल गया था।" इतना कहकर वह सुनील की ओर मुड़ा और हाथ जोड़ते हुए बोला,"भाई, मैंने तुम्हारा बहुत अपमान किया है। अगर हो सके, तो तुम भी मुझे माफ कर दो और मुझे छोड़कर मत जाओ।"

"आप मुझसे बड़े हैं। माफी मांगकर मुझे शर्मिंदा न करें।" सुनील ने रमन के हाथों को पकड़ लिया, तो वह एक बार फिर उसके गले से लिपटकर फफक पड़ा।

दोनों भाईयों का मिलन देख बुआजी की भी आंखें भी छलक आईं।

अपने लेखक को जानिए

प्रभुदयाल श्रीवास्तव : मूलतः कवि, विभिन्न-पत्र पत्रिकाओं में बाल साहित्य सहित 500 से ज्यादा रचनाओं का प्रकाशन, एक व्यंग्य और दो गीत संग्रह प्रकाशित।

पके आमजी

फिर थाले भर पके आमजी,
घर लेकर के आये श्यामजी।

बच्चों की थी यह फरमाइश,
आम खाएंगे हम सब दस-दस।
पापा थैला भरकर लाये
आम सभी ने दो- दो खाये।
दादी बोली अधिक खाओ तो,
होती बीमारी तमामजी।

दादा-दादी अम्मा-बापू,
रखा सभी ने खुद पर काबू।

दो-दो आम और बंटवाए,
बचे हुए फ्रिज में रखवाए।
दादा बोले कल आमों के,
शरबत का हो इंतजामजी।

आमों के कई रंग रूप हैं,
स्वाद अनोखे और अनूप हैं।
चौसा केसर और बादामी,
तोतापरी मालवा नामी।
हापुस लंगड़ा और दशहरी,
इनके होते ढेर नामजी।

हैरानी की बात

स्कूल के गेट के पास दाहिनी तरफ एक लस्सी की दुकान थी। आरुषि ने बहुत कोशिश की सबकी नजर से बचाने की, लेकिन उससे चिढ़ने वाली कुछ लड़कियों ने उसे देख ही लिया और ठहाका लगाकर उसकी हंसी उड़ाने से जरा भी नहीं चूकीं। लेकिन आरुषि ने अपने आपको जरा भी लज्जित महसूस नहीं किया। उसने जिस कुल्हड़ से लस्सी पी, उसे हैंडपंप से धोया और कागज में लपेटकर अपने बैग में रख लिया।

इस बीच उसने कनखियों से देखा। वे लड़कियां बार-बार पीछे मुड़कर उसे देख रही थीं और आपस में पता नहीं क्या, खुसुर-फुसुर कर रही थीं। वह अपने चेहरे पर हलकी-सी मुसकान लाई और तेजी से साइकिल के पैडल मारती हुई अपने घर की तरफ चल पड़ी।

अगले दिन कक्षा में भी वे लड़कियां उसके बारे में दूसरी लड़कियों को बताकर पता नहीं क्या बातें करती रहीं। पर वह उन्हें इग्नोर करती रही।

उसके अगले दिन जब आरुषि स्कूल पहुंची, तो उसने हाथ में एक गिफ्टपैक थामा हुआ था। जब मैम क्लास में पढ़ाने आईं, तो उसने मुसकराते हुए वह गिफ्टपैक उनको दे दिया।

मैम उसे तुरंत खोलकर देखने से अपने आपको नहीं रोक पाईं। सारी लड़कियां भी उत्सुकता से उधर ही देख रही थीं। उन चिढ़कौंधी लड़कियों के मन में तो कुछ अधिक ही जल्दी थी। आरुषि आखिर ऐसा क्या गिफ्ट लेकर आई है? और किसी को तो याद ही नहीं था कि आज मैम का जन्मदिन है।

जैसे ही मैम ने गिफ्टपैक के अंदर से निकली चीज देखी, तो उनका चेहरा एक बहुत खूबसूरत स्माइल से सज गया और उन्होंने आरुषि का माथा चूम लिया।

"अरे, यह क्या है! रंग-रंगीले पत्तों वाला कितना सुंदर पौधा है! और उससे भी ज्यादा सुंदर तो इसका

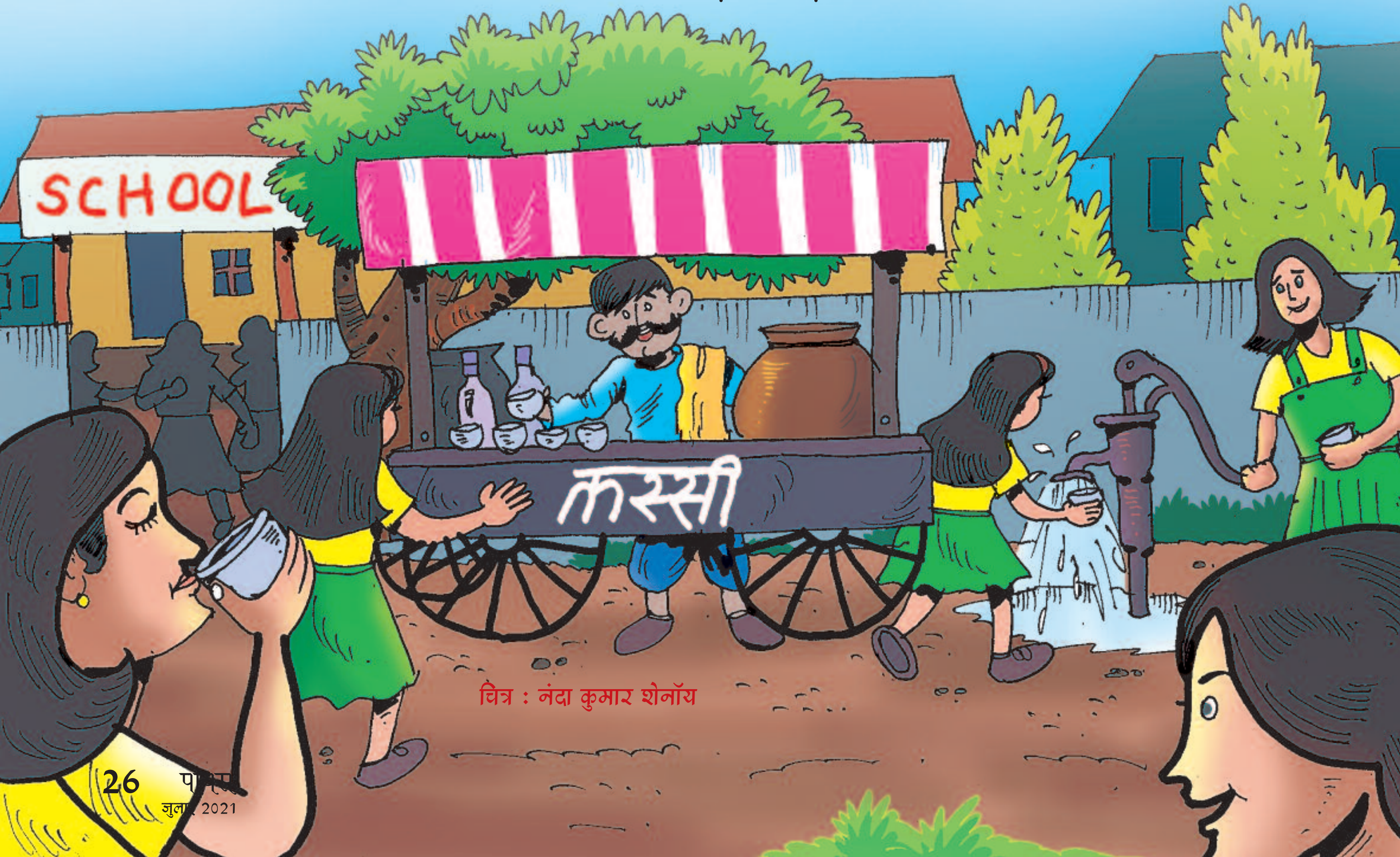

चित्र : नंदा कुमार शेनॉय

फ्लावरपॉट लग रहा है, जिसपर कितनी बढ़िया चित्रकारी की गई है।” बहुत-सी लड़कियां गिफ्ट देखते ही कुछ इस तरह से सोचने लगीं।

पर उन लड़कियों की नेता के दिमाग में तो वही कुल्हड़ घूम रहा था। उसे लगा कि यह वही कुल्हड़ है। उसके शरारती स्वभाव ने उसे मैम से यह बात बताने के लिए उकसाया, पर उसके दिमाग ने समझाया कि पहले आरुषि से पूछकर कंफर्म कर लो कि यह वही कुल्हड़ है।

इंटरवेल में जब उसने पूछा, तो आरुषि के ‘हां’ कहते ही वह मैम के कक्ष की तरफ चल पड़ी, लेकिन मैम से यह बात कहने की हिम्मत वह नहीं जुटा पाई। उसने देखा कि मैम ने अपनी मेज के एक कोने पर उस गुलदस्ते को रखा हुआ था और बहुत प्यार से उसे निहार रही थीं।

और छुट्टी के समय तो आरुषि यह देखकर हैरान रह गई कि अपनी नेता के साथ वे चिढ़कौंधी लड़कियां तथा और भी बहुत-सी लड़कियां उस लस्सी वाले की दुकान पर लस्सी पी रही हैं। फिर सबने हैंडपंप चला-चलाकर बारी-बारी से उन्हें धोया और कागज में लपेटकर अपने-अपने बैग में रख लिया।

वैसे तो यह कहानी यहीं पर खत्म होती लग रही है, लेकिन अगले दिन की बात बताना भी जरूरी है।

अगले दिन तो उन लड़कियों ने उस दुकान का कलेवर ही बदलवा दिया। जमकर उस लस्सी वाले को स्वच्छता का पाठ पढ़ाया और चार्ट पेपर पर लिखकर एक प्रार्थना उस दुकान के काउंटर पर चस्पा कर दी–

अपने लेखक को जानिए

रावेंद्रकुमार रवि : गणित शिक्षक। 1983 से निरंतर लेखन में सक्रिय। यूनिसेफ, एकलव्य व नेशनल बुक ट्रस्ट से पुस्तकें प्रकाशित। राष्ट्रपति द्वारा स्वर्णपदक प्राप्त। हरिकृष्ण देवसरे बालसाहित्य पुरस्कार से सम्मानित। मासिक ‘बालसाहित्य की धरती’ का संपादन।

लस्सी पीने वालों से एक प्रार्थना

आप जिस कुल्हड़ में लस्सी पीते हैं,
उसे धोकर अपने घर ले जाइए।
उस पर चित्रकारी कीजिए,
उसमें थोड़ी-सी मिट्टी भरकर
नन्हा-सा खूबसूरत पौधा लगाइए।
किसी को गिफ्ट कीजिए
या अपने घर पर ही सजाइए,
लेकिन हमारे स्कूल के आसपास
कृपा करके गंदगी मत फैलाइए।

प्रार्थना के ठीक नीचे, ठीक वैसे ही सात चित्र बने हुए थे, जैसा गिफ्ट आरुषि ने मैम को दिया था। ✪

अपने लेखक को जानिए

योगराज भाटिया : बैंकिंग सेवा में होते हुए साहित्य लेखन में रुचि। एक पुस्तक प्रकाशित। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में 75 से ज्यादा रचनाएं प्रकाशित। कई सम्मान भी मिले।

बारिश का आंनद

दादू संग धमाल मचाया
बारिश का आनंद उठाया,
फिर पानी में झटपट हमने
नाव चलाई, मन हर्षाया।

छत पर जाकर शोर मचाया
बादल घर पर उतरता पाया,
मन मेरा खुलकर मुस्काया
पौधों ने फिर गीत सुनाया।

इंद्रधनुष देखो तो छाया
सात रंगों से सज धज आया,
बच्चों के मन को है भाया
चमक उठी धरती की काया।

अपने लेखक को जानिए

डॉ. राकेश चक्र : भारत सरकार और उत्तर प्रदेश सरकार से कई बार सम्मानित एवं पुरस्कृत। नौ दर्जन से अधिक मौलिक पुस्तकें प्रकाशित। छह दर्जन बाल साहित्य में गद्य और पद्य की मौलिक पुस्तकें।

मौसम से नित करे ठिठोली

भोर हो गई कोयल बोली
मौसम से नित करे ठिठोली।
मीठे-मीठे राग सुनाए
जागो-जागो पूनम, मोली।।

शीतल मंद पवन है बहती
साँस-साँस से कुछ है कहती।
ताजी, गहरी साँस भरो तुम
पास तुम्हारे मैं हूँ रहती।

स्वस्थ सदा यदि रहना है तो
मन को अपने करो रँगोली।
भोर हो गई कोयल बोली
मौसम से नित करे ठिठोली।।

पूरब में सूरज की लाली
रोज बजाओ हँस-हँस ताली।
पौधे सदा लगाओ घर में,
बढ़ जाती इससे खुशहाली।

सुबह-सकारे जो हैं जगते
खुशियों से भर जाती झोली।
भोर हो गई कोयल बोली
मौसम से नित करे ठिठोली।।

जाग गए सब पंछी भइया।
जगने में ना लगे रुपइया।
जगकर पियो गुनगुना पानी,
कब्ज की मरती इससे नानी।।

योग करो कुछ, पढ़ो लिखो तुम
छुटकी, बड़की और मँझोली।
भोर हो गई कोयल बोली
मौसम से नित करे ठिठोली।।

मेढक

बारिश का मौसम आते ही चारों तरफ शाम होते ही टर्र-टर्र की आवाजें सुनाई देती हैं। ये आवाजें होती हैं हमारी, जो वर्षा के आगमन का संकेत देती हैं।

हम इस दुनिया में मनुष्यों से पहले आए थे। माना जाता है कि जुरासिक काल में भी हम मेढक हुआ करते थे। वैज्ञानिकों का मानना है कि हमने उछलने के लिए अपने पिछले पैरों को बड़ा इसी काल में किया था, ताकि खुद को डायनासोरों का आहार बनने से बचा सकें। इस तरह के हमारे पूर्वजों के फॉसिल्स एरिजोना में मिले हैं। यहीं पर डायनासोर तथा मांस खाने वाली मछलियों के फॉसिल्स भी मिले हैं। विज्ञानियों के अनुसार उसी युग में हमने अपना विकास पूरा कर लिया था। तब से अब तक हममें कोई बदलाव नहीं आया है।

जानते हो, हम अंटार्कटिका को छोड़कर पूरी दुनिया में पाए जाते हैं। हमारी संख्या वहां ज्यादा होती है, जहां पानी भरपूर मात्रा में होता है। वर्षा वनों में हमारी ज्यादातर प्रजातियां पाई जाती हैं। हमारा जन्म पानी में होता है। मेढकी बहुत से अंडे देती है। पर उनमें से बहुत कम ही बच्चे के रूप में जिंदा रह पाते हैं। इसका एक कारण यह है कि हम मेढक अंडों की देखभाल लापरवाही से करते हैं। सारे अंडे एक प्रकार की जैली के अंदर होते हैं, जिस कारण उनका अन्य जल प्राणियों से बचाव हो जाता है। करीब तीन हफ्ते बाद हम जैली के खोल से बाहर आते हैं, तो हमारी लंबी पूंछ होती है। करीब अगले पांच हफ्तों में हम मेढक का रूप धारण करने लगते हैं। हमारी टांगें नजर आने लगती हैं। जैसे-जैसे हम बड़े होते हैं, हमारी पूंछें गायब हो जाती हैं।

हमारा भोजन मुख्य रूप से कीट-पतंगे ही होते हैं। हम में जो विशालकाय होते हैं, वे छोटे सांप, चूहे, कछुए के बच्चे और छोटे मेढकों को भी अपना आहार बनाने से नहीं चूकते। हमारे ऐसे विशालकाय मेढक भाई अपनी पूर्ण अवस्था में आने पर करीब छह से नौ इंच तक लंबे हो जाते हैं। सबसे विशालकाय हमारे मेढक भाई कैमरून में पाए जाते हैं। पर हममें से कुछ इतने छोटे होते हैं कि बड़े होने पर भी 10 मिलीमीटर तक ही पहुंच पाते हैं। इस तरह के हमारे भाई ब्राजील और क्यूबा में मिलते हैं। हमारी आयु ज्यादा नहीं होती। हम चार से लेकर पंद्रह वर्षों तक ही जीवित रहते हैं।

हमारी करीब 5250 प्रजातियां पाई गई हैं। हमारी त्वचा ढीली होती है, क्योंकि हमारे शरीर में त्वचा को जोड़कर रखने वाले टिश्यू नहीं होते।

कुछ साथियों की त्वचा चमकीली, तो कुछ की चिकनी और कुछ की खुरदरी होती है। हमारे जीवन में त्वचा की बहुत अहमियत है। कारण यह है कि हमारे शरीर में ऑक्सीजन त्वचा के माध्यम से ही पहुंचती है। हम त्वचा के माध्यम से ही सांस लेते हैं। हम पानी नहीं पीते हैं, बल्कि त्वचा के माध्यम से नमी को शरीर में पहुंचाते हैं।

हमारे कई प्रकार होते हैं और हर मौसम के अनुकूल हम खुद को ढाल लेते हैं। ऑस्ट्रेलिया के रेगिस्तानी इलाकों में भी हम होते हैं, जो नमी को प्राप्त करने के लिए सुरंग बनाकर गहराई में उतर जाते हैं। बारिश होने पर ही हम बाहर निकलते हैं। इसके अलावा ठंडे इलाकों में भी हम बड़ी शान से जीवित रहते हैं। ज्यादा ठंड होने पर हमारे शरीर भी ठंडे पड़ने लगते हैं और हमारा चलना-फिरना दूभर हो जाता है। ऐसी स्थिति से बचने के लिए हम पेड़ों के पत्तों की ओट में छिपकर रहने लगते हैं और खुद को जमने से बचाते हैं। आर्कटिक इलाके में रहने वाले हमारे साथी तो बड़े अनोखे तरीके से अपना जीवन बचाते हैं। जब वहां ठंड बहुत ज्यादा बढ़ जाती है, तो हम समाधि ले लेते हैं। हम पूरी तरह खुद को जमा लेते हैं, पर हमारे शरीर का ग्लूकोज सारे शरीर में खून के प्रवाह को बनाए रखता है और हमें मरने नहीं देता। ग्लूकोज हमारे शरीर को पूरी तरह से जमने नहीं देता। इसलिए हमारी सांस चलती रहती है और हम जीवित रहते हैं। जैसे ही मौसम हमारे अनुकूल होता है, हम खुद को इस समाधि से बाहर निकाल लेते हैं।

हमारे ऐसे मेढक भाई 'वुड फ्रॉग' कहलाते हैं। इनकी खुद को जीवित रखने की इस कला ने वैज्ञानिकों को सोचने पर मजबूर कर दिया है। उनकी सोच है कि यदि वुड फ्रॉग के स्टाइल को अपना लिया जाए, तो मानव अंगों को लंबे समय तक किसी को लगाने के लिए संभालकर रखा जा सकेगा।

हम चलने के बदले उछलते हैं, क्योंकि हमारे अगले पैरों के मुकाबले में पिछले पैर ज्यादा बड़े होते हैं। माना जाता है कि हम अपनी लंबाई से करीब बीस गुना ज्यादा लंबी छलांग लगा सकते हैं।

हम मेढक मनुष्यों के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। हम ऐसे कीटों का सफाया कर देते हैं, जो पनप जाएं, तो मनुष्यों का जीना मुश्किल हो जाए।

हमारे दुश्मन सांप, छिपकली, चिड़िया, चमगादड़ तथा मछलियां आदि हैं। पर अभी तो हमारा सबसे बड़ा दुश्मन प्रदूषण है। कुछ देशों में हमें तुम मनुष्यों ने अपने आहार व औषधि में शामिल कर लिया है। इसलिए हमारा बड़ी तेजी से शिकार हो रहा है। ✪
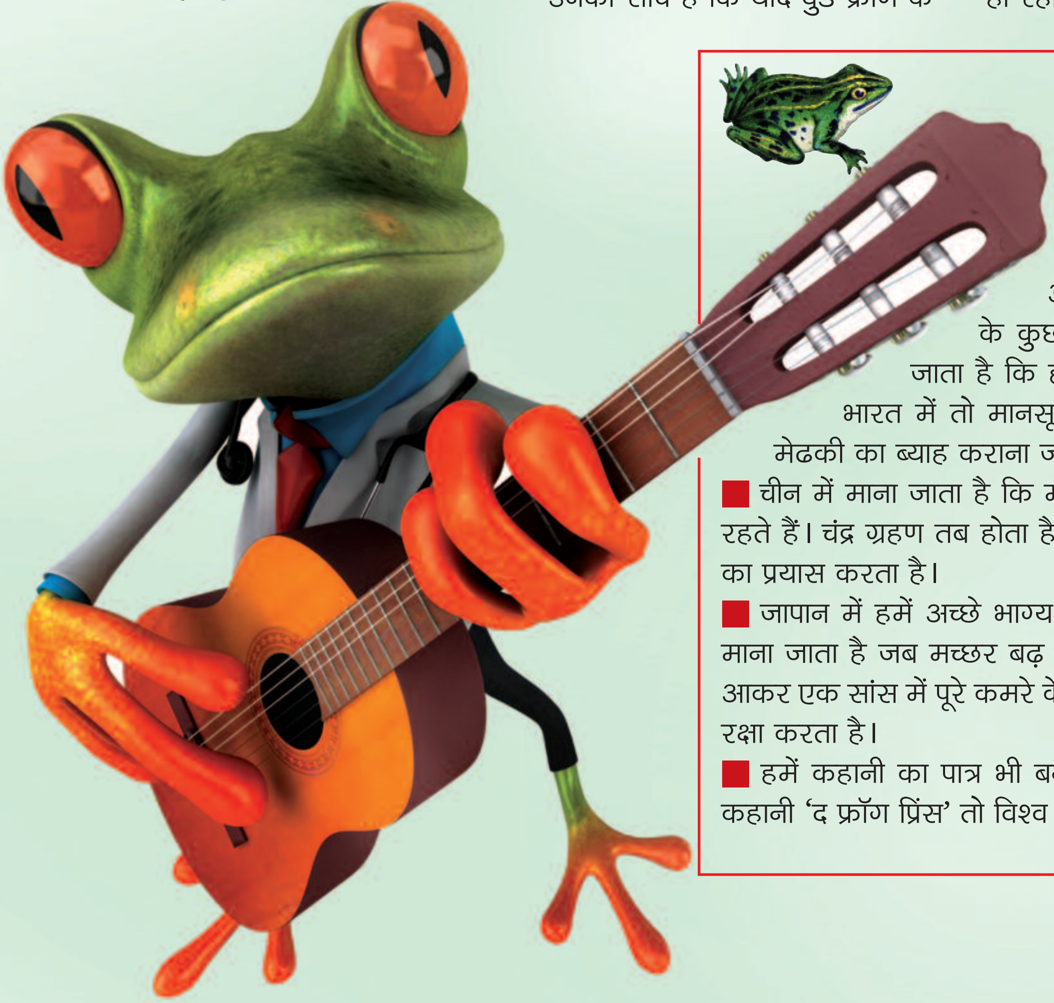
कुछ रोचक तथ्य

- पानी का प्राणी होने के कारण हमें अकसर बारिश से जोड़ा जाता है। ऑस्ट्रेलिया और अमेरिका के कुछ भागों में आज तक माना जाता है कि हम ही बरसात को लाते हैं। भारत में तो मानसून न आने पर हम मेढक-मेढकी का ब्याह कराना जग प्रसिद्ध है।
- चीन में माना जाता है कि मनुष्य के बदले हम चांद पर रहते हैं। चंद्र ग्रहण तब होता है, जब हम चांद को निगलने का प्रयास करता है।
- जापान में हमें अच्छे भाग्य की निशानी मानते हैं। वहां माना जाता है जब मच्छर बढ़ जाते हैं, तो विकराल मेढक आकर एक सांस में पूरे कमरे के मच्छरों को मारकर उनकी रक्षा करता है।
- हमें कहानी का पात्र भी बनाया गया है। ग्रिम बंधु की कहानी 'द फ्रॉग प्रिंस' तो विश्व प्रसिद्ध है।

टपक सिंचाई

ब्लैकी खरगोश और उसकी पत्नी वाइटी हरित वन में रहते थे। वे दोनों अपने बिल के बाहर वाले खेत में गाजर, मटर और स्ट्राबेरी उगाते थे। उन्होंने अपने आंगन में हरी दूब भी लगाई थी लेकिन सूखा पड़ने से कई बार उनकी मेहनत बेकार हो जाती थी।

इस बीच किसी काम से ब्लैकी नीलगिरि के जंगलों में गया। तमिलनाडु में नीलगिरी की हरी-भरी पहाड़ियों पर उसने देखा कि नीलगिरि वाले कृषि-बागवानी का काम वैज्ञानिक तरीके से कर रहे हैं। वे जानते थे, जल ही जीवन है और इसके बिना जीवन संभव नहीं है। सभी को पानी का संरक्षण करना चाहिए। यह पानी अर्थात सिंचाई ही फसलों की जान है। इसलिए वहां के पशु-पक्षी 'ड्रिप इरीगेशन सिस्टम' यानी टपक सिंचाई विधि से साग-सब्जी, कंद-मूल और फल-फूल का उत्पादन करते थे।

अपने घर वापस लौटने पर ब्लैकी ने वाइटी से कहा, "मैं नीलगिरि इलाके में टपक सिंचाई विधि देखकर आया हूं। इस विधि में कम पानी से अच्छी उपज मिल जाती है। इस वर्ष भी बरसात का क्या भरोसा? बारिश न होने पर टपक सिंचाई से अपनी फसलें भी बढ़िया पैदावार देंगी।"

"हुंह, ऐसा कैसे हो सकता है? फसलों को समय-समय पर पानी चाहिए।" वाइटी अपनी लाल-लाल और गोल-गोल आंखें मटकाते हुए बोली।

"इस विधि में किसी ऊंचे स्थान में बने पानी के टैंक से लोहे के पाइप द्वारा खेतों तक पानी ले जाते हैं, फिर

चित्र : रितेश पाण्डेय

उस पाइप में प्लास्टिक का पाइप जोड़ दिया जाता है। पौधों की दूरी के हिसाब से पाइप में जगह-जगह ड्रिपर लगते हैं। पानी चलते ही ड्रिपर से बूंद-बूंद कर पानी टपकने लगता है। यह बढ़िया तरीका है।"

यह सुनकर भी वाइटी को विश्वास नहीं हुआ। उसने कहा, "बूंद-बूंद पानी टपकाकर? तब तो हो गई काश्तकारी।"

"क्यों नहीं होगी? तुम देखती जाओ। इसमें पानी कम लगता है। टप-टप करती हुई जल की बूंदें जड़ों में गिरती हैं, जिससे मिट्टी में देर तक नमी रहती है और पानी की एक बूंद भी बर्बाद नहीं होती। हम पोषक तत्वों के घोल को भी इस पानी में मिलाकर पौधे की जड़ों तक पहुंचा सकते हैं।"

"चलो, मान ली तुम्हारी बात। अब यह बताओ मुझे क्या करना है?"

"हम अभी टैंक, पाइप और ड्रिपर जैसा कीमती सामान अपने खेत में नहीं लगा सकते हैं, तब तक हमें कुछ सस्ता जुगाड़ करना होगा। तुम खेत में खाद डालकर उसमें गाजर और मटर के बीज छिड़क देना।" इतना कहकर ब्लैकी बिल से बाहर निकला और खेत की ओर नजर डालते हुए बाहर चला गया।

कुछ ही दूरी पर ब्राउनी गिलहरी रहती थी। वह हमेशा इधर-उधर भागती हुई या पेड़ पर चढ़ती-उतरती हुई ही दिखाई देती थी। नटखट ब्राउनी मिट्टी के बर्तन बनाने में माहिर थी। वह चाक चलाकर मिट्टी के बर्तन बनाती थी। ब्लैकी खरगोश मिट्टी के घड़े खरीदने की सोच रहा था। उसने वहां पर तैयार मिट्टी के घड़ों को उलट-पलटकर देखा, उनकी कीमत पूछी और बातों-बातों में अपनी योजना भी बताई।

ब्राउनी अपनी झबरीली पूंछ हिलाते हुए बोली, "तुम्हारी योजना तो अच्छी है। लेकिन इतने बड़े घड़ों में पानी भरने पर उनका वजन बढ़ जाएगा और भारी घड़ों को प्रत्येक पौधे के पास रखना मुश्किल होगा। फिर इतने मंहगे घड़ों की टूट-फूट का खतरा अलग रहेगा। इसलिए कोई सस्ता तरीका सोचो।"

दूसरे दिन दोपहर के भोजन के बाद ब्लैकी और वाइटी आराम कर रहे थे। ब्लैकी को कोई उपाय नहीं सूझ रहा था। तभी वाइटी के दिमाग में एक विचार आया और उसने कहा, "अस्पताल में मरीजों को ड्रिप सेट के माध्यम से बूंद-बूंद कर ग्लूकोज चढ़ाया जाता है। सेलाइन की इन खाली बोतलों में पानी भरकर पौधों की जड़ में टपकाया जाए तो?"

वाइटी की बात में वजन था। ब्लैकी समझ गया कि यदि ग्लूकोज के घोल भरी बोतल एक मरते हुए व्यक्ति की जान बचा सकती है, तो उसी ग्लूकोज की खाली बोतल और ड्रिप पौधों का जीवन भी बचा सकती है। अस्पताल में एक दिन में कई मरीजों को ग्लूकोज चढ़ता है और खाली बोतलों का ढेर लग जाता है। ब्लैकी ऐसी खाली बोतलों को मांगने डाक्टर के पास पहुंचा।

डाक्टर एलफेंटो हाथी ने ब्लैकी को समझाया, "ग्लूकोज की खाली बोतलें और ड्रिप दूसरी बार उपयोग में नहीं लाई जाती हैं क्योंकि इनसे संक्रमण का खतरा बना रहता है।"

ब्लैकी निराश अवश्य हुआ, किंतु उसने अभी आशा नहीं छोड़ी। अस्पताल से बाहर निकलकर घर की तरफ चल दिया।

रास्ते में उसे पीने के पानी की कई खाली बोतलें इधर-उधर बिखरी दिखीं। इस बार उसके दिमाग में नया विचार आया। यदि ऐसी बोतल में पानी भर दें और उसके ढक्कन में बारीक छेद कर दिया जाए, तो इससे भी काम चल सकता है।

वाइटी और ब्लैकी ने अगली सुबह से एक-एक बोरा पकड़ा और इधर-उधर गिरी-पड़ी बोतलों को इकट्ठा कर अपने खेत में लाते रहे। इससे दो फायदे हुए। एक तरफ जगह-जगह बिखरी हुई बोतलों का कचरा साफ हो गया, दूसरा इस काम में एक रुपया भी खर्च नहीं हुआ।

उन्होंने इकट्ठा की गई सभी बोतलों के ढक्कन में बारीक छेद बनाए। इन सब कार्यों में उन्हें पांच-छह दिन लग गए। तब तक खेतों में नन्हे-नन्हे पौधे उग आए। उन्हें भी पानी की जरूरत थी। सभी पौधों के पास एक-एक डंडा गाड़ दिया। अब बोतलों में पानी भरकर उन्हें उलटा कर डंडे में बांध दिया। इस तरह प्रत्येक बोतल से पानी की बूंद टप-टप कर टपकने लगी।

समय बीता, तो टपक सिंचाई का असर दिखने लगा। नन्हे पौधे बड़े हुए और मटर और गाजर की फसलें लहलहाने लगीं। जाड़ों की गुनगुनी धूप में ब्लैकी और वाइटी कभी चपर-चपर मटर खाते, तो कभी लाल-लाल गाजर कुतरकर मजा लेते। ✪

अपने लेखक को जानिए

भगवत प्रसाद पाण्डेय : प्रकृति, संस्कृति और परंपराओं से खास लगाव। उत्तराखण्ड सरकार के राजस्व विभाग में वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी। विगत 35 वर्ष से लेखन। बाल साहित्य के साथ ही विभिन्न आलेख, कहानी, व्यंग्य और कविताएं प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित।

बाढ़ और तूफान

अपने लेखक को जानिए

वसीम अहमद नगरामी : अध्यापन के साथ-साथ विगत तीन दशकों से देश के प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में कविता, कहानी, व्यंग्य, पहेलियों आदि का प्रकाशन। नंदन, बच्चों का देश, बाल भास्कर, बालभूमि, बालवाणी, बाल भारती आदि में लेखन। एक पुस्तक प्रकाशित।

बाढ़ और तूफान का मौसम।
नदिया-ताल उफान का मौसम।।
फसलें तक जलमग्न हो गईं,
फिर आया नुकसान का मौसम।

संकट में है सबकी जान,
गिरी झोंपड़ी-ढहे मकान।
कच्चे घर इस तरह बह गए,
शेष रह गए सिर्फ निशान।

बादल कड़के-बिजली चमके,
ख़ूब हो रही बारिश जमके।
जैसे-जैसे तेज़ हो बारिश,
आसमान में कौंधा गमके।

अन्दर-बाहर कहीं न कल है,
जिधर देखिए जल ही जल है।
घर-आंगन तक हैं उफनाए,
पर बच्चों के लिए शगल है।

झूम रहे हैं-नाच रहे हैं,
कविता-कहानी बांच रहे हैं।
बाढ़ और तूफान से हट कर,
पजल-पहेली जांच रहे हैं।

चाय-पकौड़े की है ख़्वाहिश,
दादी से करते फरमाइश।
तनिक न नुकुर हो जाए तो,
दादा से करते अजमाइश।

बैगन की शादी

बैगन की शादी है आज।
सिर में है बैगन के ताज ।
लाल पजामा पहने गाजर।
सज धज बैठा लाल टमाटर।

आलू अरबी चले बाराती
मूली चली है गाल फुलाती।
कद्दू ढोल बजाता डम-डम।
लौकी चाची नाचे छम-छम।

गोभी के संग चला भसिण्डा
देखो नाच रहा है टिण्डा।
मशरुम चला है छाता तान।
तुरई ने गाया मंगल गान।

दुल्हन बनी है भिण्डी रानी।
मिर्ची उसकी सखी सयानी।
लाई, पालक, ओगल, चौलाई।
सभी चले हैं देन बधाई।

अपने लेखक को जानिए

तारा दत्त जोशी : रा .इ .का हरिपुरा हरसान में शिक्षक। बाल विज्ञान कहानी, बाल विज्ञान कविता, व विज्ञान लेख। देवपुत्र, बालप्रहरी, प्रेरणा में बाल कहानी व कविताएं प्रकाशित। विज्ञान पत्रिकाओं में विज्ञान लेख विज्ञान कविताएं प्रकाशित ।

चित्र : इंदिरा

अनोखी मित्रता

मधु गोयल :
स्वतंत्र लेखिका और कहानीकार

मौसम बहुत सुहाना था, पक्षी चहचहा रहे थे। चारों ओर हरियाली छाई हुई थी। मोनी चिड़िया दाना चुग रही थी। कुछ ही दूरी पर नीटू कीड़ा कुछ परेशान सा इधर-उधर देख रहा था। वह अपने मन में कुछ सोचता हुआ, रेंगते-रेंगते मोनी चिड़िया के पास पहुंचा और कहा, "चिड़िया रानी, क्या नाम है आपका?"

"क्या करोगे मेरा नाम जानकर?" मोनी चिड़िया ने कहा।

"मैं तुमसे दोस्ती करना चाहता हूं, चिड़िया रानी, क्या तुम मुझसे दोस्ती करोगी?"

"क्या?" मोनी चिड़िया हैरान होकर बोली, "ये कैसा सवाल है? दोस्ती! मैं... और तुमसे? अरे, कैसी बात कर रहे हो? यह बात तुम्हारे मन में आई कैसे? मेरा तुम्हारा क्या साथ? तुम जमीन के कीट और मैं उड़ने वाली चिड़िया। मैं ऊपर रहती हूं और तुम नीचे। सच तो यह है कि तुम हमारे भोजन हो। फिर मैं तुम से कैसे दोस्ती कर सकती हूं। बोलो?"

नीटू कीड़े ने कहा, "चिड़िया रानी, आप ठीक कह रही हो, आप उड़ने वाली पक्षी हो और मैं जमीन का कीट, लेकिन मुझे अपना जीवन अच्छा नहीं लगता, मुझे सब घृणा से देख, कीड़ा-कीड़ा कहकर मुंह बनाने लगते हैं और झाड़ू से बुहारकर इधर-उधर फेंक देते हैं। झाड़ू की सीकें जब मेरे शरीर पर चुभती हैं, तो मैं घंटों बिलबिलाता रहता हूं, किसी के हृदय में मेरे लिए दर्द नहीं। मैं बड़ी मुश्किल से अपने आप को संभाल पाता हूं। संभलकर आगे बढ़ता ही हूं, कि फिर कोई मुझे इधर-उधर फेंक देता है। बहुत तकलीफ होती है मुझे।"

"ओह! मेरा नाम मोनी है, बोलो, मैं तुम्हारे लिए क्या कर सकती हूं? मुझसे क्या चाहते हो?"

"मोनी चिड़िया, मैं अपने इस जीवन से खुश नहीं हूं। मैं तुम्हारी शरण में आकर अपना जीवन संवारना चाहता हूं।"

"वो कैसे? तुम सिर्फ जमीन पर रेंग सकते हो और मैं उड़ान भरती हूं। जरा सोचो तो, यह कैसे संभव होगा?"

"तुम मेरा साथ दोगी, तो यह संभव हो सकता है। शायद तुम्हारी शरण में रहकर मेरा भी कुछ अच्छा हो जाए? क्या तुम मुझे अपने साथ लेकर उड़ान भरोगी? अगर नहीं, तो मुझे खाकर मेरी कहानी खत्म कर दो।"

मोनी चिड़िया कीड़े की व्यथा के बारे में सोचने लगी, 'बेचारे कीड़े यहीं पैदा होते हैं और एक दिन ऐसे ही दुनिया से चले जाते हैं।'

उसके मन में नीटू कीड़े के प्रति दया आ गई। कुछ सोचती हुई आगे बढ़ी और कीड़े से कहा,

"मैं तुमसे दोस्ती करती हूं। तुम मुझे मोनी कह सकते हो और मैं तुम्हें नीटू कहूंगी। मैं तुम्हें अपने साथ अपने घोंसले में ले चलती हूं।"

मोनी चिड़िया, नीटू कीड़े को अपनी चोंच में दबाकर उड़ी। नीटू कीड़ा ऊंचाई से दुनिया देखकर बहुत खुश होकर बोला "मोनी आप बहुत ही अच्छी हैं। आपके साथ रहकर मेरा जीवन संवर जाएगा।"

मोनी नीटू को लेकर उड़ तो गई, लेकिन डर बना रहा, कहीं नीटू उसकी चोंच से निकल न जाए? सारे रास्ते मोनी चुप रही, चीं-चीं भी नहीं कर पाई। वह नीटू को अपने घोंसले में लेकर पहुंची और एक उचित स्थान देखकर उसे उतार दिया।

चिड़िया के बच्चे नीटू कीड़े को देखकर खुश हुए, "मां आज आप जिंदा खाना लेकर आई हो?"

"नहीं बच्चों, यह खाना नहीं, तुम्हारे कीट अंकल हैं। इनका नाम नीटू है, और आज से ये हमारे साथ ही रहेंगे। इनको परेशान मत करना, इनकी हर तरह से मदद कर, अच्छे से ख्याल रखना।"

बच्चे एक नए साथी को, जो उनसे बिल्कुल भी मैच नहीं कर रहा था, पाकर सोच में पड़ गए ।

मां के कहने पर, बच्चों ने नए मेहमान को अपना घोंसला दिखाया। घोंसला देखकर नीटू बहुत खुश होकर बोला, "मेरा तो कोई घर ही नहीं, जब चाहा, लोग मुझे इधर-उधर फेंक देते हैं।"

बच्चे प्यार से बोले, "अंकल, आप इतने परेशान क्यों हैं? आप खुशी-खुशी हमारे पास रहिए। आपको यहां हम परेशान नहीं करेंगे।"

मोनी चिड़िया के संपर्क में आकर नीटू खुश रहने लगा, उसको गंदगी से भी छुटकारा मिल गया।

पर अब एक परेशानी खड़ी हो गई। अब चाहकर भी मोनी जब चाहे, तब कहीं भी नहीं जा पाती थी। नीटू को घोंसले में अकेला छोड़ना उसे अच्छा नहीं लगता था, पर उसे हर जगह साथ ले चलना भी संभव न था। इसी तरह कुछ दिन बीते।

एक दिन घूमने के इरादे से मोनी चिड़िया पूरे परिवार के साथ निकल पड़ी। मोनी ने नीटू को भी चोंच में ले रखा था। रास्ते में बच्चों के किसी सवाल का जवाब देने के लिए मोनी ने मुंह खोला, तो उसकी चोंच से नीटू छूट गया और एक फूलों की टोकरी में जा गिरा। मोनी चीं-चीं कर नीटू को ढूंढ़ती हुई उसके पास पहुंचकर बोली, "माफ करना नीटू भाई, पता नहीं कैसे आप मेरी चोंच से छूट गए? मुझे इसका बहुत दुख है। मैंने तुम्हें ठीक से रखने का वचन दिया था, पर पता नहीं यह कैसे हुआ?"

"तुम परेशान मत हो मोनी, तुमने तो मेरे लिए बहुत कुछ किया है। अरे, तुमने तो मेरे जीवन में खुशियां भर दीं। तुम्हारी वजह से ही तो मैं यहां तक पहुंच पाया हूं, नहीं तो मैं कहां होता, सोच कर डर लगता है।"

"चलो, मैं तुम्हें यहां से निकाल लेती हूं। देखो, एक पुजारी जी इस टोकरी से शायद फूल ही लेने आ रहे हैं।" मोनी घबराकर बोली।

"नहीं। मैं नहीं चलूंगा। जीवन का आनंद मुझे तुम्हारे साथ ही मिला है। पर यह भी सच है कि मेरे कारण तुम बंध गई हो। इस तरह मैं तो शायद खुश रहूं, पर तुम्हारी जिंदगी में ठहराव आ जाएगा। तुम जाओ। देखता हूं, इस फूलों की टोकरी के साथ मैं कहां पहुंचता हूं? तुम जाओ बहन, हमारा यहीं तक साथ था।"

मोनी और बच्चे नीटू को छोड़ना नहीं चाहते थे, पर उसकी जिद के आगे उन्हें झुकना पड़ा।

नीटू से विदा लेकर मोनी बच्चों के साथ उड़ चली, पर नीटू इस बार उसकी चोंच में नहीं, दिल में था।

11 जुलाई

वर्ल्ड पोपुलेशन डे

संयुक्त राष्ट्र की ओर से हर वर्ष 11 जुलाई को विश्व जनसंख्या दिवस मनाया जाता है। इसका उद्देश्य जनसंख्या सम्बंधित समस्याओं पर दुनिया को सचेत करना है। है। इसका आयोजन पहली बार 1989 में हुआ था। दरअसल 1987 में दुनिया की आबादी पांच अरब लोगों तक पहुंच गई थी। तब यह महसूस किया गया कि जनसंख्या के मुद्दों पर लोगों को जागरूक करना जरूरी है।

ये दिवस मनाएं ही जाते हैं लोगों को जागरूक करने के लिए। और यह मानना होगा कि इनके खूब फायदे होते हैं। उदाहरण के लिए जहां 1970 के दशक में एक महिला 4 से 5 बच्चों को जन्म देती थी, वहीं जागरुकता के कारण यह औसत आज गिरकर दो से तीन बच्चों तक पहुंच गया है।

आज दुनिया के सामने अनेक समस्याएं हैं। कुछ देश भुखमरी से परेशान हैं, तो कुछ देश अपनी बदहाल आर्थिक स्थिति से परेशान। वैसे आजकल तो दुनिया के तमाम देश कोरोना वायरस से भी परेशान हैं। अगर ध्यान से देखें, तो इन सबकी जड़ में मनुष्यों की अत्याधिक जनसंख्या है। यहां तक कि अगर विश्व की आबादी कम होती, तो कोरोना से भी बेहतर ढंग से निपटा जा सकता था।

इसको ऐसे देखें, आजकल कोरोना के समय में नारा दिया जाता है-दो गज दूरी, है जरूरी। अगर इसका सचमुच पालन किया जाए, तो विश्व जनसंख्या के आधे लोगों को इस धरती पर रहने के लिए जगह नहीं मिलेगी।

हजारों साल लगे थे, इस धरती पर मनुष्यों की जनसंख्या एक अरब तक पहुंचने के लिए। पर...,पर..., पर, एक अरब से सात अरब तक छलांग लगाने में हमें केवल दो सौ साल लगे। 2011 तक हमारी जनसंख्या सात अरब पहुंच चुकी थी। 2021 तक और 70 करोड़ लोग इनमें जुड़ चुके थे और जनसंख्या आज 7.7 अरब तक पहुंच गई है। यही स्थिति रही, तो 2050 तक पृथ्वी पर जनसंख्या 9.7 अरब पहुंच जाएगी और इस सदी के अंत तक करीब 11 अरब लोग इस धरती पर अन्न और पानी के लिए लड़ रहे होंगे।

इटली में समुद्री रास्ते से चोरी-छिपे दाखिल होने के प्रयास में शरणार्थियों का जहाज डूबते हुए

महिलाएं सबसे प्रभावित होती हैं

यह सब जानते हैं, जनसंख्या जितनी तेजी से बढ़ती है, देश या कहें, दुनिया का विकास ही रुकता है। ज्यादा जनसंख्या अशिक्षा और भुखमरी को निमंत्रण देती है। अशिक्षा की मार महिलाओं पर ज्यादा पड़ती है। उन्हें पढ़ाई-लिखाई से वंचित रखा जाता है। उनके प्रति हिंसा बढ़ जाती है। ये हिंसा शारीरिक और मानसिक या अन्य तरह की भी होती हैं। जनसंख्या को सीमित करके या उसकी अनाप-शनाप बढ़ोत्तरी पर अंकुश लगाकर हम सबसे ज्यादा उपकार इस पृथ्वी और महिलाओं पर करेंगे।

रहने के स्थान का संकट

यह जानकर तुम्हें आश्चर्य होगा कि धरती की जमीन में सिर्फ एक प्रतिशत जमीन शहरी क्षेत्र में है। परंतु संसार की आधी से ज्यादा आबादी इन्हीं एक प्रतिशत शहरी क्षेत्रों में रहती है। माना जाता है कि ग्रामीण क्षेत्र के लोग पूरी दुनिया का पेट खेती करके भरते हैं। पर अब यहां भी खतरे का अलार्म बज चुका है। 2007 का साल दुनिया में पहला ऐसा साल था, जब शहरी क्षेत्रों की जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों से ज्यादा दर्ज की गई। इससे भी ज्यादा बुरी बात यह है कि 2050 तक विश्व की जनसंख्या में से 66 प्रतिशत लोग शहरों में रहने लगेंगे। छोटे घरों को तोड़कर हाईराइज बिल्डिंग्स ही बनेंगे, जिनके अलग खतरे हैं। अब सोचो, तब शहरों के साथ इस दुनिया की स्थित कितनी बदतर हो जाएगी।

शहरों में आबादी के बढ़ने के साइड एफेक्ट

सबको अपने सपने पूरे करने का हक है। पर इसके दूरगामी परिणाम बहुत भयावह होंगे।

पृथ्वी के प्रदूषण से वैसे ही सागर कराह रहे हैं। अभी कुछ दिनों पहले सागर की तीसरी सबसे गहरी जगह से प्लास्टिक का कचरा निकाला गया है। अब जगह की कमी को रोमांच का नाम देते हुए सागर में होटल बनाएं जा रहे हैं। सागर में शहर बसाने की तैयारियां भी चल रही हैं। इन सबका सागर पर क्या असर पड़ेगा, क्या तुम सोच सकते हो?

जब जनशक्ति शहर में ज्यादा होगी, तो निश्चित है, खेती करने वाले कम होंगे, तब इसका असर अन्न भंडार पड़ पड़ेगा और अन्न की कमी भी होगी और कीमतें भी बढ़ेंगी।

बढ़ती आबादी के कारण देश की सीमाएं खत्म सी होने लगेंगी। जिस देश में अच्छा अवसर दिखेगा, लोग उसमें कानून के अनुसार जाना चाहेंगे और मौका नहीं मिला, तो गैरकानूनी तरीके से घुसने का प्रयास करेंगे। जैसे मैक्सिको की सीमा से लोग अमेरिका में या बांग्लादेश से भारत में घुसते रहते हैं।

बढ़ती आबादी लोगों की तरक्की को रोकेगी, देशों की आर्थिक प्रगति को भी धीमा कर देगी। न ढंग से रह पाएंगे, न शिक्षा मिलेगी। मतलब समस्याएं बढ़ती जाएंगी।

इसलिए बढ़ती आबादी की समस्या किसी खास देश की समस्या न रहकर वैश्विक समस्या बन गई है।

जितनी जल्दी हम इस समस्या की गंभीरता को समझेंगे, हमारे लिए अच्छा होगा।

शिक्षा और जागरुकता के द्वारा ही इस समस्या को दूर कर सकते हैं। जनसंख्या विस्फोट की समस्या से एशिया और अफ्रीका के देश ज्यादा प्रभावित हैं, क्योंकि यहां निरक्षरता और गरीबी जयादा है।

कई देशों ने इस समस्या की गंभीरता को समझते हुए ऐसे उपाय किए कि उन्होंने जनसंख्या वृद्धि को नकारात्मक करने में भी सफलता पाई है। जापान सहित कई देश इसके उदाहरण हैं।

अमेरिका में गैरकानूनी तरीके से घुसने का प्रयास करती एक मैक्सिकन महिला अपने बच्चों के साथ

इंडनवन में लॉकडाउन

राजा शेरसिंह को सूचना मिली कि पड़ोसी वन चनवन में कोरोना नामक एक वायरस ने जीव-जंतुओं को संक्रमित करके मौत के कगार पर पहुंचा दिया है। यह बीमारी चनवन से फैलनी शुरू हुई थी। इस दौरान चनवन में गए अन्य वन के जीव-जंतु इससे ग्रस्त हो गए। अपने अपने वनों में लौटने पर उनके वनों में भी यह बीमारी तेजी से फैल गई।

यह देखकर इंडनवन के राजा शेरसिंह ने सख्त कदम उठाने का निर्णय लिया। चनवन और अमवन में तो जीव-जंतु इस संक्रमण से इतनी तेजी से मर रहे थे कि वहां के राजाओं ने हार मान ली। अमवन को सभी वनों में बेहद शक्तिशाली माना जाता था। इंडनवन में भी कुछ जीव-जंतु इस बीमारी का शिकार हो गए ।

राजा शेरसिंह ने अपने चतुर गृह मंत्री खरगोश से विचार-विमर्श कर डॉक्टरों एवं एक्सपर्ट्स से इस बीमारी के बारे में जाना। डॉक्टरों ने बताया कि इस वायरस का संबंध एक ऐसे परिवार से है, जिसके संक्रमण में जुकाम से लेकर सांस लेने में दिक्कत होती है। तेज बुखार होता है। एक्सपर्ट्स ने बताया कि यह बीमारी हाथ और गले मिलने, लोगों के एक स्थान पर अधिक इकट्ठा होने से तेजी से फैलती है। इसलिए सभी जीव-जंतुओं के लिए एक गाइडलाइन जारी कर दी जाए कि कोई भी जीव-जंतु मास्क पहने बिना बाहर न निकले, आवश्यक कार्य होने पर ही अपने अपने घरों से बाहर निकलें। इसके साथ ही कुछ दिनों तक पूरे वन में लॉकडाउन कर दिया जाए। इस दौरान स्कूल, कॉलेज, सरकारी एवं प्राइवेट सभी ऑफिस पूरी तरह बंद कर दिए जाएं। बसें, ट्रेन और हवाई यात्राओं पर पूरी तरह लगाम लगा दी जाए ताकि अन्य वनों के प्राणी यहां न आ पाएं । सभी तरह के समारोह पर भी रोक लगा दी जाए। ऑफिस का काम घरों से किया जाए और विद्यार्थियों को भी घर पर ही ऑनलाइन पढ़ाया जाए।

इस वायरस से बचने का सबसे आसान उपाय केवल अपने घर में रहना है। खुद को पूरी तरह स्वच्छ रखना है और अपने हाथों को बार-बार सैनिटाइज करना है।

तुरंत ही राजा शेरसिंह ने टीवी के

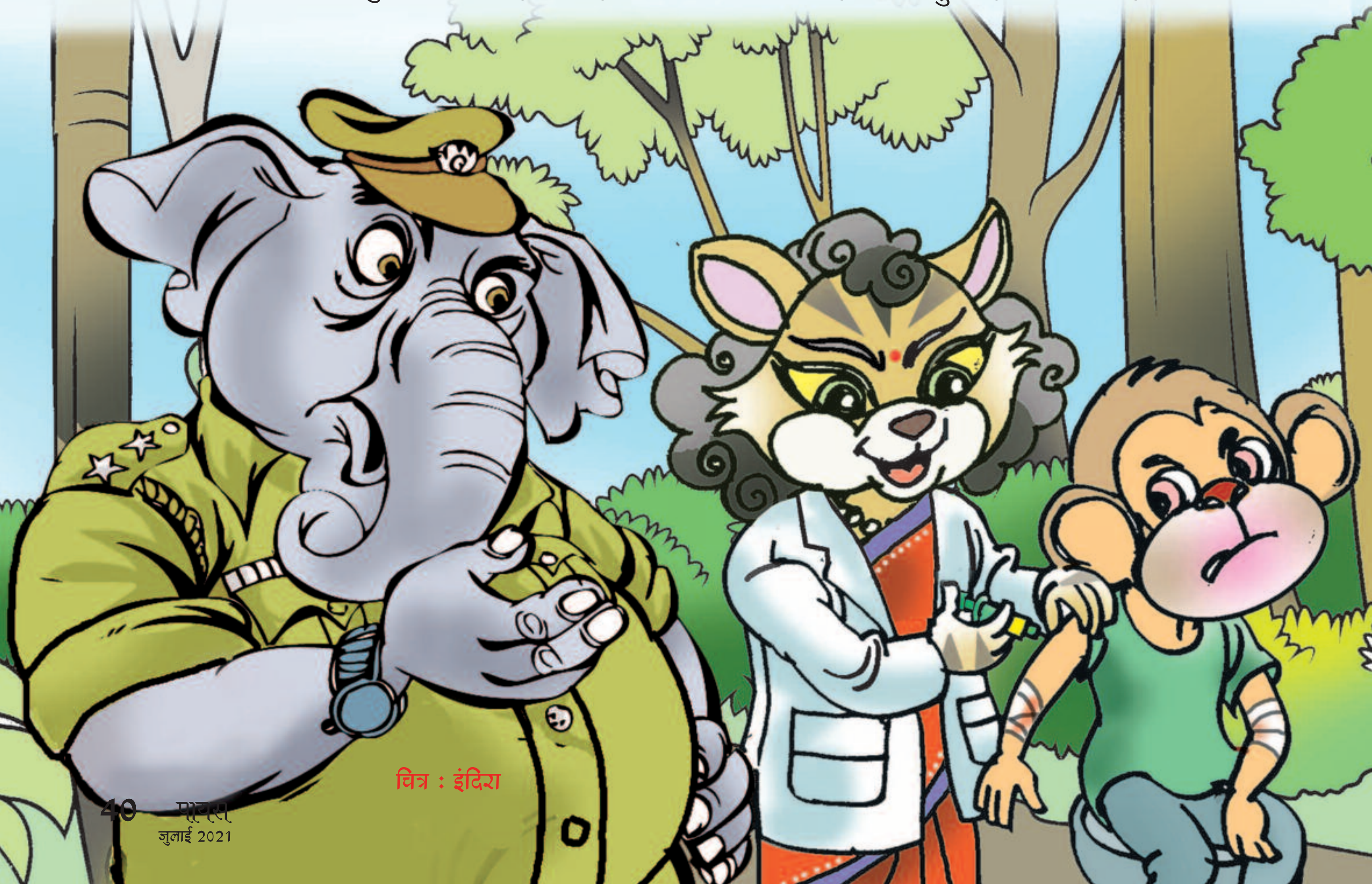

चित्र : इंदिरा

माध्यम से यह संदेश इंडनवन के हर जीव-जंतु तक पहुंचा दिया। बिना मास्क पहने बाहर निकलने और बेवजह घूमने पर फाइन लगा दिया गया।

इंडनवन के सभी पशु-पक्षियों ने अपने राजा के आदेश को माना, लेकिन मंटू बंदर पर इस लाकडॉउन का कोई असर नहीं पड़ा। वह एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर उछलता, बिना मास्क के इधर-उधर घूमता और गिलहरी, चिड़िया व अन्य पशु-पक्षियों के घरों में तोड़-फोड़ करता।

गजराज हाथी हेड कांस्टेबल था। उसने कई बार मंटू को पकड़ने की कोशिश की, लेकिन वह हर बार बच जाता। मंटू की मनमानी के कारण इंडनवन के कई प्राणियों को बहुत परेशानी हुई पर मंटू बंदर पर कोई असर न पड़ा । वह इलाज करने वाले डॉक्टरों, नर्सों एवं सफाई करने वाले जीव जंतुओं को भी खूब परेशान करता था।

एक दिन जब वह आम के पेड़ पर उछल-कूद कर रहा था, तो टहनी का एक बड़ा कांटा उसके पेट में चुभ गया। वह बुरी तरह कराहकर नीचे गिर पड़ा। संयोगवश उसी समय लिली बिल्ली वहां से अपने बच्चों के लिए दूध लेकर आ रही थी। वह अस्पताल में नर्स थी। लगातार ड्यूटी करने के कारण उसे एक दिन का रेस्ट दिया गया था। मंटू को कराहते देखकर वह जल्दी से अपने घर से फर्स्ट एड का बॉक्स लाई । उसने मंटू की मरहम पट्टी की, उसे दवा दी । अगले दिन अस्पताल जाते समय वह अपने बच्चों को मंटू की देखभाल करने और उसे टाइम पर दवा देने के लिए कह गई।

एक सप्ताह तक लिली बिल्ली के दोनों बच्चों ने मंटू की देखभाल की। वह बिल्कुल ठीक हो गया। अब उसे यह समझ आ गया था कि बीमार होने पर बहुत तकलीफ होती है। उसने लिली लोमड़ी से नर्सिंग का काम सीखा और अस्पताल में जीव-जंतुओं की सेवा में जुट गया। इतना ही नहीं, दुकानों में मास्क कम पड़ने पर उसने सिलाई मशीन से मास्क बनाकर भी सभी प्राणियों में मुफ्त बांटे। इस महामारी के समय पूरा इंडनवन एक हो गया। कोई जरूरतमंदों और बूढ़े जीव-जंतुओं को अपने घर से खाना बनाकर भिजवाता, तो कोई घरों को अपने खर्चे से सेनिटाइज कराता।

ऐसे समय में देश का खजाना खाली होता जा रहा था। इंडनवन के अमीर पशु-पक्षियों के साथ ही हर जीव-जंतु ने अपनी इच्छा से राजकोष में धन दिया, ताकि इस महामारी से लड़ने में किसी तरह की कोई कमी न हो।

सबकी एकजुटता रंग लाई। इधर इंडनवन के वैज्ञानिकों ने कोरोना का इंजेक्शन तैयार करने में सफलता पाई और उधर इंडनवन में कोरोना के मरीज काफी कम हो गए। इंडनवन ने अन्य वनों को इंजेक्शन एवं अन्य जरूरी सहायता भिजवाई। सभी ने इंडनवन के राजा की प्रशंसा की। अब इंडनवन सभी वनों से अधिक शक्तिशाली और बुद्धिमान कहलाया जाने लगा क्योंकि यहां के राजा शेरसिंह ने अपनी सूझबूझ से इस बीमारी को न केवल अधिक फैलने से रोका, बल्कि कोरोना के इंजेक्शन का आविष्कार कर अन्य वनों को इस महामारी से बचाने में मुख्य भूमिका निभाई और उन्हें हर तरह की मदद भिजवाई।

अपने लेखक को जानिए

रेनू सैनी : विगत 20 वर्षों से देश के विभिन्न समाचार पत्र एवं पत्रिकाओं में लगभग पांच हजार से अधिक लेख, कहानियां आदि प्रकाशित । अभी तक 25 पुस्तकें प्रकाशित। अनेक पुस्तकों का अंग्रेजी एवं मराठी में अनुवाद। भारतीय हरिश्चन्द्र पुरस्कार के साथ ही अनेक पुरस्कार से सम्मानित।

अपना योगदान दें

पायस बच्चों को ध्यान में रखकर पायस का प्रकाशन रंगीन चित्रों के साथ आप सबके सहयोग से हो पा रहा है।

रचना ही नहीं, आर्थिक योगदान देकर भी इस प्रयास में सहयोगी बनें

कहानी

बादल की परेशानी

नन्हा रिमझिम बादल सुबह-सवेरे सैर के लिए निकला। उसने कुछ बच्चों को बगीचे में लुकाछिप्पी का खेल खेलते देखा. रिमझिम को बच्चे बहुत प्यारे लगते थे। उनके पास जाकर वह उनके खेल का आनंद लेने लगा। कुछ देर बाद बच्चे गरमी के कारण पसीने से तरबतर हो गए। उन्होंने खेलना बंद कर दिया। तभी एक बच्चे की नजर रिमझिम पर पड़ी। वह खुशी से बोला, "देखो, यह बादल हमारे कितना करीब है। आज जरुर बारिश होगी।"

तभी दूसरा बच्चा, जो उन सबसे बड़ा था, बोला, "कोई बारिश नहीं होगी। ये बादल ऐसे ही हैं, बस आते हैं और बिना बरसे ही लौट जाते हैं. हमारे पेड़-पौधे कितने सूख रहे हैं। पहले बारिश पड़ती थी, तो कितना मजा आता था। छप-छप करके पानी में खेलते थे, नाव चलाते थे। अब तो पता ही नहीं चलता, बारिश का मौसम कब आया और कब चला गया।"

बच्चों की बातें सुनकर रिमझिम परेशान हो उठा। जिन बच्चों को वह इतना प्यार करता है, वे तो उससे नाराज हैं।

'आज बरसकर मैं इनकी सारी शिकायत दूर कर दूंगा।' मन ही मन सोचते हुए रिमझिम जल्दी-जल्दी अपने घर की ओर चल पड़ा। घर पहुंचकर जब उसने अपनी टंकी का ढक्कन उठाया, वह हैरान रह गया. टंकी खाली पड़ी थी। अब क्या करे वह? रिमझिम सोच में पड़ गया।

तभी उसे अपने दोस्त मेघू का ख्याल आया, जो उसके पड़ोस में रहता था। रिमझिम मुसकरा दिया और जल्दी से मेघू के घर पहुंचकर बोला, "मेघू, क्या तुम मुझे थोड़ा सा पानी दे दोगे? मुझे बच्चों के लिए बारिश करनी है?"

मेघू ने उसे अपनी टंकी दिखाते हुए कहा, "देखो, मेरे पास कितना थोड़ा पानी है। इसे मैंने लोगों को सूखे से राहत देने के लिए रख छोड़ा है।"

रिमझिम को बहुत निराशा हुई। फिर उसने अपने दोस्तों जलद, घन और नीरद से भी पानी मांगा, किंतु किसी के पास से उसे पानी नहीं मिला। सभी की टंकियां खाली थीं।

निराश होकर रिमझिम अपने घर लौट आया। उसे देखकर उसकी मम्मी चिंतित हो उठीं। इतना उदास तो उन्होंने अपने बेटे को कभी नहीं

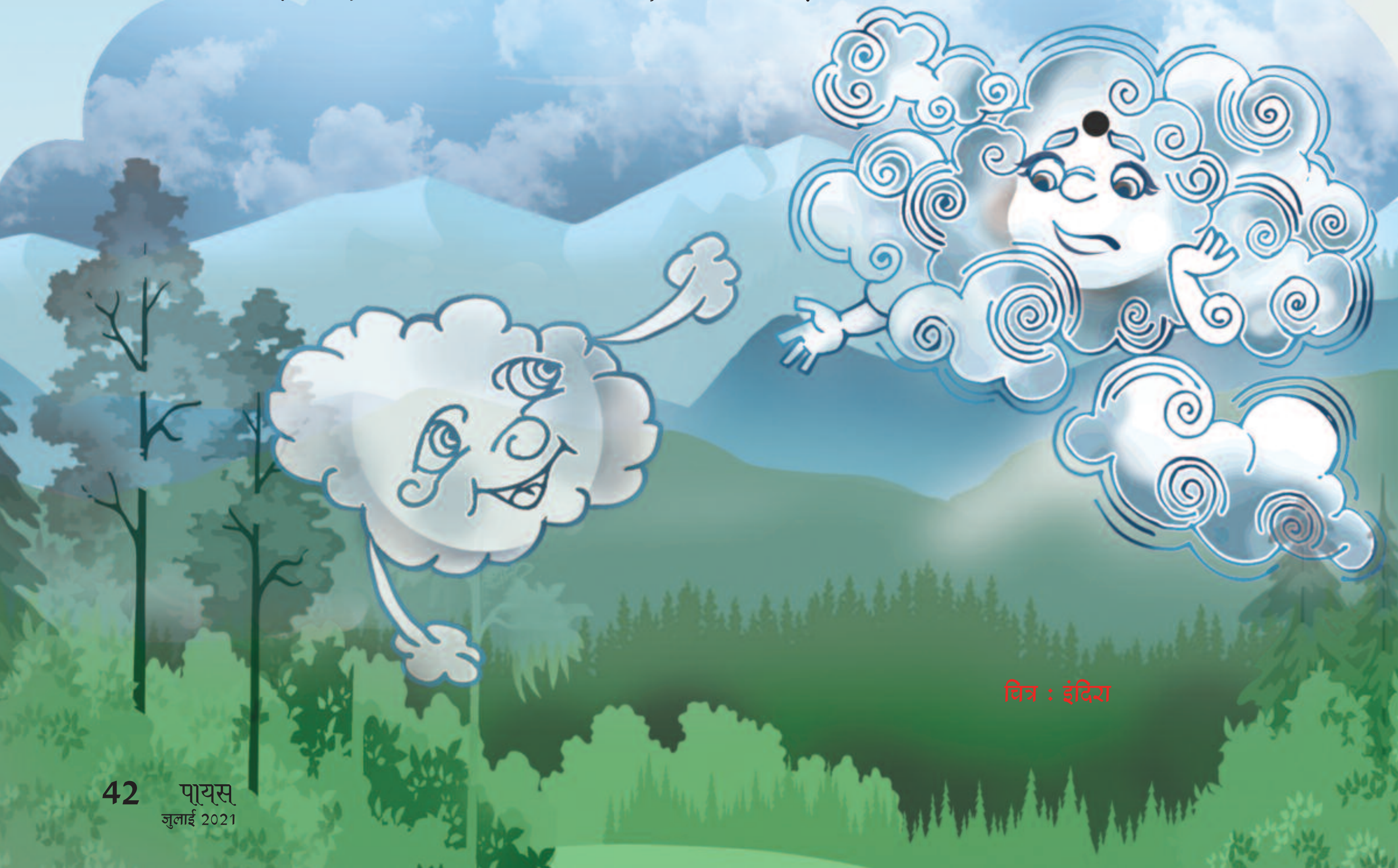

चित्र : इंदिरा

देखा था। उन्होंने उसे अपनी गोद में बैठाया और उससे उसकी उदासी का कारण पूछा। मम्मी के प्यार भरे स्पर्श से रिमझिम की आंखें भर आईं। उसने उन्हें सारी बात बताकर कहा, "मम्मी, अब मैं क्या करुं? बच्चे बारिश का इंतजार कर रहे होंगे। क्या बादलों के पास कभी भी पानी नहीं होता है?"

"ऐसा नहीं है। जानते हो रिमझिम, हमारे पूर्वज बादलों के पास बहुत पानी होता था।" बताते हुए मम्मी का चेहरा खुशी से चमकने लगा। वह बोलीं, "जब बरसात का मौसम आता था न, तो सारे बादल आकाश को ढक लेते थे। उन्हें देखकर जंगल में मोर खुशी से नाचने लगते थे। कई-कई दिनों तक सूरज नहीं चमकता था। मूसलाधार बारिश होती थी। बच्चे बारिश में खूब नहाते थे और कागज की नाव बनाकर चलाते थे। खेतों में फसलें खूब लहलहाती थीं।"

"अब बादलों के पास पानी क्यों नहीं होता मम्मी?" रिमझिम ने मचलते हुए पूछा। उसकी बात पर मम्मी उदास हो उठीं, "इसमें इनसानों की गलती है।"

"इनसानों की गलती? वह कैसे?" रिमझिम चौंक उठा।

"हां बेटा, इनसान प्रकृति से खिलवाड़ कर रहा है। उसने अपने स्वार्थ के लिए पेड़-पौधे और जंगल काट दिए हैं, जिससे ग्लोबल वार्मिंग की समस्या पैदा हो गई है।"

"रुको मम्मी, यह ग्लोबल वार्मिंग क्या है?" रिमझिम की आंखों में जिज्ञासा जाग उठी।

मम्मी ने समझाया, "ग्लोबल वार्मिंग मतलब, पृथ्वी का तापमान बढ़ना। इससे वहां पानी की समस्या पैदा गई है। प्राकृतिक संतुलन बिगड़ रहा है। नदियां सूख रही हैं, जिससे ज्यादा बादल नहीं बन पाते।

"ओह, इसी वजह से हमारी टंकी में पानी नहीं है। अब यह समस्या कैसे दूर होगी?" रिमझिम ने पूछा।

मम्मी बोलीं, "अगर इनसान प्रकृति से छेड़छाड़ करना बंद कर दे, खूब पेड़-पौधे लगाए, तो यह समस्या दूर हो जाएगी।"

बादल कुछ देर सोचता रहा। फिर बोला, "मम्मी, क्या मैं बच्चों के पास जाकर उन्हें समझाऊं कि मनुष्य जंगल नहीं काटें, खूब पेड़-पौधे लगाकर पृथ्वी को हरा-भरा रखें, तो बादल बनेंगे, जो उन्हें बहुत सारा पानी देंगे।"

"हां-हां, क्यों नहीं? कहकर मम्मी ने उसे पानी भी दिया।

रिमझिम उत्साह से चल दिया बच्चों के पास। उसे विश्वास था कि बच्चे प्रकृति से प्यार करते हैं। वे उसकी बात जरुर मानेंगे। ✪

अपने लेखक को जानिए

रेनू मंडल : पिछले 42 वर्षों से लेखन कार्य में निरंतर सक्रिय। अब तक लगभग 800 कहानियां प्रकाशित जिनमें बड़ों के साथ साथ बच्चों की भी अनेकों कहानियां देश की विभिन्न प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं। एक कहानी संग्रह भी आ चुका है

अपने भीतर के लेखक को उड़ने के लिए खुला आसमान दें

◆ अपनी रचना को दूसरों के सामने लाने के लिए, अपनी कहानी, कविता या लेख को पी.डी एफ. फार्मेट में किताब या पत्रिका के रूप में दुनिया के सामने लाएं।

◆ आप केवल लिखें। बाकी सब हम पर छोड़ दें।

◆ ब्लैक एंड ह्वाइट या रंगीन चित्र भी बनवाने की सुविधा है।

◆ संपादन में 25 वर्षों का अनुभव

संपर्क करें

अनिल जायसवाल
9810556533 7982014609
akjaiswal2592@gmail.com

ANIL JAISWAL
Jais Features
akjaiswal2592@gmail.com
9810556533
7982014609

हिंदी में किसी भी प्रकार की, खास तौर पर बच्चों के लिए प्रकाशन सामग्री या कार्य के लिए संपर्क करें. प्रूफ रीडिंग, संपादन, संकलन, टाइपिंग, मैगजीन सेटिंग, डिजाइनिंग, पी.डी. फार्मेट में पत्रिका या ई. पत्रिका निकालने की सुविधा भी उपलब्ध है.

नंदन बाल पत्रिका में संपादन का 25 वर्षों का अनुभव

बरगद का बचना

गिल्लू गिलहरी अपने दो नन्हे बच्चों के साथ बरगद के पेड़ पर बने एक आरामदायक कोटर में रहती थी। बरगद का यह पेड़ सुंदरवन के बाहरी कोने पर था। यह पेड़ अत्यंत विशाल और वर्षों पुराना था। यह सिर्फ गिल्लू का ही नहीं, वरन बहुत सारे अन्य नन्हे जीवों का भी घर था। चुनमुन चिड़िया, काकू कौआ, कीनू कठफोड़वा आदि सभी पक्षी अपने परिवार के साथ बड़े आराम से निश्चिंत होकर बरगद के पेड़ पर रहते।

एक दिन गिल्लू जंगल में जाकर बच्चों के लिए फल इकट्ठा करके लाई। बच्चों को पेटभर खिलाने के बाद बचे हुए फल वह भंडार में रख आई। वह विपरीत परिस्थितियों के लिए कुछ अतिरिक्त फल अपने घर के एक कोने में बने भंडार गृह में जमा रखती, ताकि किसी दिन भोजन लाने न जा पाए, तब भी खाने की कमी न हो।

खाना खाकर गिल्लू के बच्चे कोटर के बाहर आकर बरगद की मोटी डाल पर खेलने लगे। चुनमुन, काकू, कीनू आदि के बच्चे भी आ गए। चारों तरफ बच्चों की मधुर किलकारी गूंजने लगी। गिल्लू घर के काम भी करती जाती और बच्चों को भी देखती रहती। यह उसका रोज का नियम था।

अचानक ही बच्चों की आवाज आनी बंद हो गई। गिल्लू दौड़कर बाहर आई। देखा, बच्चे डरे हुए से नीचे देख रहे थे।

“क्या हुआ, तुम सब खेल बंद करके चुप क्यों हो गए?” गिल्लू ने पूछा।

“चाची देखो न, नीचे कैसे अजीब जानवर आए हैं। हमें बहुत डर लग रहा है।” चुनमुन का बेटा बोला।

गिल्लू ने नीचे देखा, “अरे ये तो मनुष्य हैं। लेकिन ये यहां?”

गिल्लू ध्यान से उनकी बातें सुनने लगी। उनमें से एक मनुष्य बोला, “यह पेड़ अच्छा है। मजबूत भी है और बड़ा भी। हम इसे ही काट लेंगे। एक पेड़ से ही अच्छी-खासी लकड़ी मिल जाए, तो बेकार ही जंगल में ज्यादा अंदर तक कौन जाए। अंदर जंगली जानवरों का भी डर रहेगा।”

“हां भाई, तुम ठीक कहते हो। यही पेड़ ठीक रहेगा। कल हम अपने साथियों को भी ले आएंगे और इसे काटना शुरू कर देंगे। शाम को बैलगाड़ी लाकर लकड़ी ले जाया करेंगे।”

दोनों देर तक चारों तरफ से घूम-घूमकर पेड़ को देखकर न जाने क्या बातें करते रहे। फिर चले गए।

गिल्लू के तो हाथ-पैर फूल गए। यह क्या मुसीबत आ गई, सिर पर एकदम से। यह मनुष्य तो उनका

चित्र : नंदा कुमार शेनॉय

बसा बसाया घर उजाड़ने आ गए। अब रात भर में वह बच्चों को लेकर कहां जाए। उसने सभी बच्चों को घर के अंदर जाने को कहा और खुद बाकी सभी से इस बारे में बात करने चल दी।

चुनमुन और काकू बाहर ही मिल गए। वे भी चिंतित दिख रहे थ। उन्होंने भी सब सुन लिया था। काकू के पिताजी भी आ गए। वे सब इस नई परिस्थिति पर बात करने लगे।

"धरती पर पाए जाने वाले सभी जीवों में मनुष्य सबसे अधिक लालची है। इसने शहर बसाने के लिए अधिकांश जंगल खत्म कर दिए हैं। ऐसा लगता है कि यह धरती पर अपने अलावा किसी अन्य प्राणी को रहने ही नहीं देना चाहता।" बाबूजी दुखी स्वर में बोले।

"लेकिन तेजी से जंगल और पेड़-पौधे खत्म करता जा रहा यह मनुष्य यह नहीं समझ पा रहा कि पेड़ों के कारण ही धरती पर जीवन है। पेड़ नहीं तो जीवन नहीं।" चुनमुन बोली।

"और क्या, पेड़ नहीं होंगे तो जीवन खत्म।"कीनू भी आकर बोला।

"हां, हम बाकी जीव तो जंगल को हरा-भरा रखते हैं, बीज गिराकर या जमीन में दबाकर नए पेड़ उगने में मदद करते हैं और मनुष्य है कि रोज-रोज बस जंगल खत्म ही करने में लगा हुआ है।" गिल्लू बोली।

"जिस पेड़ ने हमें सहारा दिया, आंधी-पानी, खराब मौसम में हमें सुरक्षित रखा, हमें घर दिया, क्या हमें उसके लिए कुछ नहीं करना चाहिए?" चुनमुन बोली।

"हां, जिसने हमेशा हमें सहारा दिया आज उस पर खतरा मंडरा रहा है। हमारा भी कर्तव्य बनता है कि उसकी जरूरत के समय हम उसकी रक्षा करें।" गिल्लू बोली।

"बिल्कुल ठीक, हम हर हाल में इस बरगद की रक्षा करेंगे। अगर कल मनुष्यों ने इसे काटा, तो परसों वे दूसरा पेड़ काटेंगे। उनका बढ़ता लालच पूरा जंगल ही साफ कर देगा।" सब ने एक स्वर में कहा।

"लेकिन कैसे? हम तो इतने छोटे कमजोर से जीव हैं। मनुष्यों की शक्ति के आगे भला हम कैसे...?" काकू बेबसी से बोला।

"हमें स्वयं को कमजोर नहीं समझना चाहिए। प्रकृति को बचाने के लिए प्राण भी देने पड़े, तो पीछे नहीं हटना चाहिए। जंगल सबका है, सब मिलकर इसकी रक्षा करेंगे।" काकू के बाबूजी ने कहा।

"हमें कोई तो योजना बनानी होगी। घने जंगल में मेरा दोस्त भीमू हाथी रहता है। वह बहुत शक्तिशाली भी है और सहृदय भी। मैं उसके पास जाता हूं, वह जरूर हमारी मदद करेगा।" कीनू बोला और उड़कर घने जंगल में चला गया।

बाकी सब आपस में सलाह-मश्विरा करते हुए कीनू की राह देखने लगे। थोड़ी ही देर में कीनू भीमू को लेकर आ गया। भीमू ने सबको ढाढस बंधाया। उसका भीमकाय शरीर देखकर सब आश्वस्त हो गए। भीमू पेड़ों के झुरमुट के पीछे छिप गया।

सुबह वे मनुष्य अपने तीन और साथियों के साथ आ धमके। सबके हाथ में तेज धारदार कुल्हाड़ियां थीं। इसके पहले कि वे बरगद तक पहुंचते, भीमू गुस्से से चिंघाड़ा। इतने बड़े हाथी को अचानक अपने सामने देखकर, वे सब घबरा गए और इधर-उधर भागने लगे। एक आदमी भीमू के पीछे चला आया और कुल्हाड़ी उठाकर उसके पिछले पैर पर वार करने का मौका ढूंढ़ने लगा। कीनू ने ऊपर से यह देख लिया।

"हमें भीमू को बचाना चाहिए।" कीनू ने सबसे कहा।

"चलो सब।" काकू, चुनमुन, कीनू तीनों उडकर उस मनुष्य के पास पहुंचे। कीनू ने उसके सिर पर जोर से चोंच मारी। वह आदमी हड़बड़ा गया।

तब तक काकू ने उसके सिर पर बैठकर उसकी आंख में चोंच मार दी, तो वह दर्द से बिलबिला उठा। अब भीमू भी उसकी चालाकी समझ गया। उसने गुस्से में उस आदमी को अपनी सूंड में उठाया और जमीन पर पटक दिया। गिल्लू ने अपने तेज दांतों से उसके पैर पर काट खाया।

"हाय मेरी कमर, हाथ, पैर सब टूट गए।" एक आदमी कराहा।

दूसरा चिल्लाया, "यहां के जानवरों में बहुत एकता है। यहां के पेड़ काटना असंभव है। भागो यहां से।"

"यहां के क्या, अब हम कभी भी कोई पेड़ नहीं काटेंगे।" कहते हुए सभी वहां से भाग गए।

"बहुत-बहुत धन्यवाद भीमू भाई। आज आपने हमारा घर बचा लिया।" सबने भीमू को धन्यवाद दिया।

"भाई, यह जंगल हम सबका घर है और इसकी रक्षा करना हम सबका कर्तव्य।" भीमू विनम्रता से बोला।

सबने खुश होकर तालियां बजाईं। बच्चे भी खुश थे।

अपने लेखक को जानिए

डॉ विनीता राहुरीकर : अब तक विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में 200 से अधिक रचनाओं का प्रकाशन। जिनमें से 70 कहानियां। 3 पुस्तकें प्रकाशित। राष्ट्रभाषा गौरव, साहित्य श्री, साहित्य शिरोमणि, साहित्य वाचस्पति, मध्य प्रदेश भूषण, पंडित हरप्रसाद पाठक स्मृति पुरस्कार। कन्हैयालाल नंदन स्मृति बाल साहित्यकार सम्मान प्राप्त हुआ।

सपना पूरा हुआ

केतन का गांव था मोतीपुर। दूर-दूर तक लहलहाते खेत और उसमें काम करते मजदूर या किसान। गरीबी के कारण वहां के लोग अपने बच्चों को पढ़ाने की बात सोच तक नहीं सकते थे। इसलिए वहां कभी स्कूल भी नहीं खुला। जिन्हें पढ़ना होता था, वह जिला मुख्यालय के स्कूल तक जाता।

केतन अभी छोटा था। उसके पिता किशन खेती करते थे। छोटा सा केतन खेत में अपने पिता का हाथ बंटाता था। ऐसा न था कि उसका पढ़ने का मन नहीं करता था। वह कुछ दिन पास के एक छोटे से शहर में अपने मामा के पास रहा था। वहां वह एक स्कूल में पढ़ने जाता था। उसने जल्दी ही पढ़ना-लिखना सीख लिया था। परंतु मामा जहां काम करते थे, वह कारखाना बंद हो गया था और मामा की नौकरी चली गई था। इसलिए केतन अपने गांव लौट आया था।

एक बार गांव में एक नया स्कूल खुला। उसमें पढ़ाने के लिए एक मास्टरजी आए। पर वह बच्चों की राह देखते रहे, पर कोई बच्चा पढ़ने नहीं आया। उन्होंने गांव के मुखिया से बात की। मुखिया जी ने गांव वालों को समझाया, "देखो, सरकार ने गांव में स्कूल खोला है। हमें चाहिए कि हम अपने बच्चों को वहां भेजें।"

"पर मुखिया जी, हमारे बच्चे यहां पढ़ने आएंगे, तो खेतों पर काम कौन करेगा?" रामदीन ने उठकर पूछा। उसके चारों बच्चे अपने पिता के साथ खेत में काम करते थे।

"नहीं रामदीन। यह ठीक नहीं। हमें चाहिए कि हम बच्चों को स्कूल भेजे। ये पढ़ लिख जाएंगे, तो खेती में और ज्यादा हमारा साथ देंगे।" किशन ने उठकर कहा और फिर मास्टरजी के आगे हाथ जोड़ दिए, "मैं अपने बच्चे को स्कूल भेजूंगा।"

किशन ने पहल की, तो दो चार और लोग भी अपने बच्चे को स्कूल भेजने को तैयार हो गए। अगले दिन से स्कूल लगने लगा। केतन तो पहले भी स्कूल में पढ़ा था। वह मास्टर जी की बातें जल्दी समझता।

एक बार मास्टर जी का बेटा अमर गांव आया। जल्दी ही वह और केतन दोस्त बन गए। दोनों गांव के खेतों में साथ-साथ घूमते। केतन उसे बताता कि कौन सी फसल है और कैसे उसकी खेती होती है। उसकी

अपने लेखक को जानिए

चित्रा श्रीवास्तव : मूलतः दिल्ली की लेखिका। आजकल पुणे में। दिल्ली विश्वविद्यालय से स्नातक। कहानी लेखन में रुचि। कुछ कहानियों का प्रकाशन नंदन में हुआ।

जानकारी सुनकर अमर चकित रह जाता। शहर में पढ़ने के बाद भी उसे इतनी जानकारी नहीं थी।

"यार, तुम यह सब कैसे याद रखते हो? मुझे तो पाठ तक याद नहीं रहते।" अमर कहता।

एक दिन केतन अमर के घर चला गया। देखा, वह पढ़ रहा है। उसे देखकर अमर बोला,"आओ यार, तुमसे मिलने का दिल कर रहा था पर पढ़ाई के कारण आज बाहर नहीं आ पाया। ये होमवर्क मिला है। इसे जाते ही जमा कराना है।"

"तो होमवर्क जल्दी से पूरा कर लो।" केतन उसके पास बैठ गया।

"कैसे करूं यार? यह गणित मेरी समझ से बाहर है। समझ नहीं आ रहा।" अमर परेशान होकर बोला।

"अच्छा दिखाना जरा।" केतन ने

उसकी किताब ली और प्रश्न को देखने लगा।

"तुम क्या करोगे, देखकर?" उसे किताब पढ़ते देख अमर हंस पड़ा।

पर केतन फटाफट प्रश्नों को हल करने लगा। कुछ ही मिनटों में उसने सारे प्रश्न हल करके कॉपी अमर के सामने रख दी। अमर हक्का-बक्का सा उसका मुंह देखता रह गया।

कुछ दिनों बाद फसल कटने पर जब किसान फसल लेकर मंडी पहुंचे, तो मंडी में एक व्यापारी रामसिंह माल तोलकर रखने लगा। केतन और दूसरे बच्चे भी अपने पिता के साथ आए थे। मास्टर साहब का बेटा अमर भी उसके साथ था। उन्होंने देखा, व्यापारी बोल कुछ रहा था और लिख कुछ रहा था। केतन समझ गया कि वह उसके पिता और अन्य लोगों के अनपढ़ होने का फायदा उठा रहा है। केतन ने चुपके से अमर से कहा, "यह सबको उल्लू बना रहा है। इसकी पोल खोलते हैं।"

"कैसे?" अमर ने पूछा।

"तुम इसकी बातें रेकॉर्ड कर लो। मैं मंडी के बड़े साहब को बुलाकर लाता हूं।" कहते हुए केतन आफिस की तरफ भागा। अमर ने चुपचाप अपना मोबाइल निकाला और सारी तोल और व्यापारी की बातों को रेकॉर्ड करने लगा।

"क्या बात है रामसिंह? यह बच्चा कह रहा है कि तुम तोल में किसानों के साथ घपला कर रहे हो?" मंडी के बड़े साहब वहां आकर बोले।

"कौन कह रहा है कि मैं घपला कर रहा हूं? एक-एक हिसाब लिखा है मैंने।" कहते हुए रामसिंह ने कागज उनकी ओर बढ़ा दिया।

अमर ने कहा, "यह मोबाइल कह रहा है कि तुम घपला कर रहे हो। तुम बोल कुछ रहे हो और लिख कुछ रहे हो।" कहते हुए अमर ने रिकार्डिंग चालू कर इंचार्ज को दिखाया। सच में रामसिंह बोलता कुछ था और लिखा हुआ कुछ था।

बड़े साहब गुस्से से दहाड़े, "भोले-भाले किसानों को लूटते तुम्हें शर्म नहीं आती? आज इन बच्चों ने न पकड़ा होता, तो तुम न जाने कितने और किसानों को लूट लेते। आज से इस मंडी में तुम्हारा आना बंद। कोई और अब माल खरीदेगा।"

सचमुच जब सबका माल तुला, तो और साल के मुकाबले सबको काफी ज्यादा रुपए मिले। गांव के किसानों ने खुशी से केतन और अमर को अपने कंधों पर बैठा लिया और खुशी-खुशी गांव लौटे।

किशन बोला, "देखा, बच्चों को पढ़ाने का फायदा। आज इसके कारण हम किसानों का कितना फायदा हुआ।"

सच में गांव के लोगों को पढ़ाई का फायदा समझ आ गया था।

अगले दिन जब मास्टर जी स्कूल पर पहुंचे, तो अपने बच्चों का नाम लिखाने के लिए कई किसान अपने बच्चों के साथ गेट पर खड़े थे। लग रहा था, जैसे मेला लगा हो।

चित्र : सुशील दोषी

सुडोकु का ढोलू

दोस्त उसे सुडोकु बुलाते थे लेकिन उसका नाम था सुषेण डोन्दुमल कुलकर्णी। वह कक्षा चार का विद्यार्थी था और महाराष्ट्र के चंद्रपुर जिले में रहता था।

सुडोकु पढ़ने में साधारण था लेकिन उसे ड्रॉइंग का पीरियड बहुत अच्छा लगता था। रंगों के साथ उसकी पक्की यारी थी। गणित उसे थोड़ा डराता था और सामाजिक ज्ञान के पीरियड में वह मुश्किल से जाग पाता था। घर में सब उसको डांट लगाते थे, सब दोस्त उसको छेड़ते थे। लेकिन उसका एक पक्का दोस्त था, जो उसकी बात चुपचाप सुनता था और उसकी हर बात पर खुश होता था। उस दोस्त का नाम था ढोलू।

ढोलू को सुडोकु ने बचपन से देखा था, क्योंकि ढोलू सुडोकु की गली में ही पैदा हुआ था। ढोलू एक कुत्ता था जो दिन भर इधर-उधर खेलता और रात को सुडोकु के घर के बाहर आकर चौखट के पास सो जाता था। ढोलू गांव में कहीं भी होता, सुडोकु के स्कूल जाने और वापस आने के समय घर के बाहर ही मिलता। ढोलू का रोज का काम था कि वह सुडोकु को स्कूल तक छोड़कर घर वापस आ जाता और दोपहर को छुट्टी के समय स्कूल के बाहर खड़ा रहता।

सुडोकु जब भी ड्रॉइंग पेंटिंग के लिए कुछ इनाम जीतता, वह ढोलू को जरूर दिखाता था।

एक बार मास्टरजी ने सभी बच्चों को बताया कि चंद्रपुर के पास ताडोबा अंधारी के फारेस्ट रेंजर साहब स्कूल में आने वाले हैं। मास्टरजी ने बताया कि रेंजर साहब बाघों के बचाव के लिए जो काम कर रहे हैं, उसके बारे में बताएंगे। मास्टरजी ने यह भी बताया कि वन विभाग स्कूल में एक ड्राइंग प्रतियोगिता करवाने वाले हैं।

यह सुनकर सुडोकु खुश हो गया और सोचने लगा कि वह कैसे-कैसे बाघ का चित्र बनाएगा। सुडोकु का गांव ताडोबा अंधारी के जंगल के निकट ही था। गांव में कुछ साल पहले तक बाघ आ जाया करते थे। वन विभाग ने गांव के आसपास बाघ के लिए कैमरा लगा रखे थे, ताकि अगर कोई बाघ गांव के पास आए, तो वन विभाग को पता चल जाए।

बाघ के चित्र के बारे में सोचते-सोचते सुडोकु इतना खो गया कि उसको पता ही न चला कि ड्राइंग का पीरियड खत्म हो गया और गणित के मास्टरजी ने क्लास में आकर गणित पढ़ाना शुरू कर दिया। सुडोकु क्लास में सबसे आगे के बेंच पर बैठता था। बाघ के चित्र के बारे में सोचते-सोचते वह मुसकराए रहा था। गणित के मास्टरजी को लगा कि वह उनको देखकर मुसकरा रहा है। उन्होंने

चित्र : नंदा कुमार शेनॉय

उससे खड़े होने को कहा। लेकिन सुडोकु तो अपनी दुनिया में खोया हुआ था। इस बात पर मास्टरजी को गुस्सा आ गया और उन्होंने सुडोकु को कान पकड़कर उठा दिया। पूरी क्लास सुडोकु को देखकर हंसने लगी। उसे बहुत बुरा लगा।

मास्टरजी सुडोकु से बोले, "तेरह का पहाड़ा सुनाओ।"

सुडोकु को तेरह का पहाड़ा नहीं आता था। मास्टरजी ने सुडोकु को और भी डांट लगाई। वह बहुत उदास हो गया और बाकी के पीरियड में उदास बैठा रहा। स्कूल की छुट्टी होने पर जब वह स्कूल के बाहर निकला, तो ढोलू पहले ही उसके लिए खड़ा था।

ढोलू सुडोकु को देखते ही अपनी पूंछ हिलाने लगा लेकिन सुडोकु ने सिर उठाकर ढोलू की तरफ देखा भी नहीं। सुडोकु घर जाते समय रास्ते में ढोलू को कभी गाने सुनाता था, तो कभी फिल्मों की कहानियां। लेकिन आज वह एकदम चुप था क्योंकि उसका मूड बहुत खराब था।

आज सुडोकु परेशान था कि क्लास के सब बच्चों ने उसका मजाक उड़ाया। उसे बुरा यह लगा कि वह तो केवल बाघ के चित्र का सोच रहा था, मास्टरजी ने इतनी सी बात के लिए सबके सामने उसे डांट लगा दी।

अब सुडोकु ने सोच लिया कि वह ऐसी चित्रकारी करेगा कि सब हैरान रह जाएंगे। घर जाते ही सुडोकु ने अपने ब्रश निकाले, रंग निकले और सोचने लग गया कि क्या बनाए।

तब तक ढोलू भी सुडोकु के पास आकर बैठ गया। ढोलू बार-बार उस कप से पानी पिए जा रहा था जिसमें सुडोकु ने अपने ब्रश डुबोकर रखे थे। इस बात से सुडोकु बहुत परेशान हो गया और उसने ढोलू को बोला, "आ, आज मैं तुम्हारे ऊपर ही चित्रकारी कर देता हूं।" सुडोकु को ढोलू को रंगने में बहुत मजा आया और ढोलू भी खुश हो गया।

इसके बाद सुडोकु ने हाथ-मुंह धोकर खाना खाया और सो गया।

लेकिन सोने से पहले सुडोकु को याद आया कि मास्टरजी ने तेरह का पहाड़ा याद करने को कहा था। अब उसे डर लगने लगा क्योंकि वह याद नहीं कर पाया था। वह भगवान से प्रार्थना करने लगा कि कुछ भी करके कल स्कूल बंद करवा दो। प्रार्थना करते करते सुडोकु सो गया।

अगले दिन सुडोकु की नींद खुली पुलिस की गाड़ी की आवाज से। पुलिस माइक लगाकर सबको बता रही थी कि घर के बाहर न निकलें, गांव के पास बाघ देखा गया है। सुडोकु खुश हो गया कि आज उसे न स्कूल जाना पड़ेगा, न ही तेरह का पहाड़ा सुनाना पड़ेगा।

सुडोकु बहुत देर तक बिस्तर में लेटा रहा। तब थोड़ी देर में उसका मन ढोलू के साथ खेलने का हुआ। सुडोकु ने घर के बाहर झांककर देखा ढोलू वहां नहीं था। ढोलू कभी-कभी गांव में दूसरे लोगों के घर भी सो जाता था। सुडोकु ने सोचा कि शायद थोड़ी देर में ढोलू आ जाएगा।

बहुत देर ढोलू की राह देखकर सुडोकु एक नया चित्र बनाने में लग गया। सुडोकु को अपने ब्रश रखने के लिए अखबार की जरूरत पड़ती थी। वह जब घर में अखबार ढूंढने गया तो उसको उस दिन का ही अखबार मिल गया।

सुडोकु ने देखा कि अखबार में पहले पन्ने पर एक बाघ की फोटो थी, जो गांव के बाहर लगे कैमरे में कैद हो गई थी। अखबार के उस फोटो को देखकर सुडोकु बहुत हंसा, और बहुत देर तक हंसता रहा।

दरअसल अखबार की फोटो में कोई बाघ नहीं, सुडोकु का ढोलू था, जिसे कल उसने बाघ की तरह रंग दिया था। अब सुडोकु ने सोचा, स्कूल जाकर सब दोस्तों को बताएगा कि गांव के पास कोई बाघ नहीं था, बल्कि अपना ढोलू था। ऐसा सोच कर वह बहुत देर मुसकराता रहा।

पर अब उसे खुद पर गुस्सा आने लगा। उसके कारण ढोलू खतरे में पड़ गया था। यह एक जानवर पर भी ज्यादती थी। वह ढोलू की सलामती के लिए प्रार्थना करने लगा।

कुछ घंटों बाद उसने देखा, ढोलू दरवाजे पर खड़ा पूंछ हिला रहा था। दरअसल बारिश हो गई थी, जिसमें ढोलू पर चढ़ा रंग बह गया था। उसने ढोलू को प्यार से गले लगा लिया। ✪

अपने लेखक को जानिए

विकास राजौरा : पेशे से इंजीनियर, वर्तमान में BHEL में प्रबंधक के पद पर कार्यरत। लेखन में रुचि के चलते हंस पत्रिका, निकट (दुबई से प्रकाशित) व अन्य पत्र पत्रिकाओं में रचनाएं प्रकाशित। जामिया मिल्लिया इस्लामिया से स्नातक और स्नातक स्तर से ही रंगमंच पर भागीदारी। हाल ही में एक शार्ट फ़िल्म 'वंदे मातम' में अभिनय।

भविष्य के सितारे

तुम बच्चों के लिए विशेष रूप से कुछ पेज हमने सुरक्षित किए हैं। तुम जिस रूप में चाहो, अपनी भावनाएं व्यक्त कर सकते हो। उन्हें संजोकर हम यहां देंगे।

आखिर तुम सब में से ही भविष्य के कलाकार, इस दुनिया के सामने आकर भारत का नाम रोशन करेंगे। कभी चित्रकार, तो कभी कहानीकार तो कभी कवि या विचारक बनकर। तो फटाफट रचनाएं भेजो-

email : payasmagazine@gmail.com
whatsapp : 7982014609

बाल कोना में छपने वाले बच्चों में से तीन बच्चों को प्रथम (तीन सौ), द्वितीय (दो सौ) और तृतीय पुरस्कार (एक सौ रुपए) देने का निर्णय लिया है, दीप्ति मित्तल ने

अपनी हिन्दी और राइटिंग स्किल्स को तराशें,
पायस से जुड़कर, कॉल करें : 7982014609

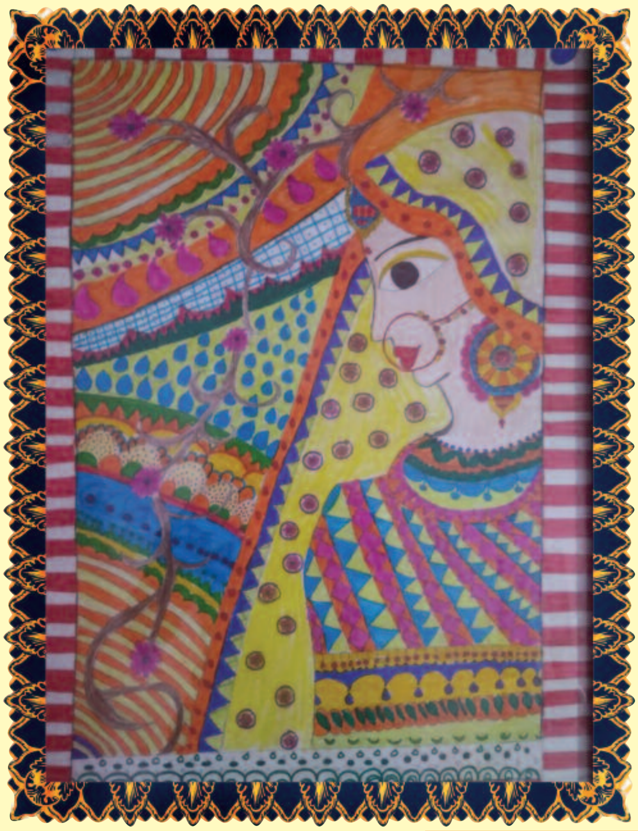

रसलीन कौर

नाम : रसलीन कौर
उम्र : 14 साल
कक्षा : 9
स्कूल : मीरा मॉडल स्कूल, दिल्ली

द्वितीय पुरस्कार

पूर्वांशी ध्यानी

नाम : पूर्वांशी ध्यानी
उम्र : 12
कक्षा : 8
स्कूल : रा इ का धुमाकोट गढ़वाल, उत्तराखंड

2nd

स्नेहा रानी

नाम : स्नेहा रानी
उम्र : 14
कक्षा : 9, स्कूल : डी. ए. वी. पब्लिक स्कूल, रामगढ़, झारखंड

नाम : मन्नत भाटिया
उम्र : 7
कक्षा : 2
स्कूल : संस्कृति स्कूल, पुणे, महाराष्ट्र

कुनिका कौशिक,
उम्र : 6 वर्ष,
कक्षा : एक,
केन्द्रीय विद्यालय, बीकानेर

मन्नत भाटिया

कुनिका कौशिक

अपनी हिन्दी और राइटिंग स्किल्स को तराशें, पायस से जुड़कर, कॉल करें : 7982014609

एलकॉन इंटरनेशनल के सितारे एलकॉन इंटरनेशनल के सितारे एलकॉन इंटरनेशनल के सितारे एलकॉन इंटरनेशनल के सितारे

नाम : प्रत्यक्ष
उम्र : 11
कक्षा : 7, स्कूल : एलकॉन इंटरनेशनल, मयूर विहार, दिल्ली

प्रत्यक्ष

नाम : आंशी मिश्रा
उम्र : 14
कक्षा : 9, स्कूल : एलकॉन इंटरनेशनल, मयूर विहार, दिल्ली

आंशी मिश्रा

अपनी हिन्दी और राइटिंग स्किल्स को तराशें, पायस से जुड़कर, कॉल करें : 7982014609

एलकॉन इंटरनेशनल के सितारे

एलकॉन इंटरनेशनल के सितारे एलकॉन इंटरनेशनल के सितारे

इशिका शर्मा

श्रेयान्वी

श्रीवत तिवारी

नाम : इशिका शर्मा
उम्र : 12
कक्षा : 8, स्कूल : एलकॉन इंटरनेशनल, मयूर विहार, दिल्ली

नाम : श्रेयान्वी
उम्र : 7
कक्षा : 2, स्कूल : एलकॉन इंटरनेशनल, मयूर विहार, दिल्ली

नाम : श्रीवत तिवारी
उम्र : 8
कक्षा : 4, स्कूल : एलकॉन इंटरनेशनल, मयूर विहार, दिल्ली

अपनी हिन्दी और राइटिंग स्किल्स को तराशें, पायस से जुड़कर, कॉल करें : 7982014609

एलकॉन इंटरनेशनल के सितारे एलकॉन इंटरनेशनल के सितारे एलकॉन इंटरनेशनल के सितारे एलकॉन इंटरनेशनल के सितारे

एलकॉन इंटरनेशनल के सितारे

एलकॉन इंटरनेशनल के सितारे एलकॉन इंटरनेशनल के सितारे

एलकॉन इंटरनेशनल के सितारे एलकॉन इंटरनेशनल के सितारे एलकॉन इंटरनेशनल के सितारे एलकॉन इंटरनेशनल के सितारे

नेहा गर्ग

सूर्यांश तिवारी

सुहानी हरित

नाम : नेहा गर्ग
उम्र : 12
कक्षा : 7, स्कूल : एलकॉन इंटरनेशनल, मयूर विहार, दिल्ली

नाम : सूर्यांश तिवारी
उम्र : 12
कक्षा : 8, स्कूल : एलकॉन इंटरनेशनल, मयूर विहार, दिल्ली

नाम : सुहानी हरित
उम्र : 12
कक्षा :7, स्कूल :एलकॉन इंटरनेशनल, मयूर विहार , दिल्ली

अपनी हिन्दी और राइटिंग स्किल्स को तराशें, पायस से जुड़कर, कॉल करें : 7982014609

 एलकॉन इंटरनेशनल के सितारे एलकॉन इंटरनेशनल के सितारे

कहाँ गए वो दिन

छवि मिश्रा,
उम्र : 11
कक्षा :6, स्कूल : एलकॉन इंटरनेशनल, मयूर विहार, दिल्ली

हे कोरोना तू कब जाएगा?
लोगों को उनकी पुरानी ज़िन्दगी कब लौटाएगा?
कब वो दिन आएगा जब सड़क पर दिखेंगे लोग
खेलेंगे बच्चे फैलेंगी रौनकें चारों ओर
कब वो दिन आएगा?
जब डॉक्टर्स की परेशानी होगी कम
और लोगो के भी कम होंगे गम
कब वो दिन आएगा?
जब हम जाएंगे अपने रिश्तेदारों से मिलने
बिना डरे की ना पड़ जाएँ पुलिस के डंडे
सच कहूं तो इस कोरोना ने बहुत काम करवाया
लेकिन परिवार के साथ अच्छा समय बितवाया
माना की ढला है सूरज
लेकिन कल वापिस उग जाएगा
हम जीतेंगे और कोरोना तू हार जाएगा।

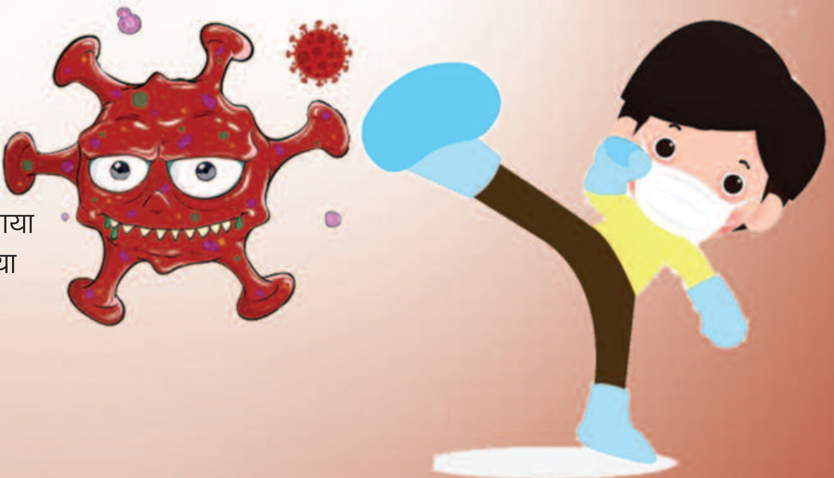

परिश्रम और धैर्य

एक बार भगवान बुद्ध अपने अनुयायियों के साथ किसी गांव में उपदेश देने जा रहे थे। उस गांव से पूर्व ही मार्ग में उन लोगों को जगह-जगह बहुत से गड्ढे खुदे हुए मिले। बुद्ध के एक शिष्य ने उन गड्ढों को देखकर जिज्ञासा प्रकट की कि आखिर इस तरह के गड्ढों का तात्पर्य क्या है?

बुद्ध बोले, पानी की तलाश में किसी व्यक्ति ने इतने गड्ढे खोदे हैं। यदि वह धैर्यपूर्वक एक ही स्थान पर गड्ढा खोदता, तो उसे पानी अवश्य ही मिल गया होता। पर वह थोड़ी देर गड्ढा खोदता और पानी न मिलने पर दूसरा गड्ढा खोदना शुरू कर देता। परिणामस्वरूप उसे सफलता नहीं मिली। इसलिए व्यक्ति को परिश्रम के साथ धैर्य भी रखना चाहिए।

सीख : परिश्रम और धैर्य के बल पर कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी सफलता प्राप्त की जा सकती है।

नाम : अनाया मीना
उम्र : 10
कक्षा : 5, स्कूल : एलकॉन इंटरनेशनल, मयूर विहार, दिल्ली

Knowledge

Knowledge! Knowledge! Knowledge!
You must have knowledge
Knowledge gives you
Different ideas to do things nicely
Always strive to enhance your knowledge
Knowledge! knowledge! knowledge!
You must have knowledge
With knowledge
You be successful in your life
Knowledge! knowledge! knowledge!
You must have knowledge

Mohammed Saad Iqbal

नाम : मोहम्मद शाद इकबाल, आयु: 9, कक्षा : 4, स्कूल : एलकॉन इंटरनेशनल, मयूर विहार, दिल्ली

एलकॉन इंटरनेशनल के सितारे एलकॉन इंटरनेशनल के सितारे एलकॉन इंटरनेशनल के सितारे एलकॉन इंटरनेशनल के सितारे

अपनी हिन्दी और राइटिंग स्किल्स को तराशें, पायस से जुड़कर, कॉल करें : 7982014609

बारिश और हम

बारिश आयी छम छम छम
छाता लेकर निकले हम

आसमान से बादल गरजे
बिजली चमके चम चम चम

रेन कोट और हैट लगाकर
कागज की नाव बनाएं हम

बूँदों के संग नाचें गाएं
खूब मौज मनाएं हम

बारिश आयी छम छम छम
छाता लेकर निकले हम।

नाम : सुहानी यादव
उम्र : 14
कक्षा : 9
स्कूल : कैम्ब्रिज कॉन्वेंट, कानपुर ,उत्तर प्रदेश

3rd

मेरी मैडम

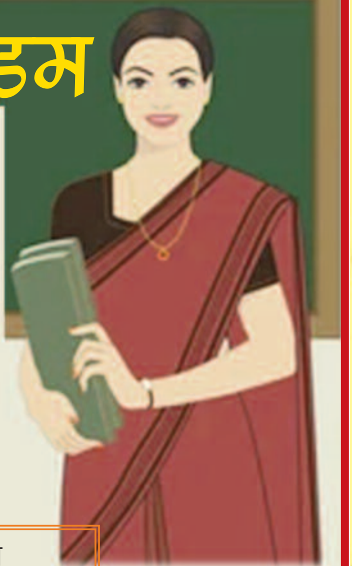

मेरी मैडम कितनी अच्छी,
भोली-भाली मन की सच्ची।
मन लगाकर हमें पढ़ाती,
सब विषयों का ज्ञान कराती।
ज्ञान का दीपक हमें दिखाती,
सही राह पर चलना सिखाती।
खेल-खेल में हमें पढ़ाती,
इसीलिए हम सबको भाती।

नाम : काव्या पटेल
उम्र : 7
कक्षा : 2, स्कूल : लखनऊ पब्लिक स्कूल, अहिया रायबरेली, उत्तर प्रदेश

अपनी हिन्दी और राइटिंग स्किल्स को तराशें, पायस से जुड़कर, कॉल करें : 7982014609

सुनो मेरी बात

मित्रों-सखियों सुनो मेरी बात,
मत रखे रखो हाथ पर हाथ।
प्लास्टिक का करो कम उपयोग
और करो रोज़-रोज़ योग।
सब जीव-जंतु बचाने हैं,
ढेर सारे पेड़ लगाने हैं।
अपने देश को प्रदूषण मुक्त बनाना है,
पुरानी चीजों को नहीं जलाना है।
पुरानी चीजों को करो रिसाइकिल,
जिससे बना सकते हैं मोटर-साइकिल।
मित्रो-सखियो सुनो मेरी बात,
मत रखे-रखो हाथ पर हाथ।

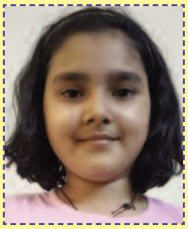

नाम : मानवी
उम्र : 9
कक्षा : 5
स्कूल : विवेकानन्द व. मा. विद्यालय, करनाल, हरियाणा

बिल्ली की दावत

देवा के घर चूहा है ,
खूब शैतानी करता है।
एक दिन उसने घर भर के,
कपड़े कुतरे मलमल के।
देवा ने उलटा लटकाया,
सामने बिल्ली के रख आया।
देख सामने बिल्ली रानी ,
चूहा भूल गया शैतानी।
चूहे जी की शामत आई,
बिल्ली रानी ने दावत खाई।

नाम : दिव्यम तिवारी
उम्र : 11
कक्षा : 5, स्कूल : ए पी एस लामाचौड़ ,हल्द्वानी , उत्तराखंड

अपनी हिन्दी और राइटिंग स्किल्स को तराशें, पायस से जुड़कर, कॉल करें : 7982014609

जान्हवी ओझा

नाम : जान्हवी ओझा
उम्र : 13
कक्षा : 8, स्कूल : सेक्रेड हार्ट स्कूल, कोडरमा, झारखंड

जिगीषा सहरावत

नाम : जिगीषा सहरावत
उम्र : 9
कक्षा : 5, स्कूल : दिल्ली पब्लिक स्कूल, वसंतकुंज, नई दिल्ली

रसगुल्ले की दीवानी

आओ सुनाएं तुम्हें कहानी
चींटी रानी बड़ी सयानी,
रसगुल्ले की है दीवानी
पीती उसका मीठा पानी।

खाती रसगुल्ला मज़े-मज़े से
बिल में छुप जाती है फट से,
सखी सहेलियों को ले आती
खा रसगुल्ला मज़े उड़ाती।

सूंघ लेती कहीं से भी
दिखने में है छोटी सी,
हर घर में है पाई जाती
छेदों में है घर बनाती।

भेदभाव ना उसने जाना
हर मीठे को अपना माना,
माँ हर चीज़ है छुपाती,
पर चींटी वहां पहुंच ही जाती।

रसगुल्ले से चिपक-चिपककर
उससे अपना प्यार जताती,
चींटी रानी बड़ी सयानी,
रसगुल्ले की है दीवानी।

कान्हा अबोटी

नाम : कान्हा अबोटी
उम्र : 8
कक्षा : 4
स्कूल : आर.सी.आर.एस,
बंगलुरु, कर्नाटक

चींटी और रसगुल्ले

आई चींटी, कहाँ से आई
रसगुल्ले को मज़े से खाई।

चाशनी तो है बहुत मीठी
घर में आती-जाती चींटी,

देखो-देखो कोई और भी है
लगता है वह चींटी परी है,

चाटती जाती चाशनी को
नहीं देखती वो किसी को,

आई चींटी, कहाँ से आई
रसगुल्ले को मज़े से खाई।

अनहद भाटिया

मोटा हाथी

मोटा-मोटा हाथी आया
ढूँग-ढूँग हाथी आया,
मौज-मस्ती करेगा
नहीं किसी से डरेगा

मौज-मस्ती भूम-भूम
आया हाथी झूम-झूम,

सूँड़ में पानी भरकर आया
पस्स पस्स कर नहलाया।

अरे देखो, भागो भागो!
मोटा-मोटा हाथी आया
धम धम पैर हिलाया
गन्ना खूब मज़े से खाया।

आयरा भाटिया सिंह

नाम : आयरा भाटिया सिंह
उम्र : 9
कक्षा : 4
स्कूल : निर्मल भरतिया
स्कूल, दिल्ली

अपनी हिन्दी और राइटिंग स्किल्स को तराशें, पायस से जुड़कर, कॉल करें : 7982014609

नाम : अनहद भाटिया
उम्र : 9
कक्षा : 5, स्कूल : हैरिटेज
एक्सपीरियंसल लर्निंग
स्कूल, गुड़गांव, हरियाणा

नाम : पोथिक आभरो
उम्र : 9
कक्षा : 5
स्कूल : एमिटी इंटरनेशनल, स्कूल, साकेत, दिल्ली

सपना

एक बार मैंने सपने में देखा कि मै किसी यंत्र के बिना ही उड़ सकता हूं। मैं बहुत खुश हो गया। मैं एक बड़ी-सी उड़ान पर निकल पड़ा। मैं बादलों के पास पहुंच गया। मै बहुत डरने लगा कि कहीं गिर न जाऊं। पर फिर मैं किसी तरह अपनी शक्ति को संभालना सीख गया।

मैंने सोचा, मैं तो अब बिना टिकट कहीं भी आ-जा सकता हूं। मैं अब कहां पर जाऊं, इस सोच में पड़ गया। आज मेरे अध्यापक ने ज्वालामुखी के बारे में बताया था। तो क्यों न मैं माउंट फूजी पर जाऊं, यह सोचकर मैं माउंट फूजी की ओर उड़ चला। मैंने रास्ते में बहुत सारे भारतीय जंगल देखे, दिल्ली के कुतुब मीनार के ऊपर से उड़ा। फिर मैंने हिमालय के सफेद पहाड़ों को देखा। जब तक मै माउंट फूजी पहुंचा, तब तक तो शाम हो गई थी। वहां पर मै जमीन पर उतरा। मैंने आम रस पीकर फिर से उड़ान भरी और माउंट फूजी की चोटी पर पहुंच गया। जब मैं वहां पहुंचा, तो मैंने एक अद्भुत नजारा देखा। वहां पर एक बहुत ही बड़ा गड्ढ़ा था, जिसमें से लावा निकल रहा था।

अब मैं थक गया था। वहां थोड़ा समय बिताकर मैं अपने घर वापस चला गया।

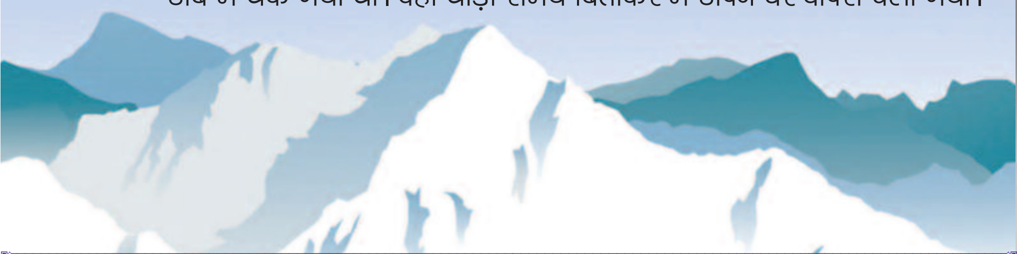

अपनी हिन्दी और राइटिंग स्किल्स को तराशें, पायस से जुड़कर,
कॉल करें : 7982014609

महाशक्ति

अगर मुझे एक महाशक्ति मिल सके, तो मैं बुद्धिमानी को लेना पसंद करूंगा। मुझे विद्यालय नहीं जाना होगा। मैं सिर्फ अपनी परीक्षा दूंगा। मुझे कोई पढ़ाई नहीं करनी होगी। मैं घर पर बैठ जो चाहूं पढ़ सकता हूं। मैं खेल सकता हूं। मैं टीवी देख सकता हूं। पढ़ाई का डर न होने से मैं देर से उठ सकता हूं। सब बात मैं जल्द समझ पाऊंगा।

मुझे लगता है, अगर किसी को बुद्धिमान होने की महाशक्ति मिली, तो बहुत भाग्यवान होगा।

मैं भगवान से प्रार्थना करता हूं कि मुझे बुद्धिमान होने की शक्ति मिले।

नाम : विराज खट्टर
उम्र : 9
कक्षा : 4, स्कूल : स्वराज इंडिया पब्लिक स्कूल, कानपुर, उत्तर प्रदेश

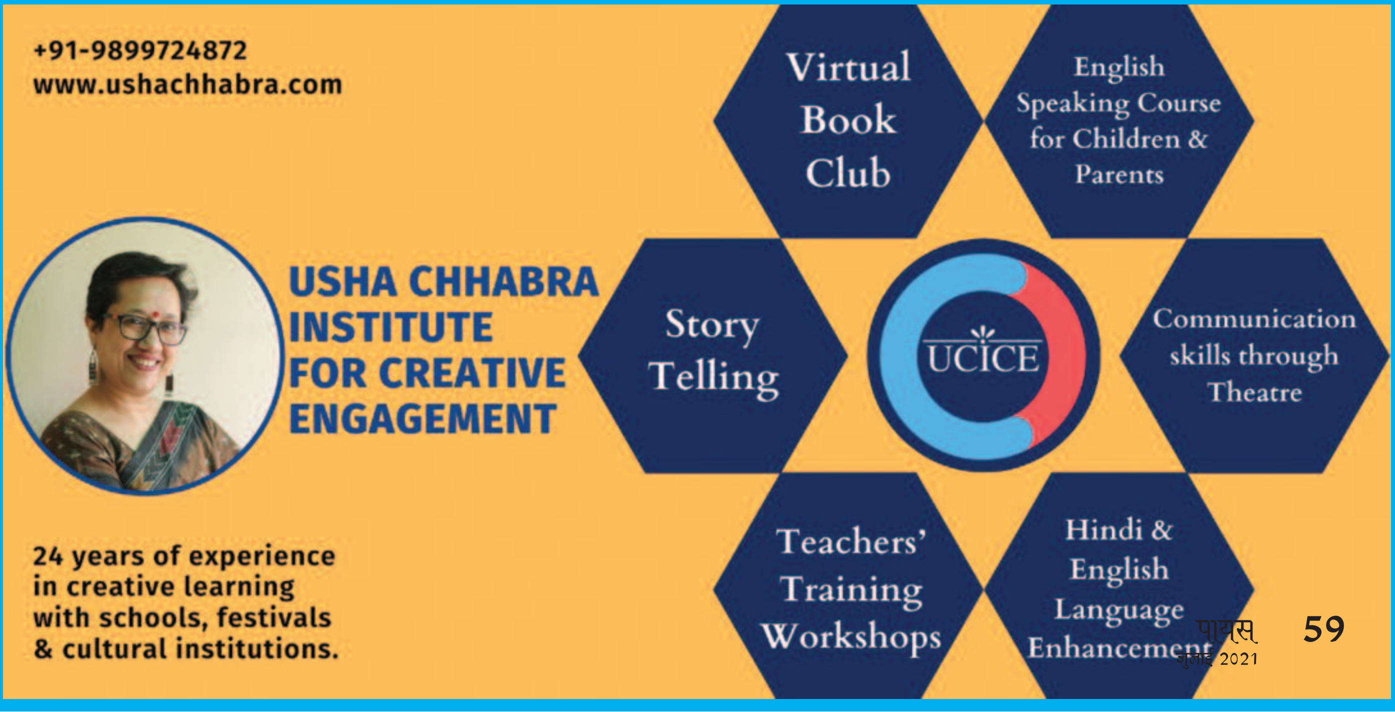

गोलू और रसगुल्ले

चित्र और परिकल्पना : पंकज राय

1. रिक्त स्थान भरो

प्रकाश तातेड़, उदयपुर

यहां दिए गए प्रत्येक वाक्य में दो रिक्त स्थान है । दोनों में एक ही शब्द भरना है। इसके लिए आप वाक्य को ध्यान से पढ़ें तो निश्चित ही सही शब्द खोज पाएंगे।

1. मैं अभी.........खाकर आया हूं, तुम्हारा परीक्षा......क्या रहा ?
2. ....इतने महंगे हैं कि........ आदमी इन्हें खरीद नहीं पाता।
3. ......दान के लिए शराब पीकर.........जाना।
4. गुलाब बाग के........की....... हालत ठीक नहीं थी।
5. ....लगी तलवार से कोई.......... कैसे लड़ सकता है ?
6. ....करो। अब पैदल नहीं चला जाता, मैं........में ही आऊंगा।
7. उसके घर का द्वार.......में है, तुम संध्या......... वहां आ जाना।
8. ....ने शिष्य से कहा, यह...... दायित्व तुम्हें ही उठाना होगा।
9. पिताजी खेत में........ चला रहे थे और राजू किनारे बैठ सवाल......... कर रहा था।
10. कवियों ने गन्ने के......... और काव्य......... का आनंद उठाया।
11. झोंपड़ी .... रही थी और लोग बाल्टी भर-भरकर....... डाल रहे थे।
12. इस बात में भी.......है कि देश में जनता का........ है।
13. मुझे इस प्रश्न का ....नहीं आया कि भारत की ....दिशा में क्या स्थित है ?

2. क्या अलग है

1. ज्यादा बारिश से जंगल में पानी जमा हो जाए, तो किस जीव का घर रहने लायक नहीं रह जाता ?
क. शेर, ख. बाघ, ग. हाथी, घ. सांप
2. उस स्थान का नाम बताओ, जहां बारिश का न होना एक खबर बन जाती है ?
क. लखनऊ, ख. पटना, ग. चेरापूंजी, घ. दिल्ली
3. भारत के किस स्थान पर सबसे पहले मानसून का स्वागत होता है ?
क. अंडमान निकोबार, ख. बिहार, ग. केरल, घ. असम
4. भारत में अगर समय से मानसून न आए, तो किस क्षेत्र पर सबसे ज्यादा असर पड़ता है ?
क. रोजगार, ख. कंस्ट्रक्शन, ग. कृषि, घ. शिक्षा
5. अत्याधिक बारिश होने से क्या होने का ज्यादा खतरा होता है ?
क. सूखा, ख. भुखमरी, ग. बाढ़, घ. गरमी

3. शब्द बनाओ

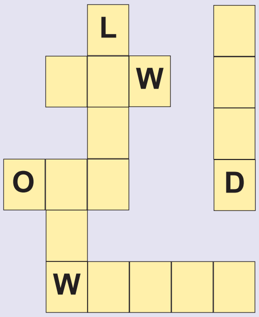

L O D W R

4. जरा बताओ

यहां तीन वाक्य दिए हैं। पहले दो के आधार पर बताओ कि तीसरा सही है, गलत है या फिर कुछ कहा नहीं जा सकता

क. तान्या, मान्या से बड़ी है।
ख.सान्या, तान्या से बड़ी है।
ग. मान्या, सान्या से बड़ी है।

क. सही, ख. गलत,
ग. अनिश्चित

5. कितने त्रिभुज हैं

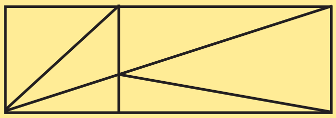

6. गिनकर बताओ

एक आदमी के चार बेटे हैं। उन चारों के भी चार-चार बेटे हैं। उन चारों के भी चार-चार बेटे हैं। इनके अलावा घर में तीन महिलाएं भी हैं। इस तरह घर में कुल कितने सदस्य हैं ?

पहेलियों के उत्तर

1. शब्दों की उलटफेर

1. फल, 2. आम, 3. मत, 4. माली, 5. जंग, 6. बस, 7. पूर्व, 8. गुरु, 9. हल, 10. रस, 11. जल, 12. राज, 13. उत्तर

2. क्या अलग है

1. सांप, क्योंकि मुख्यतः वे बांबी यानी बिल में रहते हैं, जिनमें पानी भर जाता है।
2. चेरापूंजी क्योंकि यहां आमतौर पर बारिश होती रहती है।
3. अंडमान निकोबार
4. कृषि, क्योंकि भारतीय कृषि व्यवस्था मानसून आधारित है
5. बाढ़

3. शब्द बनाओ

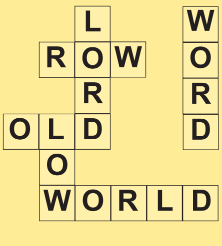

4. जरा बताओ

ख. गलत

5. कुल 11

6. पिता : 1

उनके चार बेटे :1+ 4=5
चारों के चार-चार बेटे
:1+4+16=21
16 के चार-चार बेटे :
1+4+16+64=85
85+3 महिलाएं= 88 सदस्य

बॉक्सिंग

बॉक्सिंग का खेल एक रोमांचक खेल है। इसमें ताकत के साथ-साथ चपलता भी बहुत जरूरी है। यह खेल बहुत पुराना है।

बॉक्सिंग खेले जाने का उल्लेख 900 वर्ष ईसा पूर्व भी मिलता है। सन 1927 में एक पुरातत्ववेत्ता डा. ई.ए.स्पीसर ने बगदाद में एक पत्थर की मूर्ति खोज निकाली जो करीब 7000 वर्ष पुरानी थी। इसमें दो व्यक्ति मुक्केबाजी के लिए तैयार खड़े थे। प्राचीन रोम भी बॉक्सिंग के लिए प्रसिद्ध था।

आधुनिक बॉक्सिंग की बात करें, तो 12वीं से 17वीं शताब्दी तक इटली में बॉक्सिंग खेल का उल्लेख मिलता है। इसे फिस्ट फाइट कहते थे। आरंभिक बॉक्सिंग में कोई नियम नहीं होता था। न ही वजन के हिसाब से मुकाबले होते थे। पहली बार एक बॉक्सर ने ही बॉक्सिंग के लिए नियम बनाया। यह बॉक्सर था हैवीवेट बॉक्सिंग चैंपियन जैक ब्रॉटन। उसने बॉक्सरों की जान बचाने के लिए ये नियम बनाए। इस नए नियम में यदि हारा हुआ बॉक्सर 30 सेकंड में नहीं उठता था, तो उसे हारा हुआ घोषित कर दिया जाता था। इससे पहले कई बार घायल मुक्केबाज को लड़ते रहने पड़ता था और उसकी मृत्यु तक हो जाती थी।

आज भी मुक्केबाजी का खेल दो भागों में बंटा है। कुछ मुक्केबाज पेशेवर होते हैं, तो कुछ शौकिया। ओलंपिक गेम्स जैसी विश्व खेल प्रतियोगिताओं में शौकिया मुक्केबाज ही भाग ले पाते हैं। पेशेवर मुक्केबाजों के लिए अलग प्रतियोगिताएं होती हैं। आमतौर पर शौकिया मुक्केबाज सफलता पाने के बाद पेशेवर मुक्केबाज बन जाते हैं। इससे उन्हें अच्छे पैसे भी मिलते हैं और शोहरत भी मिलती है। मुहम्मद अली, फ्रेंक टायसन, लेनक्स लुइस और जार्ज फोरमैन विश्वप्रसिद्ध मुक्केबाज हैं। मुहम्मद अली की बेटी लैला अली महिला बाक्सरों में विश्वप्रसिद्ध हैं।

पेशेवर मुक्केबाजी को चलाने वाली चार संस्थाएं प्रसिद्ध हैं। 1. वर्ल्ड बॉक्सिंग एसोसिएशन, 2. वर्ल्ड बॉक्सिंग काउंसिल, 3. इंटरनेशनल बॉक्सिंग फेडरेशन. 4. वर्ल्ड बॉक्सिंग आर्गनाइजेशन। प्रसिद्ध मुक्केबाज इन सभी में भाग लेते हैं। विटाली क्लिट्सको वर्ल्ड बॉक्सिंग एसोसिएशन की प्रतियोगिता छोड़ बाकी सब प्रतियोगिताओं में हैवीवेट चैंपियन बने।

ओलंपिक खेलों में 1904 से बाक्सिंग प्रतियोगिताएं आयोजित हो रही हैं। 1912 में स्वीडन में मुक्केबाजी पर प्रतिबंध होने के कारण स्टॉकहोम ओलंपिक में बाक्सिंग शामिल नहीं था। 1908 का ओलंपिक ऐसा आखिरी ओलंपिक था, जिसमें केवल पुरुष बॉक्सर ही भाग ले सकते थे। 2012 से महिलाओं की भी ओलंपिक बाक्सिंग प्रतियोगिता होने लगी है।

हंसना जरूरी है

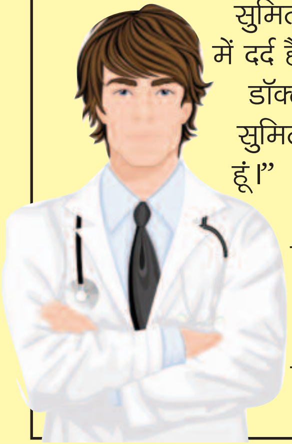

सुमित, "डॉक्टर साहब, कल से पेट में दर्द है।"
डॉक्टर, "खाना कहां खाते हो?"
सुमित, "रोजाना होटल में ही खाता हूं।"
डॉक्टर, "ओह, रोजाना होटल में खाना मत खाया करो।"
सुमित, "ठीक है, अब पैक कराकर घर ले आया करूंगा।"

नेहा, "रूबी, क्या तुम बता सकती हो कि दुनिया का सबसे बड़ा दुख क्या है?"
रूबी, "मैं तो बहुत दुखी हूं। मेरे हिसाब से तो दुनिया का सबसे बड़ा दुख है, कूलर में दस बालटी पानी डालने के बाद पता चले कि लाइट चली गई।"

भुवन ने तरबूज खाते हुए बहुत दुखी मन से कहा, "ऐसे तो शिकायत नहीं भगवान आपके किसी फैसले से..., पर अगर तरबूज के बीज खरबूजे की तरह इकट्ठे बीच में ही डाल देते, तो आपका क्या बिगड़ जाता?"

संदीप, "सुना है, तुम्हारा भाई तबला सीख रहा है?"
विवेक, "हां, सीख तो रहा है, पर अभी तक एक ही चीज सीख पाया है कि तबला हाथों से बजाया जाता है। मुंह से फूंक मारकर नहीं।"

एक आदमी अपने दोस्त के घर गया और दरवाजे की घंटी बजाई। घंटी की आवाज सुनकर एक बच्चा बाहर आया।
आदमी, "बेटा, पापा घर पर हैं?"
बच्चा, "अंकल, पापा तो बाजार गए हैं।"
आदमी, "चलो, बड़े भाई को बुला दो।"
बच्चा, "जी, भाई तो क्रिकेट खेलने गया है।"
आदमी, "बेटा, मम्मी होंगी, उन्हें ही बुला दो।"
बच्चा, "अंकल, मम्मी तो किटी पार्टी में गई हैं।"
आदमी को बहुत गुस्सा आया वह चिढ़कर बोला, "तो बेटा, तुम घर पर क्यों बैठे हुए हो, तुम भी कहीं चले जाओ।"
बच्चा, "जी, मैं भी तो अपने दोस्त के घर पर आया हुआ हूं।"

ऑनलाइन डिजिटल मासिक बाल पत्रिका

पायस

◆ जो बच्चे अपनी कल्पना के पंख फैलाकर जैसे भी उड़ना चाहेंगे, हम उन्हें पायस में आकाश उपलब्ध करवाएंगे। रचनाकारों के साथ-साथ बच्चों की लिखी कहानी, कविता के साथ अन्य सभी विधाओं को यहां स्थान मिलेगा। आपसे आग्रह है कि अपने आसपास के बच्चों को इसका लाभ उठाने के लिए प्रेरित करें। इसकी पीडीएफ कापी अपने लोगों में शेयर करें।

◆ यह पत्रिका निशुल्क है। पर जो किसी भी रूप में सहायता करना चाहें, पत्रिका को चलाने के लिए आर्थिक सहयोग प्रदान करना चाहें, उनका स्वागत है।

◆ **रचनाकारों से :** प्रकाशन हेतु भेजी जाने वाली रचना अवश्य टाइप की हुई हो। हस्तलिखित अथवा स्कैन करके भेजी गई सामग्री स्वीकार नहीं कर पाएंगे। रचना पीडीएफ में न भेजकर, वर्ड फाइल में भेजें। अभी यह एकल प्रयास है, अतः टाइप करवाना संभव नही है।

◆ **बाल पाठकों से :** प्रकाशन हेतु भेजी जाने वाली रचना अवश्य टाइप की हुई हो। हस्तलिखित अथवा स्कैन करके भेजी गई सामग्री स्वीकार नहीं कर पाएंगे। रचना पीडीएफ में न भेजकर, वर्ड फाइल में भेजें। जो भी चित्र भेजें, उसे बढ़िया से स्कैन करके भेजें। अगर चित्र साफ नहीं होंगे, तो उनका उपयोग नहीं हो पाएगा। हर रचना या पेंटिंग के साथ अपना क्लोजअप फोटो, उम्र, कक्षा, स्कूल का नाम व मोबाइल नंबर लिखकर भेजना न भूलें।

बातचीत व जानकारी के लिए : whatsapp no : 7982014609

रचना भेजने के लिए : email : **payasmagazine@gmail.com**

◆ आपका सहयोग किसी भी रूप में हो सकता है। बाल पत्रिका को संबल प्रदान करने के लिए आप सादर आमंत्रित हैं--

- संरक्षक बनकर
- मासिक अनुदान देकर
- यथासंभव एकमुश्त सहायता देकर
- विज्ञापन देकर
- हर महीने छपने वाले लेखकों या चित्रकारों के भुगतान की जिम्मेदारी उठाकर
- किसी और रूप में, जो आपको उचित लगे।

◆ अनुदान के लिए प्रयोग करें--

ONLINE TRANSFER / UPI

STATE BANK OF INDIA
Anil Kumar Jaiswal
S/A no- 20155811729
Ifsc code SBIN0005943
Mobile number associated with account 9810556533

PAYTM : 7982014609
PHONEPE : 9810556533
GOOGLE PAY : 9810556533
ANIL JAISWAL

अनिल जायसवाल
9810556533, 7982014609
email : **payasmagazine@gmail.com**